क़यामत कब आएगी

पश्चिम से सूरज निकलेगा
और आसमान से पत्थर बरसेंगे
लाल आंधी और ज़लज़ले बहुत आएंगे
शक्लें बिगड़ जाएंगी

इस उम्मत के आख़री दौर में साहाबा रज़ि०
जैसा अज्र लेने वाले मुबल्लिग़ और मुजाहिद होंगे
हर बाद का ज़माना पहले से बुरा होगा
कुफ़्र की भरमार होगी

दीन पर अमल करना हाथ में चिंगारी लेने के
बराबर होगा, बड़े-बड़े फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे

इस्लाम का नाम और कुरान के लफ़्ज़ रह जाऐंगे
और उल-मा-ए-सू पैदा होंगे

मर्दों की कमी, शराब ख़ोरी, ज़िना की ज़्यादती और
क़त्ल की कसरत होगी।

मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी

क़यामत कब आएगी?

यानी

रसूलुल्लाह सल्ल० की पेशीनगोइयां

जिस में

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उन इर्शादात का तर्जुमा बेहद आसान ज़ुबान में जमा किया गया है, जिन में आप सल्ल० ने क़यामत से पहले आने वाले हालात की ख़बर दी थी।

लेखकः

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्द शहरी

इस्लामिक बुक सर्विस प्रा० लि०

क़यामत कब आएगी?

लेखकः-

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्द शहरी

ISBN 81-7231-519-8

प्रथम संस्करण : 1994

पुनः प्रकाशन : 2012

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस प्रा० लि०

2872-74, कूचा चेलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)

फोन : 011-23253514, 23286551, 23244556

फैक्स : 011-23277913, 23247899

E-mail: islamic@eth.net

Website: www.islamicbookservice.co / www.islamicbookservice.asia

Our Associates

- Al-Munna Book Shop Ltd., **(U.A.E.)**
  (Sharjah) Tel.: 06-561-5483, 06-561-4650
  (Dubai) Tel.: 04-352-9294
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kingdom)**
  Tel.: 020 8911 9797
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarta (Indonesia)**
  Tel.: 0062-21-35-23456
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**
  Tel.: 040-6680-6285

Printed in India

विषय-सूची

क्या ? | कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ?	कहां ?

क्या ? कहां ?

रसूलुल्लाह की पेशीनगोइयां

अपनी बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدٍ
سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ الَّذِىْ اُوْتِىَ عِلْمَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ
وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

इस किताब में सय्यदे आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वे इर्शादात जमा किये गये हैं, जिनमें आपने आगे आने वाली बातें लोगों को बता दी थीं। उन के पढ़ने से प्यारे नबी सल्ल० के बे-इन्तिहा इल्म का अन्दाज़ा होगा और मालूम होगा कि आपने जो क़ियामत की निशानियां बयान फ़रमायी थीं, वे हर्फ़-ब-हर्फ़ आज पूरी हो रही हैं।

ना-चीज़ ने इन इर्शादात को जमा करने के खास ध्यान में रखा है, जो आज के ज़माने में वाक़ेअ हो रहे हैं और हर्फ़-ब-हर्फ़ सही साबित हो रहे हैं या आगे वाक़े होने वाले हालात के लिए तम्हीद जैसे हैं।

हमारे ग़ैर-मुस्लिम भाइयों को भी इन वाक़िआत से नफ़ा पहुंचेगा, और वे पढ़ कर यक़ीन कर लेंगे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम हक़ीक़त में उन तमाम इंसानों के सरदार थे, जिन्हें उस मालिके हक़ीक़ी से खुसूसी ताल्लुक़ था, क्योंकि तेरह सौ वर्ष पहले आगे ज़माने के आने वाले फ़ित्नों और गुमराह करने वाले लीडरों और आलमगीर हादिसों व बलाओं से बा-खबर कर देना और इस पक्के यक़ीन के साथ कि गोया आंखों से देख कर बयान कर रहे हैं, उसी इंसान का काम हो सकता है, जिसे खुदा ही ने इल्म की दौलत से नवाज़ा हो। ज्योतिशी और सितारों का इल्म रखने वाले भी बहुत-सारी ग़लतियां कर जाते हैं और काहिन भी अनगिनत ग़लत खबरें दे देते हैं, मगर दुनिया के रहनुमा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक पेशीनगोई भी आज तक ग़लत साबित नहीं हुई और क्यों कर हो सकती है, जब कि—

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى

आप की शान है।

ये पेशीन गोइयां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म के बे-इंतिहा समुन्दर का एक क़तरा—

عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ

यानी खुदाई इल्म का एक छोटा-सा नमूना है।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े कर क़ियामत तक पेश आने वाली हर चीज़ बता दी, जिसे मेरे ये साथी (हज़राते सहाबा रज़ि०) जानते हैं। फिर जिसने याद रखा, उसे याद है और जो भूल गया, सो भूल गया। साथ ही यह भी फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया खत्म होने तक आने वाले गुम-राही के उस लीडर का नाम बता दिया था, जिसके साथी ३०० या उससे ज़्यादा हों और उसके बाप और क़बीले का नाम भी बता दिया था।

—मिश्कात

जो लोग मौजूदा ज़माने के हादसों व आफ़तों से तंग आकर मुस्तक़बिल पर नज़र लगाये हुए हैं और बार-बार ज़ुबान से कहते हैं कि देखिए आगे क्या होने वाला है, उन्हें इस किताब को पढ़ करके सच्ची ख़बर देने वाले सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात ज़रूर मालूम करने चाहिएं।

पढ़ने वालों से दर्ख़्वास्त है कि ना-चीज़ लिखने वाले और छापने वाले को अपनी ख़ुसूसी दुआओं में हमेशा याद रखें,

मुहम्मद आशिक़ इलाही

बुलंद शहरी मज़ाहिरी

२१ सफ़र १३७० हि०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस्लाम का नाम रह जाएगा और क़ुरआन के लफ़्ज़ रहजाएंगे और उलेमा-ए-सू पैदा होंगे

हजरत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बहुत जल्द लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा कि इस्लाम का सिर्फ़ नाम बाक़ी रहेगा और क़ुरआन की सिर्फ़ रस्म बाक़ी रह जाएगी। इनकी मस्जिदें (नक़्श व निगार, टाइल, बिजली के पंखों वग़ैरह से) आबाद होंगी और हिदायत के एतबार से वीरान होंगी, उन के उलेमा आसमान के नीचे रहने वालों में सबसे ज़्यादा बुरे होंगे। इन उलेमा से फ़ित्ने पैदा होंगे और फिर उनमें वापस आ जाएंगें।[1]

'इस्लाम का सिर्फ़ नाम बाक़ी रहेगा' यानी इस्लामी चीज़ों के नाम ही लोगों में रह जाएंगे और उन की हक़ीक़त बाक़ी न रहेगी, जैसा कि आजकल नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह के बस नाम ही बाक़ी हैं और उन की हक़ीक़त और रूह और अदाएगी के वे तरीक़े और कैफ़ियतें बाक़ी नहीं हैं जो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व

---

१. बैहक़ी,

सल्लम से नक़ल की गयी हैं और करोड़ों मुसलमान उनसे कोरे हैं। क़ुरआन शरीफ़ सिर्फ़ रस्मी तौर पर ही पढ़ा जाता है, उसके लफ़्ज़ और उसे अच्छी आवाज़ से पढ़ने का तो ख्याल है, मगर उसके मानी पर ग़ौर करना और उसकी मना की हुई चीज़ों से बचना तो मुसलमान के ख्याल में भी नहीं रहा। मस्जिदें ज़ेब व ज़ीनत से खूब सजी हुई हैं, दिल कश फ़र्श, क़ीमती ग़ालीचे, दीदा ज़ेब फ़ानूस, उम्दा-उम्दा हंडे और आराम व राहत की चीज़ें मस्जिदों में मौजूद हैं, मगर हिदायत से ख़ाली हैं, मस्जिदों में दुनिया की बातें, ताने, ग़ीबतें, बे-धड़क होती हैं और इमाम व मुअज़्ज़िन तो मस्जिदों को घर ही समझते हैं। इसकी और ज़्यादा तश्रीह आगे हदीस की तश्रीह में की जाएगी।

उलेमा के बारे में जो यह इर्शाद फ़रमाया कि उलेमा से फ़ित्ना निकलेग और उनमें वापस आ जाएगा। इसका मतलब यह है कि उलेमा बिगड़ जाएंगे और रुश्द व हिदायत की राह छोड़ देंगे तो दुनिया में फ़साद पैदा होगा और फिर उसके शिकार उलेमा भी होंगे और यह भी मतलब हो सकता है कि उलेमा दुनियादारों और ज़ालिमों की मदद करेंगे और पैसे ऐंठने के लिए दुनिया की मर्ज़ी के मुताबिक़ मस्अले बताएंगे और फिर दुनियादार ही उनका मिज़ाज ठिकाने लगाएंगे।

इब्ने माजा की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में आगे ऐसे लोग होंग जो दीन की समझ हासिल करेंगे और क़ुरआन पढ़ेंगे। (फिर सरमाएदारों के पास जाएंगे) और कहेंगे कि हम सरमाएदारों के पास जाते हैं और उन से दुनिया हासिल करते हैं और अपना दीन बचा कर उनसे अलग हो जाते हैं। (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) हालांकि ऐसा नहीं हो सकता (कि दुनिया वालों के पास जाकर दीन

सालिम रह जाए) जिस तरह क़ताद[1] के पेड़ से कांटों के सिवा कुछ नहीं लिया जा सकता, इसी तरह सरमाएदारों के क़रीब से गुनाहों के अलावा कुछ हासिल नहीं हो सकता।

जो उलेमा सरमाएदारों के पास जाते हैं, वे आततौर से उलेमा-ए-सू ही हैं। कुछ टकों के लिए उनके पास जाते हैं और अपना वक़ार खो बैठते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि अगर इल्म वाले अपने इल्म को बचाए रखते और उसे सलाहियत वाले इंसानों में खर्च करते तो ज़माने के सरदार बन जाते, लेकिन दुनिया हासिल करने के लिए उन्होंने इल्म को दुनिया वालों के लिए खर्च किया, जिसकी वजह से ज़माने वालों की नज़रों में ज़लील हो गये। —मिश्कात

दूसरे इंसानों की तरह आजकल के उलेमा भी आख़िरत के फ़िक्र से ख़ाली हो गये हैं और इस फ़ना होने वाली ज़िंदगी को अपने इल्म का मक़सद बना रखा है। सियासी लीडर बनने, शोहरत हासिल करने, रुपया कमाने-जोड़ने की धुन में परेशान हैं और मौजूदा ज़माने के उलेमा में बहुत कम ही ऐसे हैं जो इस्लाम की तब्लीग़ करते हों, वरना आज तो उलेमा की यह हालत हो गयी है कि जल्सों में गांधी-इज़्म या नेशनलिज़्म, सोशलिज़्म और कम्युनिज़्म की इशाअत करते हैं और नबी सल्ल० के इर्शादात के बजाए मख़्लूक़ के अपने गढ़े निज़ामों की तरफ़ दावत देते हैं।

---

१. क़ताद एक कांटेदार पेड़ का नाम है। ऐसे मौक़ों पर अरब के लोग इसे मिसाल के तौर पर पेश करते थे।

मस्जिदें सजाई जाएंगी और उनमें दुनिया की बातें हुआ करेंगी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत की निशानियों में एक यह भी है कि लोग मस्जिदें बना कर फ़ख्र करेंगे।[1]

आजकल यही हाल है और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ौल के मुताबिक़— لَتُزَخْرِفُنَّهَا كَمَا زَخْرَفَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصَارٰى

तुम ज़रूर मस्जिदों को यहूद व नसारा की तरह सजाओगे।[2]

दिल को अपनी तरफ़ खींचने वाले रंग-बिरंग के टाइल, झाड़, फ़ानूस, हांडियां, मनभावन फ़र्श और क़ीमती पर्दे और दूसरी सजावट और आराम की चीज़ें मस्जिदों में मौजूद हैं और दुनिया की इन चीज़ों ने मस्जिदों में पहुंच कर नमाज़ के वक़्तों के अलावा मस्जिदों में ताला लगा देने पर मजबूर कर दिया है और हिफ़ाज़त के लिए मुस्तक़िल निगरानों और चौकीदारों की ज़रूरत पैदा कर दी है। मस्जिदें दुनिया की इन सजावटों से भरी पड़ी हैं और नमाज़ियों से ख़ाली हैं। जो नमाज़ी हैं, वे मस्जिदों में दुनिया की बातों में लगे रहते हैं। मस्जिदों में न ख़ुदा में दिल लगाने वाली नमाज़ है न तालीमी हल्क़े हैं, न दीनी मश्विरे हैं, न तिलावत के ज़िक्र से आबाद हैं। हालांकि मस्जिदें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और

---

१. अबूदाऊद, २. वही,

हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माने में दीन और दीनियात की तरक़्क़ी के कामों और उससे मुताल्लिक़ मश्विरों का मर्कज़ थीं।

कंज़ुल उम्माल की एक रिवायत में है कि जब तुम अपनी मस्जिदों को सजाने लगो और क़ुरआनों को अपनी आंखों को चका-चौंध करने वाला बनाने लगो, तो समझ लो कि तुम्हारी हलाकत का वक़्त क़रीब है।

बैहक़ी की रिवायत में है, जो 'शाबुल ईमान' में आयी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि एक ज़माने में ऐसे लोग होंगे, जिनकी दुनिया से मुताल्लिक़ बातें उनकी मस्जिदों में हुआ करेंगी। तुम उनके पास न बैठना, क्योंकि ख़ुदा को उनकी कोई ज़रूरत नहीं है।

दीन पर अमल करना हाथ में चिंगारी लेने के बराबर होगा और बड़े-बड़े फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि दीन पर जमने वाला उनमें ऐसा होगा, जैसे हाथ में चिंगारी पकड़ने वाला हो।[1]

---

१. मिश्कात शरीफ़,

यह ज़माना इस वक़्त मौजूद है, क्योंकि हर तरफ़ बद-दीनी व बे-हयाई और फ़ह्शकारी का माहौल है। फ़िस्क़ व फ़ुजूर और सर-कशी का माहौल है। एक तो दीनदार रहे ही नहीं और अगर कोई दीन पर अमल करना चाहता है तो मुल्क वाले, वतन वाले, रिश्ते-नातेदार आड़े आ जाते हैं। बीवी कहती है कि तंख्वाह में मेरा पूरा नहीं पढ़ता, दुनिया रिश्वत ले रही है, तुम बड़े परहेज़गार बने हुए हो। हम-उम्र मज़ाक़ उड़ा रहे हैं कि दाढ़ी रख कर 'मुल्ला' बन गये, झाड़-सा लगाये फिर रहे हैं। रेल में या लारी में सफ़र कर रहे हैं और एक शख्स नमाज़ पढ़ना चाहता है, मगर उसके लिए न रेल ठहर सकती है न लारी रुक सकती है, लेकिन अगर किसी का कुछ दुनिया का नुक़सान हो जाए, तो सब हमदर्दी के लिए हाज़िर हैं। आजकल दीनदारी अख्तियार करना सारी दुनिया से लड़ाई मोल लेने के बरा-बर है, सब की फबतियां सुने, सब को नाराज़ करे, दीन बचाने के लिए दुनिया का नुक़सान करे, तो दीनदार बने, लेकिन बहुत मुबारक हैं वे लोग जिन्हें सिर्फ़ खुदा की रिज़ा का ख्याल है और जो दुनिया को मुंह नहीं लगाते—

وصحبتی یا عازلی الملک الذی اسخطت کل الناس فی ارضائہ

दीन का दर्द पैदा करने और बद-दीनी के माहौल से निकलने की ताक़त हासिल करने के लिए खानक़ाहों और दीनदारों की मज्लिसों में शिर्कत करना बहुत ज़रूरी है। जब इंसान बद-दीनी के माहौल से गुनाह अपना सकता है, तो दीनदारी के माहौल में पहुंच कर नेक भी बन सकता है। अगर किसी वजह से दीनदारों सें दूर हो तो बद-दीनों से भी दूर रहे। इसी सच्चाई को देखते हुए रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि बहुत जल्द ऐसा होगा कि मुसलमान का बेहतरीन माल कुछ बकरियां होंगी, जिन्हें लेकर पहाड़ की चोटियों और जंगलों में चला जाएगा (और इस शक्ल से) अपना

दीन बचाने के लिए फ़ित्नों से भागेगा।[1]

एक और हदीस में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बहुत जल्द फ़ित्ने पैदा होंगे। उस वक़्त बैठा हुआ खड़े हुए से बेहतर होगा (क्योंकि बैठा हुआ शख़्स खड़े हुए शख़्स के मुक़ाबले में फ़ित्ने से दूर होगा) और खड़ा हुआ चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। जो शख़्स फ़ित्नों की तरफ़ नज़र उठा कर देखेगा, फ़ित्ने उसे उचक लेंगे, इस लिए उस वक़्त जिसे कोई बचाव और पनाह की जगह मिल जाए, तो वहां पनाह ले ले।[2]

फ़ित्ने के वक़्त अल्लाह की इबादत में लगा रहना बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़त्ल के ज़माने में इबादत करना मेरी तरफ़ हिजरत करने के बराबर है।[3]

हज़रत अबू सालबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस आयत—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ

का मतलब मालूम किया, तो आपने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म करते रहो, और बुराइयों से रोकते रहो, यहां तक कि जब तुम लोगों का यह हाल देखो कि बुख़्ल (कंजूसी) का कहा माना जाने लगे और नफ़्स की ख़्वाहिशों पर अमल होने लगे और (दीन पर) दुनिया को बड़ा समझा जाने लगे और हर राय वाला अपनी राय को असल समझने लगे और तुम इस हाल में हो जाओ कि (लोगों में रह कर

---

१. बुख़ारी शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम, ३. मुस्लिम शरीफ़,

तुम्हारे लिए) फ़ित्ने में पड़ जाना जरूरी हो जाए, तो खास तौर पर अपने नफ़्स को संभाल लेना और अवाम को छोड़ देना, क्योंकि तुम्हारे आगे यानी आने वाले ज़माने में सब्र के दिन हैं। जिस ने उनमें सब्र किया (यानी दीन पर जमा रहा तो गोया) उसने चिगारी हाथ में ली, (फिर फ़रमाया कि इस ज़माने में दीन पर अमल करने वाले को उन पचास आदमियों के अमल के बराबर बदला मिलेगा, जो उस ज़माने के अलावा (अम्न के दिनों में) उस जैसा अमल करें। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! क्या इन को पचास शख्सों का बदला मिलेगा ? आपने फ़रमाया, (नहीं, बल्कि) तुममें से पचास अमल करने वालों का अज्र मिलेगा।[1]

इस्लाम अजनबी हो जाएगा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस्लाम परायेपन (ग़रीबी) की हालत में ज़ाहिर हुआ था (कि उससे लोग भागे थे और कोई-कोई क़ुबूल कर लेता था) और बहुत जल्द फिर बेगाना हो जाएगा, जैसा कि शुरू में था। (चुनांचे इस्लाम पर अमल करने वाला कोई-कोई ही मिलेगा, फिर फ़रमाया कि) सो, ऐसे लोगों को खुशखबरी हो, जो (इस्लाम पर चलने की वजह से) बेगाने (शुमार) हों।[2]

मतलब यह है कि जब मैंने इस्लाम की दावत दी तो उसे शुरू-शुरू में कुछ लोगों ने ही क़ुबूल किया और इस्लाम को आम तौर से लोगों ने कोई अनजानी और परायी चीज़ समझी, यहां तक कि

---

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़,

इस्लाम क़ुबूल करने वालों को बद-दीन कहा गया और उनको मक्का छोड़ने पर मजबूर किया गया। एक बार जब मुसलमान हब्शा चले गये, तो मुश्रिकों ने वहां से निकलवाने की कोशिश की और बादशाह से शिकायत की कि कुछ नव-जवान बेवक़ूफ़ लड़के अपना क़ौमी दीन छोड़ कर एक नये दीन में दाखिल हो गये हैं और वह नया दीन ऐसा है,जिसे हम पहचानते भी नहीं हैं।

सूरः स्वाद में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत सुन कर मुश्रिकों ने कहा—

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ

फिर इर्शाद फ़रमाया कि बाद में लोगों ने खूब इस्लाम क़ुबूल किया और खूब फैलाया, लेकिन आगे चल कर ऐसा होगा कि इस्लाम फिर अपनी असली हालत पर आ जाएगा और उसके अह्काम को क़ुबूल करने और अमल करने वाले न मिलेंगे। इस्लाम की चीज़ों को बेगानगी की नज़रों से देखेंगे, गोया इस्लाम को जानते भी नहीं। उस वक्त इस्लाम पर अमल करने वाला गोया कोई-कोई होगा और कहीं-कहीं कोई पक्का मुसलमान नज़र आएगा। लेकिन ऐसे मुसलान अगरचे लोगों की नज़रों नें गिरे हुए होंगे और उनसे कोई बात भी करनी पसंद न करेगा, मगर खुदा की तरफ़ से मैं उन्हें खुशखबरी सुनाता हूं।

तिर्मिज़ी और इब्ने माजा की रिवायत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक दीन हिजाज़ की तरफ़ इस तरह सिमट जाएगा, जैसे सांप अपनें बिल में सिमट कर घुस जाता है और दीन सिर्फ़ हिजाज़ ही में रह जाएगा, जैसे जंगली बकरी सिर्फ़ पहाड़ की चोटी ही में रहती है (फिर फ़रमाया कि) बेशक तीन परायेपन और ग़ुर्बत की हालत में ज़ाहिर हुआ था और बहुत जल्द वह फिर बेगाना हो जाएगा, जैसा कि शुरू में

था। सो खुशखबरी हो बेगाने लोगों को, जो मेरी इन सुन्नतों को संवारेंगे, जिन्हें मेरे बाद लोग बिगाड़ देंगे।

हर बाद का ज़माना पहले से बुरा होगा

हज़रत ज़ुबैर बिन अदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज्जाज के ज़ुल्म की शिकायत की। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शिकायत सुन कर फ़रमाया कि सब्र करो (मालूम नहीं आगे क्या हो ?) क्योंकि कोई ज़माना भी तुम पर ऐसा न आएगा कि उसके बाद वाला ज़माना उससे ज्यादा बुरा न हो, जब तक तुम अपने रब से मुलाक़ात न कर लो। (यानी मरते दम तक ऐसा न होगा कि आने वाला ज़माना पहले से और मौजूदा ज़माने से अच्छा आ जाए)। यह बात मैंने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है।[1]

मालूम हुआ कि ज़माने की और ज़माने वालों की शिकायत फ़िज़ूल है और आगे आने वाले ज़माने में अच्छे हाकिमों की उम्मीद भी ग़लत है, इस लिए जितना भी वक़्त मिले और उम्र की जो भी सांस मिल जाए उसे ग़नीमत समझे और नेक अमल के ज़रिए अल्लाह से उम्मीदें बांधे और उसके क़ह्र व ग़ज़ब से डरता रहे।

कुफ़्र की भरमार होगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले

---

१. बुख़ारी शरीफ़,

ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह आने वाले (काले) फ़ित्नों से पहले (नेक) अमल करने में जल्दी करो। (उस ज़माने में) इंसान सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन होगा, सुबह को काफ़िर होगा। ज़रा-सी दुनिया के बदले अपने दीन को बेच डालेगा।[1]

जब फ़ित्ने ग़ालिब आ जाते हैं, तो इंसान नेक काम करने में सैंकड़ों आड़ें महसूस करता है और दीन पर चलना ना-मुम्किन होने लगता है और ऐसे वक़्त में ईमान की ज़िंदगी सख़्त ख़तरे में पड़ जाती है, इसी लिए दुनिया के रहनुमा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नेक कामों में बाज़ी ले जाने और जल्दी करने का मश्विरा दिया कि रुकावटों के आने से पहले ही नेक काम करने में लग जाओ और ईमान को बचा लो, ताकि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता फ़ित्नों में घिर कर नेक कामों से न रह जाओ। यह ज़माना बड़े फ़ित्नों का ज़माना है। हर तरफ़ से गुमराही की तरफ़ लीडर खींच रहे हैं और दीन के बदले ज़रा-सी दुनिया हासिल करनी की एक छोटी-सी यह मिसाल है कि कचहरी में झूठी क़सम खा कर गवाही देना बहुत-से इंसानों का पेशा बन गया है।

एक जमाअत ज़रूर हक़ पर क़ायम रहेगी और मुजद्दिद आते रहेंगे

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि मेरी उम्मत में हमेशा एक

---

१. मुस्लिम शरीफ़,

ऐसी जमाअत रहेगी, जो खुदा के हुक्म पर क़ायम होगी। मौत आने तक वे इसी हाल पर रहेंगे। इनकी मुखालफ़त और साथ का न देना उन्हें कुछ नुक़्सान न पहुंचाएगा (यानी उन्हें इसकी परवाह हरगिज़ न होगी कि ज़माने वालों का रवैया क्या है और ज़माने वाले हमारे मुखालिफ़ हैं या मुवाफ़िक़ हैं।

दूसरी हदीस में आपने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में क़ियामत तक एक जमाअत रहेगी जिसकी खुदा की तरफ़ से मदद होती रहेगी, जो उनका साथी न बनेगा, उन्हें कुछ नुक़्सान न पहुंचा सकेगा।[1]

बैहक़ी की एक रिवायत है कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि इस उम्मत के आखिरी दौर में ऐसे लोग होंगे, जिन्हें वही अज्र मिलेगा, जो इनसे पहलों को मिला था। वे नेकियों का हुक्म करेंगे, बुराइयों से रोकेंगे और फ़ित्ने वालों से लड़ेंगे। —बैहक़ी

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हर आने वाले दौर में इस इल्म के जानने वाले होंगे, जो बढ़ा-चढ़ा कर बयान करने वालों की घट-बढ़ से और बातिल वालों की झूठी बातों से और जाहिलों के मनमाने मतलबों से इस को पाक करते रहेंगे। —बैहक़ी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस उम्मत के लिए हर सौ साल के बाद ऐसा शख्स भेजता रहेगा, जो उसके दीन को नया करेगा। —अबू दाऊद

खुदा का यह वायदा दूसरे वायदों की तरह पूरा होता रहा है और हमेशा होता रहेगा, मगर हक़ कहने वालों और उस पर जमने

---

१. मुस्लिम,

वालों की जमाअत पहले दिन से आज तक बाक़ी न रहती, तो फ़ित्ना पैदा करने वाले मोतज़ला, बिद्अती, नुबूवत के दावेदार, दुनिया में सुधार का दावा करने वाले, हदीस के इन्कारी, क़ुरआन की नयी तफ़्सीरें गढ़ने वाले दीन को बदल कर रख देते। सूफ़ी लोग, फ़िक़्ह के माहिर और हदीस के आलिम हमेशा रहेंगे। 'वल हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक॰'

मुसलमान कभी ख़त्म न होंगे

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने ख़ुदा से दुआ की कि मेरी सारी उम्मत को आम क़हत के साथ हलाक न करें और उन पर कोई दुश्मन ग़ैरों में से मुसल्लत न करें, जो इन सब को ख़त्म कर दे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब मैं कोई फ़ैसला करता हूं, तो उस को टाला नहीं जा सकता। मैं तुमको यह वायदा देता हूं कि तुम्हारी उम्मत को आम काल से हलाक न करूंगा और उन पर ग़ैरों में से कोई ऐसा दुश्मन मुसल्लत न करूंगा जो उन को एक-एक करके ख़त्म कर दे, अगरचे तमाम ज़मीन पर बसने वाले हर तरफ़ से जमा हो जाएं।[1]

हदीस से इंकार किया जाएगा

हज़रत मिक़्दाम बिन मादीकर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ख़बरदार!

---

१. मुस्लिम,

यक़ीनन मुझे क़ुरआन दिया गया है और क़ुरआन जैसे और अह्काम भी दिए गये हैं। फिर फ़रमाया, ख़बरदार ! ऐसा ज़माना आएगा कि पेट भरा इंसान अपनी आरामगाह पर बैठा हुआ कहेगा कि बस तुम्हें क़ुरआन काफ़ी है। इस में जो हलाल बताया उसे हलाल समझो और उसने जिसे हराम बताया, उसे हराम समझो। (हदीस की ज़रूरत नहीं है) फिर फ़रमाया कि हालांकि रसूलुल्लाह का हुक्म किसी चीज़ के हराम होने के लिए ऐसा ही है जैसा ख़ुदा ने किसी चीज़ के हराम होने का हुक्म दिया है।'[1]

यानी पेशीन गोई काफ़ी मुद्दत से सही साबित हो रही है कि पेट भरे यानी दौलतमंद, जो सरमाए के नशे में चूर हैं और जो ज़रा-सा पढ़-लिख गये हैं, सिर्फ़ क़ुरआन को हिदायत के लिए काफ़ी समझते हैं। और हदीस के हुक्म, चूंकि नफ़्स पर बोझ बनते हैं, इस से हदीस से बिल्कुल ही इंकार करते हैं, यह कहते हैं कि हदीस गढ़ी हुई, मोलवियों की ईजाद हैं, वग़ैरह-वग़ैरह, हालांकि क़ुरआन करीम के हुक्म हदीस के बग़ैर मालूम नहीं हो सकते और इसकी तफ़्सीलात सुन्नते नबवी के बग़ैर समझ में आ ही नहीं सकती। क़ुरआन शरीफ़ में है—

مَا اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا

'जो हुक्म तुम्हें रसूल दे, उसे क़ुबूल करो और जिससे रोके, उस से रुक जाओ।'

'पेट भरा' आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस लिए फ़रमाया कि ग़रीबों को तो इतनी फ़ुर्सत ही नहीं मिलती कि इधर-उधर की बहसों में पड़ कर अपना दीन बर्बाद करें, हां, मालदार लोग शैतान के मक़सद को पूरा करते हैं, ज़रा-सा पढ़ा और 'माहिर' बन

---

१. मिश्कात,

गये। इस दौर के अबू हनीफ़ा रह० भी यही हैं और वक़्त के जुनैद भी यही हैं। उनके नज़दीक मुसलमानों की तरक़्क़ी सूद के जायज़ होने में और तस्वीरों के हलाल होने में और नेकर-कोट-पतलून पहनने और उन दूसरी बद-आमालियों मे छिपी हुई है, जिन्हें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हराम फ़रमा दिया है।

नये अक़ीदे और नयी हदीसें चलेंगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आख़िरी ज़माने में बड़े-बड़े मक्कार और झूठे पैदा होंगे, जो तुम्हें वे बातें सुनाएंगे, जो न कभी तुमने सुनी हों और न तुम्हारे बाप-दादा ने। तुम उन से बचना और उन्हें अपने से बचाना। वे तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ित्ने में न डाल दें।[1]

साहिबे मिर्क़ात इसकी तश्रीह में फ़रमाते हैं कि ये लोग झूठी-झूठी बातें करेंगे और नये-नये अह्काम जारी करेंगे, ग़लत अक़ीदे ईजाद करेंगे।

इस क़िस्म के लोगों में से बहुत से गुज़र चुके हैं, जिनमें से एक ग़ुलाम 'अहमद' क़ादियानी था, जिसने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मुर्दा बताया, ख़त्मे नुबूवत से इंकार किया, ख़ुद को नबी बताया। इसके अलावा उसकी बहुत से बकवासें मशहूर हैं।

मिल्लते इस्लामिया के लिए एक बहुत बड़ा फ़ित्ना यह है कि जो कोई बातिल जमाअत ग़लत और बिगाड़ वाले अक़ीदों को लेकर खड़ी होती है, तो उसकी आवाज़ में आवाज़ मिलाने वाले क़ुरआन व

---

१. मुस्लिम शरीफ़,

हदीस से इन ग़लत अक़ीदों को साबित करने लगते हैं। चुनांचे आज-कल कम्युनिज़्म क़ुरआन शरीफ़ से साबित किया जा रहा है और मौजूदा जम्हूरियत को इस्लाम की जम्हूरियत के मुताबिक़ बताया जा रहा है।

एक साहब ने तो ग़ज़ब ही कर दिया, जब उन से कहा गया कि डार्विन का इर्तिक़ा का अक़ीदा क़ुरआन के ख़िलाफ़ है, क्योंकि क़ुर-आन तो इंसान की इब्तिदा हज़रत आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से बताता है, तो इर्शाद फ़रमाया कि मुम्किन है, सब से पहला बन्दर जो इंसान बना हो, वह आदम ही हो (नअूज़ुबिल्लाहि तआला)

क़ुरआन को रोज़ी का ज़रिया बनाया जाएगा

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे और मज्लिस में अरब के शहरियों के अलावा देहात के बाशिंदे और ग़ैर-अरब भी थे। इसी बीच आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आये और फ़रमाया कि पढ़ते रहो, तुम सब ठीक पढ़ रहे हो और बहुत जल्द ऐसे लोग आएंगे, जो क़ुरआन को तीर की तरह दुरुस्त करेंगे (यानी हरफ़ों की आवाज़ के अदा करने का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखेंगे) और उनका मक़्सद क़ुरआन पढ़ने से दुनिया हासिल करना होगा और इसके ज़रिए आख़िरत न संवारेंगे।[1]

दूसरी रिवायत में है कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बाद बहुत जल्द ऐसे लोग आएंगे जो क़ुरआन को गाने और नौहा के तरीक़े

---

१. बैहक़ी,

पर पढ़ेंगे और क़ुरआन उनके हलक़ों से आगे न बढ़ेगा (यानी उन का पढ़ना क़ुबूलियत के दर्जे को न पहुंच सकेगा) इन पढ़ने वालों के और इनकी क़िरात सुन कर खुश होने वालों के दिल फ़ित्ने में पड़े होंगे ।[1]

आजकल बिल्कुल यही नक़्शा है कि मस्जिदों में क़ुरआन सुन कर सवाल किया जाता है। तीजे और चालीसवें के मौक़े पर क़ुरआन पढ़वा कर अपनी इज़्ज़त बढ़ाई जाती है। मय्यत की क़ब्र पर चालीस दिन तक क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर उसका मुआवज़ा लिया जाता है। तरावीह में क़ुरआन सुना कर पेट पाला जाता है। मख़ारिज व सिफ़ात की अदाएगी का तो बहुत ख़्याल रखा जाता है, मगर क़ुरआन को समझने और उस पर अमल करने से कोसों दूर हैं। ग्यारह महीने तक नमाज़ें ग़ारत कीं, दाढ़ी मुंडाई, हराम कमाया और रमज़ान आते ही मुसल्ले पर पहुंच कर क़ुरआन सुनाने लगे। जामा मस्जिद दिल्ली में देख लीजिए कि इधर नमाज़ ख़त्म हुई उधर तिलावत की आवाज़ आने लगी। क़ारी साहब क़ुरआन मजीद की तिलावत फ़रमा रहे हैं और रूमाल भीख के लिए बिछा रखा है।

मुसलमानों की अक्सरीयत होगी, लेकिन बेकार

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि (कुफ़्र व बातिल की) जमाअतें तुम्हें ख़त्म करने के लिए आपस में एक दूसरे को इस तरह बुला कर जमा

---

१. मिश्कात,

कर लेंगी, जैसे खाने वाले एक दूसरे को बुला कर थाले के आस-पास जमा हो जाते हैं। यह सुन कर एक साहब ने सवाल किया कि क्या हम उस दिन कम होंगे? आपने फ़रमाया, नहीं! बल्कि तुम उस दिन तायदाद में बहुत होगे, लेकिन घास के उन तिनकों की तरह होगे, जिन्हें पानी की बाढ़ बहा कर ले जाती है, (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) और खुदा ज़रूर-ज़रूर तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा रौब निकाल देगा और ज़रूर ही यक़ीनी तौर पर वह तुम्हारे दिलों में काहिली व सुस्ती डाल देगा। एक साहब ने अर्ज़ किया कि सुस्ती की क्या (वजह) होगी? इस पर आपने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया (यानी माल व दौलत से) मुहब्बत करने लगोगे और मौत को मकरूह समझने लगोगे।[1]

वर्षों से यह पेशीनगोई हर्फ़-ब-हर्फ़ सच्ची साबित हो रही है और मुसलमान आज अपनी इस गिरी हालत को अपनी आंखों से देख रहे हैं कि कोई क़ौम न उन्हें इज्ज़त की निगाह से देखती है, न दुनिया में इन का रहना गवारा करती है। एक वह भी ज़माना था कि दूसरी क़ौमें अपने ऊपर मुसलमानों को हुक्मारां (हाकिम) देखना चाहती थी, एक दौर यह है कि ग़ैर मुस्लिम क़ौमें मुसलमान को अपनी हदों में रखना भी पसन्द नहीं करतीं। तमाम दुनिया के मुसलमान एक ही वक़्त में एकदम खत्म हो जाएं, यह तो हरगिज़ कभी नहीं होगा जैसा कि पहले पेशीनगोई गुज़र चुकी है, हां ऐसे वाक़िआत गुज़र चुके हैं कि किसी मुल्क में जहां मुसलमान खुद हाकिम थे, इन्क़िलाब के बाद वे वहां से जान बचा कर भी न भाग सके। स्पेन इसकी ज़िंदा और मशहूर मिसाल है।

मुसलमानों को आज ज़िल्लत व रुस्वारी का मुंह क्यों देखना पड़ रहा है और करोड़ों की तायदाद में होते हुए भी क्यों ग़ैरों की तरफ़

---

१. अबूदाऊद,

देख रहे हैं। इसका जवाब खुद दुनिया के हादी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद में मौजूद है कि दुनिया की मुहब्बत और मौत के खौफ़ की वजह से यह हाल हो रहा है। जब मुसलमान दुनिया को महबूब न समझते थे और जन्नत के मुक़ाबले में (जो मौत के बग़ैर नहीं मिल सकती) दुनिया की ज़िंदगी उनकी नज़रों में कुछ भी हक़ीक़त न रखती थी, (इस लिए वे मौत से डरते थे) तो गो तायदाद में कम थे, लेकिन दूसरी क़ौमों पर हुकूमत करते रहे और अल्लाह की राह में जिहाद करके ग़ैरों के दिलों तक पर हुकूमत करने लगे। आज भी जो हमारा हाल है, हम उसे खुद बदल सकते हैं, बशर्ते कि पिछले मुसलमानों की तरह दुनिया को ज़लील और मौत को जान से अज़ीज़ समझने लगें, वरना ज़िल्लत और बढ़ती ही रहेगी।

मुसलमान मालदार होंगे, मगर दीनदार न होंगे

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि अचानक मुस्अब बिन उमैर रज़ि० आ निकले, जिनके बदन पर सिर्फ़ एक चादर थी और उसमें चमड़े का पैवन्द लगा हुआ था। उन का यह हाल देख कर और उन का इस्लाम से पहला ज़माना याद कर के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोने लगे, (क्योंकि हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० इस्लाम लाने से पहले, बड़े मुलायम और क़ीमती कपड़े पहना करते थे, फिर इर्शाद फ़रमाया कि मुसलमानो! उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जब सुबह को एक जोड़ा पहन कर निकलोगे और शाम को दूसरा जोड़ा पहन कर घर से निकलोगे और एक प्याला सामने रखा जाएगा और दूसरा प्याला उठाया जाएगा

और तुम अपने घरों पर (ज़ेब व ज़ीनत) के लिए इस तरह कपड़े के पर्दे डालोगे, जैसे काबे को कपड़ों से छिपा दिया जाता है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! जब तो हम आज के मुक़ाबले में बेह्तर होंगे, (क्योंकि) इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जाएंगे और कमाने के लिए मेह्नत न करनी पड़ेगी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि नहीं, तुम उस दिन के मुक़ाबले में आज ही अच्छे हो।[1] (ज़ाहिर में अगरचे ग़रीब लेकिन ईमान की दौलत से मालामाल हो और उस ज़माने में ज़ाहिरी तौर पर मालदार होंगे, लेकिन ईमान के एतबार से मुफ़्लिस।)

हक़ीक़त में आज वही ज़माना है कि अक्सर मुसलमानों को ख़ुदा ने दौलत दी है और इतनी दी है कि अगर उम्र भर भी न कमाएं और दीन ही के कामों में लगे रहें, तो उन्हें तंगदस्ती पेश नहीं आ सकती और हज़रात सहाबा के क़ौल के मुताबिक़ इबादत ही में सारा वक़्त ख़र्च कर सकते हैं। अफ़सोस उन्हें मरने के बाद की ज़िंदगी का फ़िक्र नहीं, अल-बत्ता अच्छे-अच्छे खाने और उम्दा-उम्दा पहनने का ध्यान ज़रूर है। स्कूल जाने का लिबास अलग, बाज़ार जाने का जोड़ा अलग, रात का अलग, तरह-तरह के खाने और सालन पक रहे हैं और बस, इसी में मस्त हैं। इस ऐश व इशरत की वजह से ख़ुदा के सामने तो झुकना दूर की बात, कभी झुकने का ख़्याल तक नहीं आता, इसी लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़राते सहाबा से इर्शाद फ़रमाया कि वह बहुतात का ज़माना तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। आज ही तुम अच्छे हो कि तंगदस्ती के बावजूद दीन पर जमे हुए हो।

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

---

१. तिर्मिज़ी.

'ख़ुदा की क़सम ! मुझे तुम्हारे मालदार होनेका डर नहीं, बल्कि इसका डर है कि तुम्हें दुनिया ज़्यादा दे दी जाए, जैसे तुम से पिछले लोगों को दी गयी थी और तुम दुनिया में इसी तरह फंस जाओ, जैसे वे फंस गये थे। फिर तुम्हें दुनिया बर्बाद कर दे, जिस तरह उन्हें बर्बाद कर दिया था।'

ग़ौर के क़ाबिल बात यह है कि मालदार तो इस लिए दीनदार नहीं कि उनके पास माल है, लेकिन ताज्जुब यह है कि आजकल के ग़रीब भी दीन से उतना ही दूर हैं, जितने मालदार, बल्कि इससे भी ज़्यादा और वजह यह है कि दीनदारी का माहौल नहीं रहा, न मालदार घरानों में, न ग़रीबों के झोंपड़ों में। फ़ इलल्लाहिल मुश्तका०

झूठ आम हो जाएगा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे सहाबा रज़ि० की इज़्ज़त करो, तुममें (यानी उम्मते मुहम्मदिया में) सब से अच्छे लोग यही हैं। फिर इसके बाद वे अच्छे होंगे जो इनके बाद आएंगे। इसके बाद झूठ फैल जाएगा, यहां तक कि यक़ीनन एक ऐसा वक़्त भी आएगा कि इंसान बग़ैर क़सम दिलाए क़सम खायेगा और बग़ैर गवाह बनाए गवाही देंगे। —नसई

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत है, जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल की गयी है कि फिर इनके बाद ऐसे लोग आ जाएंगे, जो मोटा होने को पसन्द करेंगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि फिर ऐसे लोग आ जाएंगे कि उनकी गवाही उनकी क़सम से आगे बढ़ेगी और उन की क़सम उनकी गवाही से आगे बढ़ेगी।

इन रिवायतों को जमा करने से मालूम हुआ कि तब्अ ताबिईन के दौर के बाद झूठ इतना हो जाएगा कि बात-बात में बिला वजह और खामखाह झूठी क़सम खाया करेंगे, बिला ज़रूरत बोलने का मरज़ इतना फैल जाएगा कि बग़ैर गवाह बनाये गवाह बन कर खड़े हो जाया करेंगे कि यह वाक़िआ मुझे भी मालूम है और जब यह क़िस्सा पेश आया तो मैं भी मौजूद था, हालांकि उसे उस वाक़िआ की खबर भी न होगी। झूठी क़सम और झूठी गवाही का इतना रिवाज हो जाएगा कि गवाही क़सम से पहले ज़ुबान से निकालने की कोशिश करेगी और क़सम गवाही से पहले ज़ुबान पर आना चाहेगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि आगे ज़माना यक़ीनी तौर पर ऐसा ही आएगा कि शैतान इंसानी शक्ल में आकर लोगों को झूठी बातें सुनाएगा। इसकी बातें सुन कर लोग अलग-अलग हो जाएंगे। जब उनमें से कोई शख्स उस की बातों को दूसरों से रिवायत करेगा तो कहेगा कि मैंने यह बात ऐसे शख्स से सुनी है, जिसे चेहरे से पहचानता हूं, मगर नाम नहीं जानता।[1]

ऊपर की हदीस में यही इर्शाद है कि मोटा होने को ज़्यादा पसन्द करेंगे, यानी आख़िरत की फ़िक्र उनके दिल से जाती रहेगी और ख़ुदा के सामने जवाबदेही का डर न होगा और इसी बे-फ़िक्री की वजह से बे-तहाशा रोग़नदार माल खा-खा कर मोटे हो जाएंगे। खाना-पीना और माल जमा करके फूलना ही इनकी ज़िदगी का मक़्सद बन कर रह जाएगा।

१. मिश्कात, २. बुखारी व मुस्लिम,

मर्दों की कमी, शराबख़ोरी और ज़िना की ज़्यादती होगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत की निशानियों में से यह भी है कि इल्म उठ जाएगा, जिहालत बहुत बढ़जाएगी, ज़िना की कसरत होगी, शराब बहुत पी जाएगी, मर्द बहुत कम हो जाएंगे, औरतें इतनी ज्यादा होंगी कि पचास औरतों की ख़बरगीरी के लिए एक ही मर्द होगा ।[1]

इस हदीस में जो कुछ इर्शाद फ़रमाया है, इस वक़्त वही कुछ हो रहा है, अल-बत्ता औरतों की अभी इतनी ज़्यादती नहीं हुई, जितनी इस हदीस में ज़िक्र हुआ है, मगर यूरोप की लड़ाइयां जल्द ही इस पेशीनगोई को सच्चा कर दिखाने वाली हैं ।

इल्म उठ जाएगा

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इल्म सीखो और लोगों को सिखाओ, (इस्लाम के फ़राइज़) ख़ुद भी सीखो और लोगों को भी सिखाओ । क़ुरआन ख़ुद भी पढ़ो और लोगों को भी पढ़ाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे पास से जाने वाला हूं और इल्म (भी) उठ जाएगा और फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे, यहां तक कि जब

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम,

किसी मामले में दो शख्स झगड़ेंगे तो कोई फ़ैसला करने वाला तक न मिलेगा।'

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि बन्दों में से खुदा इल्म को अचानक न उठायेगा, बल्कि उलेमा को मौत देकर इल्म को धीरे-धीरे खत्म करेगा, यहां तक कि जब खुदा किसी आलिम को न छोड़ेगा, तो लोग जाहिलों को अमीर (और सदर) बनाएंगे और उन (से मसाइल और मामलों के बारे में) सवाल किये जाएंगे, तो वह बग़ैर इल्म के फ़त्वे देंगे और खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।'

उम्र में बे-बरकती हो जाएगी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक कि वक़्त जल्दी-जल्दी न गुज़रने लगे (फिर उस की तश्रीह फ़रमायी कि) एक साल एक माह के बराबर होगा और एक माह एक हफ़्ते के बराबर होगा और एक हफ़्ता एक दिन के बराबर होगा और एक दिन एक घड़ी के बराबर होगा और एक घड़ी ऐसे गुज़र जाएगी, जिस तरह आग का शोला यकायक भड़क कर खत्म हो जाता है।'

वक़्त जल्दी-जल्दी गुज़रने का मतलब क्या है। इसके बारे में हदीस की शरह करने वालों के अलग-अलग क़ौल हैं। ज़्यादा तर्जीह के क़ाबिल मतलब यह है कि उम्रें बे-बरकत हो जाएंगी और इंसान

---

१. मिश्कात शरीफ़, २. वही, ३. तिर्मिज़ी,

अपनी उम्र से दीन व दुनिया के वे सब फ़ायदे हासिल न कर सकेगा, जो इतने लम्बे वक़्त में हासिल हो सकते थे।[1]

फ़क़ीर (लेखक) अर्ज़ करता है कि आइन्दा उम्रों में क्या कुछ बे-बरकती होने वाली है, उसे तो ख़ुदा ही जाने। इस वक़्त का हाल तो यह है कि जब महीना या हफ़्ता ख़त्म हो जाता है तो फ़ौरन ख़्याल आता है कि अभी तो शुरू हुआ था, यकायक ख़त्म हो गया। इस हक़ीक़त से आजकल के इंसान इंकार नहीं कर सकते।

कंजूसी आम होगी और क़त्ल की कसरत होगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (आगे चल कर) ज़माना जल्दी-जल्दी गुज़रने लगेगा, और इल्म उठ जाएगा, फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे और दिलों में कंजूसी डाल दी जाएगी और क़त्ल की कसरत सोगी।

शराब का नाम बदल कर हलाल करेंगे

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले इस तरह इस्लाम को बिगाड़ने की कोशिश की जाएगी कि शराब पिएंगे। सहाबा रज़ि० ने सवाल किया कि मुसलमान शराब पिएंगे, हालांकि ख़ुदा ने उसे सख़्ती से हराम फ़रमाया है? आपने फ़रमाया,

---

१. हाशिया मिश्कात,

उसका नाम बदल कर हलाल कर लेंगे।[1]

यानी इस्लाम के दावेदार उस ज़माने में इतने निडर होंगे कि ख़ुदा को भी धोखा देने की कोशिश करेंगे, शराब जैसी चीज़ को भी (जिसे क़ुरआन ने नापाक और शैतान का काम और आपस की दुश्मनी की वजह और अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से रोकने का शैतानी आला बता कर सख़्ती से बचने का हुक्म फ़रमाया है) न सिर्फ़ पिएंगे, बल्कि उसका नाम बदल कर हलाल समझ लेंगे। आलिमों और मुफ़्तियों को उसका नाम कुछ और बता देंगे, जिस से हुर्मत का फ़त्वा न दिया जा सके। एक शराब ही क्या, आजकल तो बहुत सी हराम चीज़ों को तावील कर के हलाल समझ लिया गया है और तावीलें इतनी लचर हैं कि मकड़ी के जाले से ज़्यादा उनकी हक़ीक़त नहीं है।

मिसाल के तौर पर क़ुरआन पढ़ाने के मुआवज़े ही को ले लीजिए कि इसे नाजायज़ समझते हैं और फिर इस तावील से हलाल भी कहा जाता है कि साहब! हम तो वक़्त का मुआवज़ा लेते हैं, गोया जिन बुज़ुर्गों ने ना-जायज़ होने का फ़त्वा दिया था, उनके ज़माने में बग़ैर वक़्त ख़र्च किये ही क़ुरआन मजीद की तालीम देने का कोई तरीक़ा मौजूद होगा।

इसी तरह रिश्वत को हद्या समझ कर हलाल समझ लिया जाता है, हालांकि अगर खोद-कुरेद कर पता लगाया जाए तो वह रिश्वत ही निकलेगी। फ़ुक़हा ने लिखा है कि जो शख़्स किसी हाकिम को उसके ओहदे पर रहने से पहले रिश्तेदारी या दोस्ताने में कुछ लिया-दिया करता था, तो उसका लेना तो हद्या है और ओहदे पर जाने के बाद जो लोग देने लगते है, वह सब रिश्वत है।

मुस्लिम की एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

---

१. दारमी,

अलैहि व सल्लम ने एक साहब को ज़कात वसूल करने के लिए भेजा, जिन्हें इब्नुल्लुतबिया कहते थे। जब वह ज़कात वसूल करके लाये तो अर्ज़ किया, यह तुम्हारा है (यानी बैतुलमाल का हिस्सा है) और यह मुझे हद्या दिया गया है। यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुत्बा दिया और हम्द व सलात के बाद फ़रमाया—

अम्मा बाद ! मैं तुममें से कुछ लोगों को उन कामों के लिए मुक़र्रर करता हूं जिनका खुदा ने मुझे मुतवल्ली बनाया है, तो उनमें से एक आकर कहता है कि यह तुम्हारा है और यह मुझे हद्या दिया गया है। (अगर ऐसी ही पोज़ीशन रखना था) तो अपने बाप या मां के घर में क्यों न बैठ गया ? फिर देखता कि हद्या दिया जाता है या नहीं।

'क्यों न बैठा अपने बाप या मां के घर में ?' इस से मालूम हुआ कि जो चीज़ ओहदे की वजह से मिले, वह रिश्वत ही है, अल्लाह हमें इससे बचाये।

हराम चीज़ का नाम बदल कर और उसकी दूसरी शक्ल बना कर हलाल बना लेना इस उम्मत से पहले लोगों में राइज था, चुनांचे बुखारी व मुस्लिम की एक रिवायत में यह भी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि यहूदियों पर खुदा की लानत हो कि खुदा ने जब चर्बी का इस्तेमाल उन पर हराम कर दिया था, तो उसे अच्छी सूरत में (यानी तेल बना कर) बेचा और उसकी क़ीमत खा गये।

सूद आम होगा और हलाल व हराम का ख़याल न किया जाएगा

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि इंसान यह परवाह न करेगा कि उसने हलाल हासिल किया या हराम लिया।'

कुछ लोग कह देते हैं कि आजकल हलाल तो मिलता ही नहीं, लेकिन यह समझना कि हलाल आजकल मिलता ही नहीं नफ़्स का धोखा है। चूंकि हलाल का ध्यान रखने की वजह से इंसान क़ैद व हदबंदी में बंध जाता है और हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० के क़ौल के मुताबिक़—

اَلْحَلَالُ لَا يَحْتَمِلُ السَّرَفَ

हलाल में फ़िज़ूलखर्ची की गुंजाइश नहीं होती।

और ऐश व मस्ती की ज़िंदगी गुज़ारने का मौक़ा नहीं मिलता, इस लिए नफ़्स यह तावील समझाता है कि आजकल तो हलाल मिलता ही नहीं, इस लिए हराम-हलाल का ख्याल फ़िज़ूल है। लेकिन जिन बन्दों के दिल में खुदा का डर है और जिन्होंने सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान—

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ لَحْمٌ نَبَتَ مِنَ السُّحْتِ وَكُلُّ لَحْمٍ نَبَتَ مِنَ السُّحْتِ كَانَتِ النَّارُ اَوْلٰى بِهٖ

जन्नत में वह गोश्त दाखिल नहीं होगा, जो हराम से बढ़ा हो, जो गोश्त हराम से बढ़ा हो, दोज़ख उसकी ज़्यादा हक़दार होगी।'

सुना है वह हलाल ही का ध्यान रखते हैं और खुदा उन्हें हलाल ही देता है। अगरचे हलाल उनको ज़्यादा नहीं मिलता और हलाल तलब करने वालों की कभी तो दुनिया की ज़रूरतें भी रुकी रहती हैं, लेकिन आखिरत के बे-पनाह अज़ाब से बचने के लिए दुनिया की जल्द ही खत्म हो जाने वाली तक्लीफ़ों का बर्दाश्त करना हर अक़्ल-

---

१. बुखारी शरीफ़, २. मिश्कात,

मंद के लिए ज़रूरी और लाज़िमी है।

यहां यह बात भी ग़ौर के क़ाबिल है कि हलाल मिलने की परेशानी भी तो हमारी ही पैदा की हुई है। अगर तक़्वा और परहेज़गारी की तरफ़ लोगों का रुख़ हो जाए और सब हलाल कमाने की फ़िक्र करें तो जो मुश्किलें आज पैदा हो रही हैं, वे हलाल कमाई में हरगिज़ पेश न आएं, मगर हाल यह है कि जो दीनदार और परहेज़गार समझे जाते हैं, वर्षों के नमाज़ी हैं, वे भी कमाने के सिलसिले में मुफ़्ती साहब की ख़िद्मत में यह मालूम करने के लिए नहीं पहुंचते, कि मैं यह तिजारत करनी चाहता हूं या फ़्लां मुहकमे में मुझे नौकरी मिल रही है, यह जायज़ है या ना-जायज़ और तिजारत में फ़्लां मामला शरीअत से सही है या नहीं ? हां, सज्दा सह्व और वुज़ू-ग़ुस्ल के मस्अले ख़ूब पूछते हैं और इनके बारे में ख़ूब बहस भी की जाती है, हालांकि शरीअत में हर मुहकमे और हर मामले के अह्काम मौजूद हैं।

हज़रत मूसा अला नबीयिना अलैहिस्सलातु वस्सलामु की शरीअत के साथ यहूद का यही मामला था कि कुछ पर अमल करते और कुछ को पीठ पीछे डाल रखा था। इस हक़ीक़त को ख़ुदावंदे क़ुद्दूस ने यों इर्शाद फ़रमाया है—

أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ (بقره ۴)

क्या ख़ुदा की किताब के एक हिस्से पर तुम्हारा ईमान है और तुम इसी किताब के कुछ हिस्सों का इन्कार करते हो ? —बक़र:

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने दस दिरहम (लगभग २.५० रु०) का कपड़ा ख़रीदा और उसमें एक दिरहम (०.२५) हराम का था (यानी दसवां हिस्सा भी अगर हराम का हो,) तो जब तक वह कपड़ा उसके जिस्म पर रहेगा, ख़ुदा उसकी

नमाज़ क़ुबूल न फ़रमाएगा।

दूसरी हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ऐसे शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया, जो लंबे सफ़र में हो (यह इस लिए फ़रमाया कि मुसाफ़िर की दुआ क़ुबूल होती है और उस के फटेहाल होने की यह सूरत हो कि) बाल बिखरे हुए हों, धूल से अटे हों (और) आसमान की तरफ़ हाथ उठाये हुए 'या रब्बि या रब्बि' कह कर दुआ करता हो और उसका खाना भी हराम हो, कपड़ा भी हराम हो और हराम उसका खाना रहा हो है, तो इस वजह से किस तरह उसकी दुआ क़ुबूल होगी।

इन डरावों के बावजूद भी मुसलमानों का यह हाल है कि हराम लेने में ज़रा भी नहीं झिझकते, हालांकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शक वाली चीज़ तक से बचने का हुक्म फ़रमाया था कि—

دَعْ مَا يُرِيْبُكَ إِلَى مَا لَا يُرِيْبُكَ (مشكوٰة)

शक में डालने वाली चीज़ को छोड़ कर उसकी तरफ़ बढ़ जो तुझे शक में न डाले।

अहमद और दारमी की रिवायतों में इसकी और वज़ाहत इस तरह आयी है—

اَلْبِرُّ مَا اطْمَأَنَّتْ إِلَيْهِ النَّفْسُ وَاطْمَأَنَّ إِلَيْهِ الْقَلْبُ وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي النَّفْسِ وَتَرَدَّدَ فِي الصَّدْرِ وَإِنْ أَفْتَاكَ النَّاسُ

भलाई वह है, जिससे नफ़्स को इत्मीनान हो जाए और दिल में खटका न रहे और गुनाह वह है, जो दिल में खटके और उसके करने से सीने में घुटन महसूस हो (यानी उसके हलाल होने की दिल गवाही न दे) अगरचे मुफ़्ती तुझे (उसके हलाल होने का) फ़त्वा दें।

---

१. मुस्लिम;

तिर्मिजी और इब्ने माजा की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बंदा उस वक़्त तक मुत्तक़ी न होगा जब तक हलाल को भी इस ख़ौफ़ से न छोड़ दे कि कहीं हराम न हो।[1]

सूद आम होगा

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लोगों पर ज़रूर-ज़रूर एक ऐसा दौर आएगा कि कोई शख़्स ऐसा बाक़ी न रहे जो सूद खाने वाला न हो और अगर सूद भी न खाएगा, तो उसे सूद का धुवां और कुछ रिवायतों में ग़ुबार पहुंच जाएगा।[2]

यह पेशीनगोई भी इस वक़्त सच साबित हो रही है, बैंकों से ताल्लुक़ रखने वालों और बैंक के ज़रिए कारोबार चलाने वालों को और फिर उनमें शिर्कत या मुलाज़मत के ज़रिए रुपया हासिल करने वालों को गिनो, फिर देखो कि सूद से या उसके असर से कौन बच रहा है ?

लच्छेदार बातों से रुपया कमाया जाएगा

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक ऐसे लोग मौजूद न हो जाएं, जो अपनी ज़ुबानों के ज़रिए पेट भरेंगे जैसे गाय-बैल अपनी ज़ुबानों से पेट भरते हैं।[3]

---

१. मिश्कात, २. अहमद, अबूदाऊद वग़ैरह, ३. मिश्कात,

'ज़ुबानों के ज़रिए पेट भरेंगे' यानी लम्बी-लम्बी तक़रीरें करके और घंटों लगातार लेक्चर देकर लोगों को अपनी तरफ़ मायल करेंगे और उनकी रोज़ी का ज़रिया ज़ुबानी जमा ख़र्च और लीडरी होगा और इस तरीक़े से जो रुपया मिलेगा, हराम व हलाल का लिहाज़ किए बग़ैर ख़ूब हज़म करते जाएंगे, जिस तरह गाय-बैल तरी-ख़ुश्की का ख़्याल किये बग़ैर अपने सामने का तमाम चारा चट कर जाते हैं।'

ज़्यादा बोलना और लगातार बोलना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसन्द न था, इस लिए बहुत से इर्शादात में कम बोलने की नसीहत फ़रमायी है और इस आदत से मना फ़रमाया है कि बोलते ही चले जाओ और बीच में रुको भी नहीं। ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदत थी कि जब कोई बात फ़रमाते, तो तीन बार फ़रमाते थे, ताकि समझने वाले समझ लें। यह नहीं कि एक बात कही, फिर दूसरी, फिर तीसरी और लगातार बोलते रहे।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलिमात अलाहिदा-अलाहिदा होते थे और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाती थीं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तुम्हारी तरह बात में बात न पिरोते जाते थे, बल्कि इस तरह कलाम फ़रमाते थे कि तमाम कलिमात अलग-अलग होते थे (और) जिसे पास बैठने वाले याद कर लेते थे। —मिश्कात

मगर आज सबसे अच्छा मुक़र्रिर उसी को समझा जाता है, जो कई घंटे लगातार बोलता जाए और ऐसी तक़रीर करे जो बहुत से हाज़िर लोगों की समझ से भी परे हो।

अबूदाऊद की रिवायत में है कि एक शख़्स ने हज़रत अम्र बिन

---

१. मिर्क़ात,

अास रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने लम्बी तक़रीर कर डाली तो हज़रत अम्र रज़ि० ने फ़रमाया, अगर यह ज़्यादा न बोलता तो उसके लिए बेहतर था, क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है कि मुझे कम बोलने का हुक्म दिया गया है, क्योंकि कम बोलना ही बेहतर है।

अबूदाऊद और तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत की गयी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़ुदा यक़ीनन ज़ुबानदराज़ आदमी से बहुत नाराज़ रहता है जो (बोलने में) अपनी ज़ुबान को इस तरह चलाता है जैसे गाय (खाने में अपनी ज़ुबान (दांतों और ज़ुबान के आस-पास) चलाती है।

चूंकि मौजूदा ज़माने के लीडर और वाइज़ों और मुक़र्रिरों की ग़रज़ अमल के रास्ते पर डालना नहीं होती, बल्कि सिर्फ़ यह मक़सद होता है कि लोग हमारी तक़रीर से मज़ा उठाएं और हमारे मोतक़िद बन जाएं, इस लिए वाज़ व तकरीर का असर भी नहीं होता। ऐसे लोगों के हक में सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है—

مَنْ تَعَلَّمَ صَرْفَ الْكَلَامِ قُلُوْبَ الرِّجَالِ النَّاسِ لَمْ يَقْبَلِ اللهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا (مشكوة)

जिसने बात फेरने का तरीक़ा इस लिए सीखा कि लोगों के दिलों को अपने फंदे में फंसाएं, क़ियामत के दिन ख़ुदा न उसकी नफ्ल कुबूल करेगा, न फ़र्ज़।

गुमराह करने वाले लीडर और झूठे नबी पैदा होंगे

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता, ये मेरे साथी (सहाबा किराम) वाक़ई में भूल गये या (उन को याद तो है मगर) ज़ाहिर में भूले हुए-से रहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया ख़त्म होने से पहले-पहले पैदा होने वाले फ़ित्ने के हर लीडर के नाम मय उसके बाप और क़बीले के नाम के बता दिया था, जिस के मानने वाले ३०० या उस से ज़्यादा हों।[1]

हज़रत सौबान की रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत के मुतालिलक़ गुमराह करने वाले लीडरों का डर है।[2]

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत में है कि क़ियामत न होगी, जब तक ३० के क़रीब ऐसे फ़रेबी (और) झूठे न आ जाएं, जिनमें हर एक का दावा होगा कि मैं नबी हूं।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लोग भलाई की बातें पूछा करते थे कि (आइंदा क्या-क्या बेहतरी का ज़माना आने वाला है) और मैं आप से बुराई के बारे में पूछा करता था (कि आगे क्या-क्या मुसीबतों, बलाओं हादसों और आफ़तों का ज़ुहूर होने वाला है) ताकि आने वाली बलाएं मुझे न घेर पाएं। इसी आदत के मुताबिक़ मैंने

---

१. अबूदाऊद, २. तिर्मिज़ी,

एक बार अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! हम जाहिलियत और खराबी में पड़े हुए थे। खुदा ने (उसे दूर फ़रमा कर) हम को यह बेहतरी (यानी इस्लाम की दौलत) इनायत फ़रमायी, तो क्या इस बेहतरी के बाद बुराई का ज़ुहूर होगा ? आपने इर्शाद फ़रमाया कि, हां। मैंने अर्ज़ किया, फिर इस बुराई के बाद भी भलाई होगी ? आपने फ़रमाया, हां, लेकिन इस भलाई में कुछ मैल होगा (यानी वह भलाई साफ़ न होगी, बल्कि इसमें पानी की तरह मिलावट होगी।) मैंने अर्ज़ किया, मैल का क्या मतलब है ? आपने फ़रमाया, ऐसे लोग होंगे, जो मेरे तरीक़े के अलावा दूसरे तरीक़े पर चलेंगे। मेरे ज़िंदगी के तरीक़े के अलावा ज़िंदगी के दूसरे तरीक़ों की राह बताएंगे। इन के फ़ेल तुम अच्छे भी देखोगे और बुरे भी। मैंने अर्ज़ किया, तो क्या इस भलाई के बाद भी बुराई होगी ? इर्शाद फ़रमाया, हां, दोज़ख के दरवाज़े पर खड़े होकर (अपनी तरफ़) बुलाने वाले होंगे (यानी दोज़ख में ले जाने वाले कामों की दावत देंगे।) जो शख्स इन दरवाज़ों की तरफ़ चलने के लिए उनकी दावत क़ुबूल कर लेगा, उसे दोज़ख में फेंक देंगे। मैंने अर्ज़ किया, हमें इनके बारे में (कुछ और) बातें बता दीजिए। इर्शाद फ़रमाया, वह हम ही में से होंगे और हमारी ज़ुबानों वाली बातें करेंगे। मैंने अर्ज़ किया कि अगर मेरी ज़िंदगी में वह वक़्त आ जाए, तो इर्शाद फ़रमाइए, मैं उस वक़्त क्या करूं ? आपने इर्शाद फ़रमाया, मुसलमानों की जमाअत और उन के अमीर से चिमटे रहना। मैंने अर्ज़ किया, अगर मुसलमानों की जमाअत (इस्लामी तरीक़े पर मुनज़्ज़म) न हो और न उनका कोई इमाम हो तो क्या करूं ? इर्शाद फ़रमाया, तो इन सब फ़िर्क़ों से अलग रहना, अगरचे तुझे (आबादी में जगह न मिलने की वजह से) किसी पेड़ की जड़ दांतों से काटनी पड़े और इसी हाल में तुझे मौत आ जाए। (मतलब यह है कि चाहे कैसी ही तंगी और सख्ती बर्दाश्त करनी पड़ जाए, इन फ़िर्क़ों और पार्टियों से अलग रहना हो तेरी

निजात का सामान होगा।[1])

मुस्लिम शरीफ़ की एक दूसरी रिवायत है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के सवाल पर आपने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बाद ऐसे रहबर होंगे, जो मेरी हिदायत को क़ुबूल न करेंगे और मेरे तरीक़े को अख़्तियार न करेंगे और बहुत जल्द उनमें से ऐसे लोग खड़े होंगे, जिन के दिल इंसानी बदन में होते हुए भी शैतान वाले दिल होंगे।

नुबूवत का दावा करने वाले, बातिल के दावेदार और गुमराही के रहबर सदियों से होते चले आये हैं और इस दौर में तो ऐसे लोगों की बहुत ही कसरत है जो इल्हाद वाले और ग़ैर-इस्लामी नज़रियों की दावत देते हैं। इन का आंखें खोल देने वाला बयान और रूह को खुश करने वाली तक़रीरें, क़ुरआन मजीद की आयतों, सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात से भरी होती हैं, मगर इन आयतों और हदीसों से कुफ़्र व इल्हाद के नज़रियों की ताईद की जाती है और ग़ज़ब की बात यह है कि जिन लोगों ने इस्लामी नज़रियों को समझा तक नहीं, वे कुछ आयतें और हदीसें याद कर के दूसरी पार्टियों के नज़रियों को ख़ालिस इस्लामी बनाने की कोशिश करते हैं।

एक तरफ़ गुमराह करने वाले लीडरों ने उम्मत को बर्बाद कर रखा है, दूसरी तरफ़ जाहिल और दुनियादार पीरों ने ईमान और भले अमल खो दिए हैं। पीर को नज़राना देना, क़ब्रों की ज़ियारत करना, उर्सों के जल्वे देखना और पिछले बुज़ुर्गों के इर्शादात और क़िस्सों को याद कर लेना और बयान कर देना ही निजात का सामान समझा जाता है, हालांकि इस्लाम की मोटी-मोटी बातों (रोज़ा, नमाज़ वग़ैरह तक से) पीर भी भागते हैं और मुरीद भी भले कामों के एत-बार से ज़ीरो ही नज़र आते हैं, फिर आयतों और हदीसों की वह

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम,

दिलचस्प और मनसमझी तफ़्सीरें गढ़ रखी हैं, जिनमें से कुछ तो सरासर कुफ़्र हैं। जहां मसनवी मौलाना रूम के कुछ शेर याद हुए, हज़रत जुनैद व शिबली के कुछ इर्शादात का पता चला और ख़्वाजा अजमेरी और उम्मत के दूसरे औलिया की कुछ करामतें मालूम हुईं, बस कामिल व मुकम्मल बन गये।

क़त्ल की अंधेरगर्दी होगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा की क़सम खाकर इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक दुनिया ख़त्म न होगी, जब तक लोगों पर ऐसा दिन न आ जाए कि क़ातिल को यह इल्म भी न होगा कि मैंने क्यों क़त्ल किया और मक़्तूल यह न जानेगा कि मैं क्यों क़त्ल हुआ। किसी ने अर्ज़ किया, ऐसा क्यों होगा? इर्शाद फ़रमाया, फ़ित्नों की वजह से क़त्ल (बहुत ही ज़्यादा होगा,) फिर इर्शाद फ़रमाया (इन फ़ित्नों में) क़त्ल करने वाला और क़त्ल होने वाला दोनों जहन्नम में दाख़िल होंगे।[1]

क़ातिल का दोज़ख़ी होना तो ज़ाहिर है कि उसने ना-हक़ दूसरे का ख़ून किया और मक़्तूल के दोज़ख़ी होने की वजह दूसरी हदीस में यह आयी है कि चूंकि वह भी दूसरे को क़त्ल करने की फ़िक्र में लगा हुआ था, इस लिए वह भी दोज़ख़ी होगा। —बुख़ारी

आजकल जिस क़दर क़त्ल वाक़ेअ हो रहे हैं, आमतौर से उनकी वजह फ़ित्नों के सिवा कुछ नहीं होती। क़ौमी तास्सुब और फ़िर्क़ा परस्ती की वजह से हज़ारों जानें ख़त्म हो जाती हैं और क़ातिल को

---

१. मुस्लिम शरीफ़,

मक़्तूल की ख़बर नहीं होती, न मक़्तूल को क़ातिल का पता चलता है। दूसरे फ़िर्क़े का जो शख़्स हाथ लगा, ख़त्म कर डाला और उस के ख़त्म करने के लिए बस यही दलील काफ़ी है कि वह क़ातिल के फ़िर्क़े में से नहीं है। कुछ इंसानों के नज़रियों की जंग ने लड़ाई के ऐसे-ऐसे हथियार तैयार कर लिए हैं कि शहर के शहर ज़रा देर में फ़ना के घाट उतरते चले जाते हैं। फिर ताज्जुब यह है कि हर फ़रीक़ यह भी कहता है कि हम अम्न चाहते हैं। सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़िर्क़ेवाराना लड़ाई-झगड़ों के बारे में फ़रमाया है—

وَمَنْ قَاتَلَ تَحْتَ رَايَةٍ عِمِّيَّةٍ يَغْضَبُ لِعَصَبِيَّةٍ أَوْ يَدْعُو لِعَصَبِيَّةٍ أَوْ يَنْصُرُ عَصَبِيَّةً فَقُتِلَ فَقِتْلَةٌ جَاهِلِيَّةٌ وَفِي رِوَايَةٍ لَيْسَ مِنَّا مَنْ دَعَا إِلَى عَصَبِيَّةٍ وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ قَاتَلَ عَصَبِيَّةً وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ مَاتَ عَلَى عَصَبِيَّةٍ

(مشکوٰۃ)

जिसने ऐसे झंडे के नीचे जंग की, जिसका हक़ या बातिल होने का इल्म न हो और तास्सुब की ही ख़ातिर गुस्सा होता हो और तास्सुब ही के लिए बुलाता हो, तास्सुब ही की मदद करता हो, तो अगर वह मक़्तूल हुआ तो जाहिलियत की मौत क़त्ल हुआ। दूसरी रिवायत में है कि वह हममें से नहीं, जो अस्बियत (तास्सुब) की दावत दे, और अस्बियत के लिए लड़ाई करे और अस्बियत पर मर जाए।

एक सहाबी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! अस्बियत क्या है? इर्शाद फ़रमाया कि ज़ुल्म पर अपनी क़ौम की मदद करना।[1]

---

१. मिश्कात,

अमानत उठ जाएगी

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें दो बातें बतायी थीं, जिन में से एक देख चुका हूं और दूसरी का इन्तिज़ार है।

एक बात तो आपने हमें यह बतायी थी कि बेशक इंसानों के दिलों की गहराइयों में अमानत उतार दी गयी, फिर उसकी (तफ़्सीलात) को लोग क़ुरआन से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तर्ज़े अमल से सीख गये, (इसको मैं अपनी आंखों से देख चुका हूं।)

दूसरी बात आपने अमानत के उठ जाने के बारे में बतायी और इर्शाद फ़रमाया कि इंसान एक बार सोयेगा, तो उसके दिल से अमानत उठा ली जाएगी और बजाए (असल अमानत के) सिर्फ़ एक नुक़्ता-सा रह जाएगा, फिर दोबारा सोयेगा, तो बाक़ी अमानत भी उठा ली जाएगी और इसका असर नुक़्ते की तरह भी न रहेगा, बल्कि ठेंठ की तरह रह जाएगा, जैसे तुम पांव पर चिंगारी डालो और उसकी वजह से एक आबला (छाला) पड़ जाए जो ऊपर से फूला हुआ दिखायी दे और अन्दर कुछ न हो। फिर इर्शाद फ़रमाया कि लोग आपस में मामले करेंगे तो कोई अमानत अदा करने वाला न मिलेगा और ये तज़्किरे हुआ करेंगे कि फ़्लां क़बीले में फ़्लां शख़्स अमानतदार है (यानी तलाश करने से मुश्किल से कोई अमानतदार मिला करेगा) और इंसान की तारीफ़ में यों कहा जाएगा कि फ़्लां बड़ा अक़्लमंद (चलता-पुर्ज़ा) है और बड़ा ही हंसमुख है और बड़ा ही ताक़तवर है, हालांकि उसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान न होगा।[1]

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम,

यानी तारीफ़ ईमानदारी की नहीं, बल्कि चालबाज़ी की हुआ करेगी।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अमानतदारी का ज़माना अपनी आंखों से देख लिया और अमानत ख़त्म हो जाने का दौर आने से पहले ही दुनिया से रुख़्सत हो गये, मगर हमारी आंखें उस दूसरे ज़माने को देख रही हैं कि अमानत ख़त्म हो गयी है, इंसानों की आम ज़िंदगी का रुख़ इस तरफ़ मुड़ गया कि जहां तक हो सके, दूसरे से ले लो और जिस तरह भी हो, उसका हक़ न दो। अगर कोई अपना हक़ भूल जाए तो बहुत ग़नीमत समझा जाता है और उसे हक़ याद दिलाने और अदा करने की ज़रूरत नहीं समझी जाती। रेल में मसलन, बग़ैर टिकट बैठे चले गये और टिकट चेकर को पता न चला तो हरगिज़ यह न सोचेंगे कि हम ख़ुद हक़ अदा कर दें, बल्कि हक़ दबा लेने पर ख़ुश होंगे कि आज तो हमने मुफ़्त में सफ़र किया और टी. टी. को (गाली देकर) कहेंगे कि धेला भी न दिया। यह भी वाज़ेह रहे कि अमानतदारी का सिर्फ़ माल ही से ताल्लुक़ नहीं, बल्कि हर वह हक़ जो हमारे ज़िम्मे किसी का है, उसकी हक़ तलफ़ी ख़ियानत में शामिल है। मसलन हदीस शरीफ़ में है कि मज्लिसें अमानत के साथ होती हैं, (यानी मज्लिस की बात नक़ल करना अमानतदारी के ख़िलाफ़ है।)

और यह कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई शख़्स बात करे और उसे छिपाने के लिए इधर-उधर देखता हो (कि कोई सुन तो नहीं रहा,) तो वह बात अमानत है और फ़रमाया कि जिससे मश्विरा लिया जाए, वह अमानतदार होता है और फ़रमाया कि यह बड़ी ख़ियानत है कि तुम्हारा भाई तुम्हें सच्चा समझ रहा हो और तुम उससे झूठी बात बयान कर रहे हो और फ़रमाया कि जो शख़्स किसी जमाअत का इमाम बना और

उसने सिर्फ़ अपने लिए दुआ की (और मुक़्तदियों को दुआ में शामिल न किया) तो उसने ख़ियानत की और जिस ने बिला इजाज़त किसी के घर में नज़र डाली तो उसने भी ख़ियानत की।[1]

यानी ये तमाम बातें अमानतदारी के ख़िलाफ़ हैं। हर मुल्क व क़ौम और खानदान में अक़्लमंदी, हंसमुख होना, चालाकी, बहादुरी, जिस्मानी ताक़त, मालदारी, दौलत बटोरना वग़ैरह तो पाया जाता है, मगर सच्चा इल्म, शराफ़त, अख़्लाक़े नबवी, सच्चाई, सख़ावत, रहम, तस्लीम, रिज़ा, सब्र, सुपुर्द कर देना, अल्लाह पर भरोसा करना, क़ुर्बानी, अमानतदारी वग़ैरह-वग़ैरह अच्छी ख़ूबियों का हासिल करना तो दूर की बात, उनका समझना भी बे-ज़रूरत-सा हो गया है।

ऊंचे मकानों पर फ़ख़्र किया जाएगा और नालायक़ हाकिम होंगे

हज़रत उमर और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर एक साहब ने पूछा कि क़ियामत कब आएगी ? आपने इर्शाद फ़रमाया कि मैं और तुम इस मामले में बराबर हैं (यानी उसका जैसे तुम्हें पता नहीं, मुझे भी इल्म नहीं) उन साहब ने अर्ज़ किया, तो उसकी निशानियां ही बता दीजिए। आपने इर्शाद फ़रमाया (उसकी कुछ निशानियां) ये हैं कि औरतें ऐसी लड़कियां जनने लगें जो इन (माओं) पर हुक्म चलाएं और तुम देखोगे कि नंगे पैर और नंगे बदन

---

१. मिश्कात,

वाले तंगदस्त और बकरियां चराने वाले मकानों की ऊंचाई पर फ़ख़्र करेंगे। (यह हज़रत उमर रज़ि० की रिवायत के लफ़्ज़ हैं) और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि आपने फ़रमाया कि जब तुम नंगे पैर और नंगे बदन वालों, गूंगों, बहरों को ज़मीन का बादशाह देखो (उस वक़्त क़ियामत क़रीब होगी।[1])

मकानों की ऊंचाई पर फ़ख़्र करना और ऐसी औलाद का पैदा हो जाना जो मां-बाप पर हुक्म चलाएं, इस दौर में हू-ब-हू मौजूद है। जो दौलतमंद और सरमाएदार हैं, वे तो बड़ी-बड़ी बिल्डिगें बनाते हैं, मगर जिनके पास खाने-पहनने को भी नहीं, वे भी पेट काट-काट कर और क़र्ज़ ले-ले कर अपने घरों की इमारत ऊंची बनाने की फ़िक्र में रहते हैं। जहां इंसान की और खूबियों की तारीफ़ की जाती है, वहां उम्दा मकान, बैठक व बंगले का मालिक होना भी ज़ुबान पर आ जाता है।

नंगे बदन और नंगे पैर वाले बादशाह तो अभी मौजूद नहीं हुए, आगे ज़रूर होंगे, जैसा कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खबर दी है, अल-बत्ता ऐसे हाकिम इस वक़्त भी मौजूद हैं, जिन्हें 'गूंगा' और बहरा कहना बिल्कुल सही है, क्योंकि उनमें न हक़ सुनने की सलाहियत है, न हक़ कहने की क़ाबिलियत है। उनके मुखालिफ़ अख़बार और लीडर उनको हक़ पर लाने की बहुत काफ़ी कोशिश करते हैं, मज़ामीन और आर्टिकिल लिख कर भी झिंझोड़ते हैं, मगर गवर्नर हों या वज़ीर या नीचे के हुक्मारां हों, अपने टेढ़े रवैए को छोड़ने के लिए ज़रा टस से मस नहीं होते। उनके बोलने की हालत यह है कि तक़रीरों और बयानों में इतने साफ़ और खुले झूठ बोल जाते हैं कि अख़बार उनके आगे झूठ की दाद देते-देते थक जाते हैं और अवाम के दिलों से अपने हुक्मरानों की बात का एतमाद उठता

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम.

चला जाता है।

फिर ना-अह्ल इस क़दर हैं कि जो मुहकमा उनके सुपुर्द किया जाता है, वज़ीर व गवर्नर है और हज़ारों रुपए की तंख्वाह बटोरने के शौक़ में उसे क़ुबूल तो कर लेते हैं, मगर मुहकमे की ज़िम्मेदारियों को पूरी तरह अंजाम देने से क़ासिर रहते हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर होकर एक देहाती ने सवाल किया कि क़ियामत कब आएगी? आपने इर्शाद फ़रमाया, जब अमानतदारी जाती रहेगी तो क़ियामत का इन्तिज़ार करना। साइल ने दोबारा दर्याफ़्त किया कि अमानतदारी कैसे ज़ाया होगी? इर्शाद फ़रमाया, जब ओह्दे ना-अह्लों के सुपुर्द कर दिए जाएं। (जैसे सदारत, क़ियादत, हुकूमत, वज़ारत, तद्रीस, इमामत, ख़िताबत, इफ़्ता वग़ैरह) तो क़ियामत का इन्तिज़ार करना (यानी जब ऐसा होगा तो अमानतदारी भी ज़ाया कर दी जाएगी।) इस इर्शाद से मालूम हुआ कि नालायक़ हुक्मरानों के अलावा दूसरे ओह्दों पर फ़ाइज़ होने वाले भी ना-अह्ल होंगे, चुनांचे आजकल मौजूद हैं। मुल्हिद, फ़ासिक़, बख़ील, बद-कार और बद-अख़्लाक़ लोग बड़े-बड़े ओह्दों पर फ़ाइज़ हैं। पार्लियामेंट के मेम्बर इस क़दर ना-अह्ल हैं कि मामूली-मामूली बातों पर बहस करते-करते हफ़्तों गुज़र जाते हैं और किसी अच्छे नतीजे पर नहीं पहुंचते। जो लोग मुअज़्ज़ज़ और अह्ले अक़्ल समझे जाते हैं, दौलत व सरवत की वजह से उन्हें बड़ा आदमी कहा जाता है, उनके अफ़आल व किरदार बसा औक़ात अख़बारात में शाया होते हैं, तो पता चलता है कि इस दौर के बड़ों की बद-किरदारी किस दर्जा बढ़ी हुई है और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे गरामी—

لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى يَكُوْنَ

उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी, जब तक दुनिया का सबसे ज्यादा

اَسْعَدُ النَّاسِ بِالدُّنْيَا لُكَعُ
ابْنُ لُكَعٍ (ترمذی)

हिस्सा ऐसे शख़्स को न मिल जाए, जो ख़ुद भी कमीना होगा और उसका बाप भी कमीना होगा।

जल्द ही दुनिया पर सच्चा साबित होने वाला है। इस वक़्त इंसानों में बुलंद अख़्लाक़ वाले इंसान बहुत ही कम हैं और वह वक़्त मौजूद है, जिसका बुख़ारी शरीफ़ में ज़िक्र है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

يَذْهَبُ الصَّالِحُوْنَ الْأَوَّلُ
فَالْأَوَّلُ وَيَبْقٰى حُفَالَةٌ كَحُفَالَةِ
الشَّعِيْرِ وَالتَّمْرِ لَا يُبَالِيْهِمُ
اللّٰهُ بَالَةً

लोग एक-एक करके ख़त्म होते जाएंगे और बेकार लोग रह जाएंगे जैसे रद्दी जौ या खजूर का कूड़ा रह जाता है। ख़ुदा इनको ज़रा परवाह न करेगा।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक कियामत क़ायम न होगी तक तुम अपने इमाम (बादशाह) को क़त्ल न कर दो और तलवार लेकर आपस में न लड़ो और दुनिया के वारिस शरीर लोग न बन जाएं।

लाल आंधी और ज़लज़ले आएंगे, शक्लें बिगड़ जाएंगी और आसमान से पत्थर बरसेंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब

ग़नीमत के माल को (घर की) दौलत समझा जाने लगे और अमानत ग़नीमत समझ कर दबा ली जाया करे और ज़कात को जुर्माना समझा जाने लगे और (दीनी) तालीम दुनिया के लिए हासिल की जाए और इंसान अपनी बीवी की इताअत करने लगे और मां को सताए और दोस्त को क़रीब करे और बाप को दूर करे, मस्जिदों में (दुनिया की बातों का) शोर होने लगे, क़बीले (ख़ानदान) के सरदार बद-दीन लोग बन जाएं, कमीने क़ौम के ज़िम्मेदार हो जाएं, इंसान की इज़्ज़त इस लिए की जाए ताकि वह शरारत न फैलावे, (यानी डर की वजह से) गाने-बजाने वाली औरतें और गाने-बजाने के सामान की ज़्यादती हो जाए, शराबें पी जाने लगें और बाद में आने वाले लोग उम्मत के पिछले नेक लोगों पर लानत करने लगें, तो उस ज़माने में लाल आंधी और ज़लज़लों का इन्तिज़ार करो, ज़मीन में धंस जाने और शक्लें बिगड़ जाने और आसमान से पत्थर बरसने के भी इन्तिज़ार में रहो और इन अज़ाबों के साथ दूसरी उन निशानियों का भी इन्तिज़ार करो, जो लगातार इस तरह ज़ाहिर होंगी, जैसे किसी लड़ी का धागा टूट जाए और लगातार दाने गिरने लगें ।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी यह रिवायत है और इसमें इसका भी ज़िक्र किया गया है कि (मर्द) रेशमी लिबास पहनने लगेंगे।

इस हदीस में जिन बातों की ख़बर दी गयी है, वह इस वक़्त मौजूद हो चुकी है और इनके कुछ नतीजे (यानी ज़लज़ले वग़ैरह भी) जगह-जगह ज़ाहिर हो रहे हैं। अगर उम्मत के कारनामों पर एक सरसरी नज़र डाली जाए और फिर इन अज़ाबों पर ग़ौर किया जाए, जो ज़लज़लों वग़ैरह की सूरत में सामने आ रहे हैं, तो इस हक़ीक़त का पूरा-पूरा यक़ीन हो जाएगा कि जो कुछ मसाइब व

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

आफ़ात आज हम देख रहे हैं, वह हमारी ही करतूतों का नतीजा और बदकारियों का बदला है। इस हदीस की असल इबारत के अलाहिदा-अलाहिदा हिस्सों की कुछ और तशरीह करता हूं। 'इत्तख़ज़ल ग़िना दूलन' (जब ग़नीमत का माल घर की दौलत समझा जाने लगे,) इस की शरह करते हुए साहिबे लम्आत लिखते हैं—

وَالْمُرَادُ فِي الْحَدِيْثِ اَنَّ الْاَغْنِيَاءَ وَاَصْحَابَ الْمَنَاصِبِ يَتَدَاوَلُوْنَ اَمْوَالَ الْغِنٰى وَيَمْنَعُوْنَهَا مِنْ مُسْتَحِقِّيْهَا وَيَسْتَاثِرُوْنَ بِحُقُوْقِ الْفُقَرَاءِ

इस जुम्ले का मतलब यह है कि सरमाएदार और ओहदेदार ग़नीमत के माल को (जो आम मुसलमानों और फ़क़ीरों और मिस्कीनों का हक़ होता है) आपस में बांट खाएं और हक़दारों को देने के बजाए फ़क़ीरों का हक़ ख़ुद ही दबा बैठें।

साहिबे लम्आत का आख़िरी जुम्ला यानी 'व यस्तासिरु-न बिहुकूक़िलफ़ुक़राइ' (कि मालदार फ़क़ीरों का हक़ ख़ुद ही दबा बैठें) इस तरफ़ इशारा कर रहा है कि हदीस शरीफ़ में ग़नीमत का माल मिसाल के तौर पर ज़िक्र फ़रमाया है। मतलब सिर्फ़ यह है कि दुनिया के असरदार और सरमायादार लोग फ़क़ीरों के हक़ को ख़ुद ही हज़म करने लगेंगे, जैसा कि आज हम औक़ाफ़ के बारे में अपनी आंखों से देख रहे हैं, मस्जिदों के मुतवल्ली और मदरसों के मुहतमिम और दूसरे औक़ाफ़ का इन्तिज़ाम चलाने वाले हक़दारों को महरूम रखते हैं और रजिस्टर में ग़लत हिसाब लिख कर रक़म ख़ुद ही दबा लेते हैं और अब तो यह रिवाज बहुत ही चल पड़ा है कि सिर्फ़ अपनी ज़ाती और दुनियावी ग़रज़ के लिए मदरसे खोले जाते हैं और क़ुरआन व हदीस की ख़िद्मत के नाम पर चन्दा जमा करके ऐशपरस्ती की जाती है। यह कोई फ़र्ज़ी अफ़साना नहीं, बल्कि एक ऐसी हक़ीक़त है कि जिस को शायद ही कोई शख़्स न जानता हो।

'व अमानतु मग़नमन' (और अमानत ग़नीमत समझ कर दबा ली जाया करे) यानी जब कोई शख़्स अमानत का माल रख दे, तो उसमें ख़ियानत करने में ज़रा भी झिझक न हो और उसे बिल्कुल इस तरह ख़र्च किया जाये, जैसे बिल्कुल अपना ही माल हो और जिहाद के मैदान से ग़नीमत के तौर पर मिला हो या यह बाप-दादा की मीरास से हाथ लगा हो।

'वज्ज़कातु मग़रमन' (और ज़कात को जुर्माना समझा जाने लगे) यानी ज़कात देना नफ़्स पर ऐसा बोझ और ना-गवार होगा, जैसे ख़ामख़ाह किसी चीज़ का जुर्माना देना पड़ जाए और बग़ैर किसी ज़रूरत के माल ख़र्च करना पड़े। हमारे ज़माने में ज़कात के बारे में यही हो रहा है कि सरमाएदारों में ज़कात देने वाले बहुत ही कम हैं और देने वालों में भी ख़ुशदिली से अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले तो बहुत ही कम हैं।

दूसरी हदीसों में आपने ज़कात न देने के ख़ास-ख़ास बुरे नतीजों का भी ज़िक्र फ़रमाया है। जैसे इब्ने माजा की एक रिवायत में है कि जो लोग अपने मालों की ज़कात रोक लेंगे, उनसे बारिश रोक ली जाएगी, (यहां तक कि) अगर चौपाए (गाय-भैंस वग़ैरह) न हों, तो बिल्कुल बारिश न हो, यानी ज़कात न देने पर भी जो थोड़ी-बहुत बारिश हो जाती है, वह इंसानों के लिए नहीं, बल्कि ख़ुदावंदे आलम हैवानात के लिए बारिश बरसाते हैं और इनके तुफ़ैल में इन्सानों का भी फ़ायदा हो जाता है। बड़े शर्म की बात है कि इंसान ख़ुद इस लायक़ न रहे कि अल्लाह जल्ल शानुहू उन पर रहम फ़रमाये, बल्कि चौपायों के तुफ़ैल में उन्हें पानी मिले।

व तअ़ल्लमु लिग़ैरिद्दीन' और 'दीनी तालीम ग़ैर दीनी (यानी दुनिया) के लिए हासिल की जाए। आजकल उलेमा और हाफ़िज़ों का यही हाल है कि दुनियावी जाह व हश्मत, दौलत व सरवत, मुलाज़मत, इक्तिदार की ख़ातिर पढ़ते हैं, चन्द कौड़ियां मिलने लगें,

तो वाज़ भी फ़रमा दें और क़ुरआन भी सिखावें, तज्वीद की मश्क़ भी करावें, इमामत भी कर लें, इसकी ज़िम्मेदारी को महसूस करते हुए पांचों वक़्त मुसल्ले पर नज़र भी आएं और अगर मुलाज़मत बाक़ी न रहे, तो अल्लाह के लिए एक घंटा भी क़ुरआन व हदीस का दर्स देने को तैयार न हों और इमामत जाती रहे तो जमाअत तो क्या, पूरा वक़्त गुज़र जाए, मगर नमाज़ ही न पढ़ें—

وَأَطَاعَ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ وَعَقَّ أُمَّهُ

(और इंसान बीवी की इताअत करे और मां को सताए)

यानी बीवी की हर जायज़ व ना-जायज़ ख्वाहिश पूरी करे और मां की ख़िद्मत के बजाए उसे तक्लीफ़ पहुंचाए, उसके आराम व राहत का ख्याल न करे, उसका कहना न माने, मौजूदा दौर में ऐसा ही हो रहा है।

وَأَدْنَى صَدِيقَهُ وَأَقْصَى أَبَاهُ

(और अपने दोस्त को क़रीब करे और बाप को दूर करे)

यानी दोस्त की क़द्र व इज़्ज़त तो दिल में हो, मगर बाप की ख़िदमत और दिलदारी का ख्याल न हो। बाप की बात पर दोस्त की बातें सही समझी जाएं।

हज़रत अली रज़ि० की रिवायत के लफ़्ज़ ये हैं—

وَبَرَّ صَدِيقَهُ وَجَفَا أَبَاهُ

(कि दोस्त के साथ सुलूक करे और बाप पर ज़ुल्म करे)

जैसा कि आज हम अपनी आंखों से ऐसे वाक़िआत देख रहे हैं कि लोग मां-बाप की ख़िदमत से बहुत ही ग़ाफ़िल हैं, हालांकि हदीसों में रोज़ी और उम्र बढ़ने के लिए रिश्तेदारों के साथ सुलूक करने को इर्शाद फ़रमाया गया है।

बैहक़ी की एक रिवायत में है कि अल्लाह जिस गुमराह को

चाहते हैं, माफ़ फ़रमा देते हैं, लेकिन मां-बाप के सताने की सज़ा मरने से पहले दुनिया में ही दे देते हैं।

وظهرت الاصوات فى المساجد

(और मस्जिदों में शोर होने लगे)

यानी मस्जिदों का अदब व एहतराम दिल से जाता रहेगा और शोर-व शग़ब, चीख-पुकार से गूंज उठा करेगी, आमतौर से आजकल मस्जिदों के साथ मुसलमानों का यही बर्ताव है--

وساد القبيلة فاسقهم وكان زعيم القوم ارذلهم

(बद-दीन, खानदान के सरदार और कमीने क़ौम के ज़िम्मेदार बन जाएं)

बिल्कुल यही आजकल हो रहा है कि दीनदार और मुत्तक़ी इंसान को खानदान की बाग-डोर नहीं सौंपी जाती, बल्कि बद-दीन लोग खानदान के सरदार और बड़े समझे जाते हैं। जब कोई जमाअत या पार्टी बने तो उसके अग़राज़ व मक़ासिद महज़ दीनी और इस्लामी बनाये जाते हों और नाम भी खालिस मजहबी हो, मगर उसका सदर व सिक्रेट्री ऐसे शख्स को चुना जाता है, जिसमें दीनदारी और परहेज़-गारी, खुदा तरसी, रहम, ज़ुह्द, दियानत-अमानत वग़ैरह आला खूबियां नाम को भी न हों।

وَاُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّهٖ

(और इंसान की इज़्ज़त इस लिए की जाए कि वह शरारत न फैलाए)

यानी अदब व एहतराम, ताज़ीम व इक्राम दिल में तो न हो, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर इस लिए ताज़ीम से पेश आने का रिवाज हो जाए कि अगर फलां शख्स को 'आदाब अर्ज़' न करें तो कोई शरारत फैला देगा और अपने इक्तिदार और रुपए-पैसे के घमंड में न जाने

किस वक़्त कौन-सी मुसीबत खड़ी कर दे, इस वक़्त हू-ब-हू ऐसा ही हो रहा है कि जिनकी सामने इज़्ज़त की जाती है, पीछे उन पर गालियों की बौछार की जाती है, शरीरों के हाथ में इक्तिदार आने और माल व दौलत उनके पास होने और अवाम के इस क़दर गिर जाने की वजह से कि किसी इक्तदार वाले शख़्स को शरीर समझते हुए भी बजाए बुराइयों से रोकने और उसके सामने हक़ कहने के, इज़्ज़त से पेश आने लगीं। यह 'उक्रिमर्रजुलु मख़ा-फ़-त शर्रिही' की पेशीनगोई सच्ची साबित होती है।

وَظَهَرَتِ الْقَيْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ

(गाने-बजाने वाली औरतें और गाने-बजाने के सामान चालू हो जाएं) जैसा कि आजकल हम देख रहे हैं कि जहां कुछ पैसे पास हो जाते हैं या माक़ूल मुलाज़मत मिल जाती है, तो सबसे पहले लह्व व लअिब और गाने-बजाने का सामान ख़रीदना ही ज़रूरी समझा जाता है। घर में ग्रामोफ़ोन का होना तरक़्क़ी का मेयार और ख़ुश-हाली की निशानी बन चुका है। ग्रामोफ़ोन बज रहा है और सब छोटे-बड़े मिल कर इश्क़िया ग़ज़लें, फ़ह्श गाने, गंदा मज़ाक़ सुनते हैं, ब्याह-शादी और दूसरी तक़रीबों में बाजे और गाने का इन्तिज़ाम न हो, तो इस तक़रीब को बद-मज़ा और फीका समझा जाता है, बुज़ुर्गों के मज़ारों पर उर्स के नाम से इज्तिमाअ होता है और गाने-बजाने का सामान मुहय्या करके तफ़रीह उड़ायी जाती है, तवाइफ़ के नाच-गाने में मश्ग़ूल होकर नमाज़ की भी फ़ुर्सत नहीं होती, जिन बुज़ुर्गों की ज़िंदगी शरीअत के ख़िलाफ़ की चीज़ों को मिटाने के लिए वक़्फ़ थी, उनके मज़ारात खेल-तमाशों, नाच और गानों के अड्डे बने हुए हैं, रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि गाना दिल में निफ़ाक़ पैदा करता है, जैसे पानी खेती उगाता है। —बैहक़ी

फ़रमाया नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे रब

ने मुझे तमाम जहानों के लिए रहमत और हादी बना कर भेजा है और मुझे हुक्म दिया है कि गाने-बजाने का सामान और बुत और स्लीब (जिसे ईसाई पूजते हैं) और जाहिलियत की चीज़ों को मिटा दूं।

—अहमद

आज कल गाना-बजाना ज़िदगी का अहम जुज़्व बना हुआ है और घरेलू ज़िदगी का मेयार भी इस क़दर बदल गया है कि शौहर व बीवी के इन्तिख़ाब के लिए दीनदार और ख़ुदा तरस होना नहीं देखा जाता, बल्कि मर्द नाज़नीन रक़्क़ासा और बीवी को हीरो दरकार होता है। माल व ज़र के लोभ में शरीफ़ ज़ादियां खानदानी इज़्ज़त को ख़ाक में मिला कर स्टेज पर आ रही हैं। कम्पनी के एजेंट और दलाल बहला-फुसला कर उन्हें तबाह व बर्बाद करते हैं। एक ऐक्ट्रेस अपना हुस्न बेचने के जुनून में हर वह हरकत कर गुज़रती है, जो न करनी चाहिए थी। जब पोस्टरों और अख़बारों में उनका तआरुफ़ कराया जाता है और उस के नाच की तारीख़ की जाती है। तो उसका दिल और बढ़ता है और बे-हयाई के और ज्यादा दर्जे तै करती चली जाती है। ज़माने की ज़रूरत को देख कर अब तो कुछ स्कूलों में भी नाच की बा-क़ायदा तालीम जारी हो गई है।

रेडियो घर-घर अच्छी बातें और उम्दा अख़्लाक़ की तालीमात पहुंचाने का बेहतरीन ज़रिया है, मगर इसमें भी अच्छी तक़रीरें कभी-कभी हो जाती हैं और गाने हर वक़्त होते रहते हैं। अफ़सोस, कि इस दौर के ज़िम्मेदार इन्सान भी इस्लाही प्रोग्राम को लेकर आगे नहीं बढ़ते और ताज्जुब की बात यह है कि (जो इस्लामी स्टेट) कहलाती हैं, वहां भी गाने-बजाने, लह्व व लअिब के आलात, थिएटर-सिनेमा पर कोई पाबन्दी नहीं है।

जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'व ज-ह-रतिल क़ीनातु वल मआरिफ़ु' का जुम्ला इर्शाद फ़रमाया होगा, इसका वह तफ़सीली नक़्शा हज़राते सहाबा रज़ि० के सामने न आया होगा, जो

ग्राज हम देख रहे हैं। क़ुर्बान जाइए उस हादी व रहनुमा के, जिसने साढ़े तेरह सौ वर्ष पहले इन्सानों की मौजूदा खराबियों से बा-ख़बर फ़रमाया था।

'व शुरिबतिल खुमूर' (ग्रौर शराबें पी जाने लगेंगी) इसकी तश्रीह की ज़रूरत नहीं। सब जानते हैं कि ग्रामतौर से शराब पी जाती है, यहां तक कि इस्लामी मुल्कों में भी इसका उसी तरह रिवाज है, जिस तरह ग़ैर-इस्लामी मुल्कों में है, बल्कि इससे भी ज़्यादा।

'व ल-ग्र-न ग्राख़िरु हाज़िहिल उम्मति ग्रव्व-ल-हा' (ग्रौर बाद में ग्राने वाले लोग उम्मत के पिछले (नेक) लोगों पर लानत करने लगें।)

यह पेशीनगोई......भी इस वक़्त के मुसलमानों पर सच साबित हो रही है, यहां तक कि हज़राते सहाबा रज़ियल्लाहु ग्रन्हुम भी मौजूदा दौर के मुसलमान कहलाने वालों के निशानों से बचे नहीं।

नमाज़ पढ़ाने से बचा जाएगा

हज़रत सुलामा रज़ियल्लाहु ग्रन्हा फ़रमाती हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु ग्रलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीनन क़ियामत की निशानियों में से एक यह निशानी भी है कि मस्जिद वाले (इमामत के लिए) एक-दूसरे को ढकेलेंगे (ग्रौर) कोई इमाम न पाएंगे, जो उन्हें नमाज़ पढ़ाए। —मिश्कात

मतलब यह है कि क़ियामत के क़रीब ऐसा ज़माना ग्राएगा कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए नमाज़ी जमा होंगे ग्रौर इमामत के लिए हाज़िर लोगों में से कोई भी तैयार न होगा। जिससे भी नमाज़ पढ़ाने के लिए दर्ख्वास्त की जाए, वह कहेगा कि मैं तो इस लायक़ नहीं हूं, फ़्लां साहब पढ़ाएंगे, यहां तक कि कोई भी इमाम न बनेगा

और बे-जमाअत पढ़ कर चल देंगे।

अल्लामा तीबी और साहिबे मिर्क़ात लिखते हैं कि इसकी वजह यह होगी कि उनमें कोई भी इस लायक़ न होगा, जो नमाज़ के सही और ख़राब होने के मस्अलों को जानता हो, इन लोगों ने जो वजह बतायी है, बिल्कुल दुरुस्त है और आजकल अक्सर देहात में ऐसा होता है कि सिर्फ़ इस लिए बे-जमाअत नमाज़ पढ़ लेते हैं कि इनमें कोई मसाइल जानने वाला नहीं होता। लेकिन बंदे के नज़दीक आज-कल नमाज़ पढ़ाने से इंकार करने की एक और भी वजह है और वह यह कि कुछ जगहों पर पढ़े-लिखे और मस्अलों के जानकार भी मौजूद होते हैं, मगर उनमें ख़ाकसारी का जोश होता है और जितना ही उनसे नमाज़ पढ़ाने के लिए कहा जाता है, उतनी ही ख़ाकसारी में इन्कार करते जाते हैं और कुछ लोग तो नमाज़ पढ़ाने की मजबूरी यह बताते हैं कि मुक़्तदियों की ज़िम्मेदारी बहुत है, हम इसे बर्दाशत नहीं कर सकते। अगर शरीअत के नज़दीक यह कोई मजबूरी होती तो शुरू इस्लाम से आज तक बुज़ुर्ग हज़रात नमाज़ पढ़ाने से बचते रहते और जमाअत का सिलसिला ख़त्म ही हो जाता, क्योंकि वे हज़रात इस ज़माने के लोगों से बहुत ज़्यादा आख़िरत के फ़िक्रमंद और ख़ुदा से डरने वाले थे। शरीअत ने नमाज़ के सही और ख़राब होने के जो हुक्म दिये हैं, उनको ख़्याल करते हुए नमाज़ पढ़ा देते थे। आगे क़ुबूल करना और न क़ुबूल करना अल्लाह के हाथ में है, हम पर इसकी ज़िम्मेदारी है कि अर्क़ान व शर्तों का पूरा-पूरा ध्यान कर लें।

नंगी औरतें मर्दों को अपनी तरफ़ मायल करेंगी

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले

खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़खियों के दो गिरोह पैदा होने वाले है, जिन्हें मैंने नहीं देखा (क्योंकि वे अभी पैदा नहीं हुए,) फिर उसकी तश्रीह करते हुए फ़रमाया कि एक गिरोह तो ऐसा पैदा होगा, जो बैलों की दुमों की तरह (लम्बे-लम्बे) कोड़े लिए फिरेंगे और उनसे लोगों को मारा करेंगे, सुबह-शाम अल्लाह के गुस्से और नाराज़ी व लानत में फिरा करेंगे। दूसरा गिरोह ऐसी औरतों का पैदा होगा, जो कपड़ा पहने हुए भी नंगी ही होंगी, (ग़ैर-मर्दों को) अपनी तरफ़ मायल करेंगी और खुद भी (उन की तरफ़ मायल होंगी)। उनके सर ऊंटों की झुकी हुई पुश्तों की तरह होंगे, न जन्नत में दाखिल होंगी, न जन्नत की खुश्बू सूंघेंगी, हालांकि बेशक उसकी खुश्बू इतनी-इतनी दूर[1] से आती है।[2]

इस हदीस में दो पेशीनगोइयां ज़िक्र की गयी हैं—

१. एक ज़ालिम गिरोह के बारे में है कि कुछ लोग कोड़े लिए फिरेंगे और लोगों को उनसे पीटा करेंगे, यानी इक्तिदार के नशे में कमज़ोरों और बेकसों पर ज़ुल्म करेंगे और बे-वजह, खामखाह आम पब्लिक को सताएंगे।

२. दूसरी पेशीनगोई औरतों के हक़ में इर्शाद फ़रमायी है कि आने वाले ज़माने में ऐसी औरतें मौजूद होंगी, जो कपड़े पहने हुए होंगी लेकिन फिर भी नंगी होंगी यानी इतने बारीक कपड़े पहनेंगी कि उनके पहनने से जिस्म छिपाने का फ़ायदा हासिल न होगा या कपड़ा बारीक तो न होगा मगर चुस्त होने और बदन की बनावट पर कस जाने की वजह से उसका पहनना और न पहनना बराबर होगा और आजकल तो चुस्त होने के साथ बदन का एक-रंग जैसा होना भी फ़ैशन में दाखिल हो गया है। चुनांचे गेंहुएं रंग के ऐसे मोज़े कपड़ों में दाखिल हो चुके हैं, जिनका पैर से ऊपर का हिस्सा पिंडुली

---

१. यानी बर्षों की दूरी से, २. मुस्लिम शरीफ़,

पर खाल की तरह चिपका हुआ होता है।

बदन पर कपड़ा होने और इसके बाद भी नंगा होने की एक शक्ल यह भी है कि बदन पर सिर्फ़ थोड़ा-सा कपड़ा हो और बदन का बड़ा हिस्सा और खास तौर से वे अंग खुले रहें, जिनको हयादार औरतें ग़ैर-मर्दों से छिपाती हैं, जैसा कि यूरोप और एशिया के कुछ शहरों, (जैसे बम्बई, रंगून, सिंगापुर वग़ैरह) में ऐसा कपड़ा पहनने का रिवाज है कि सिर्फ़ घुटनों तक क़मीज़ होती है, आस्तीनें मूंढे से सिर्फ़ दो-चार इन्च ही बढ़ी हुई होती हैं। पिंडुलिया बिल्कुल नंगी होती हैं और सर भी दोपट्टा से ख़ाली होता है।

फिर फ़रमाया कि ये औरतें ग़ैर-मर्दों को अपनी तरफ़ मायल करेंगी और खुद उनकी तरफ़ मायल होंगी, यानी नंगा होने का रिवाज ग़रीबी की वजह से न होगा, बल्कि उनकी नीयत मर्दों को बदन दिखाना और उनका दिल लुभाना मक़्सूद होगा और लुभाने का दूसरा तरीक़ा यह अख्तियार करेंगी कि अपने सरों को (जो दोपट्टों से खाली होंगे) मटका कर चलेंगी, जिस तरह ऊंटकी पुश्त का ऊपरी हिस्सा तेज़ रफ़्तारी के वक़्त ज़मीन की ओर झुका करता है। ऊंट की पुश्त (पीठ) जैसा कहने से यह भी बताया कि बाल फुला-फुला कर अपने सरों को मोटा करेंगी, फिर फ़रमाया कि ऐसी औरतें जन्नत में दाख़िल न होंगी, बल्कि उसकी ख़ुश्बू तक न सूंघ सकेंगी।

इस्लामी शरीअत मे ज़िनाकारी से भी रोका है और ऐसी चीज़ों से भी रोका है, जो ज़िना की तरफ़ बुलाने वाली हैं, यहां तक कि इसको भी ज़िना फ़रमाया है कि कोई औरत तेज़ ख़ुश्बू लगा कर मर्दों पर इस लिए गुज़रे कि मर्द उसकी ख़ुश्बू सूंघ लें। —तर्ग़ीब

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि दुनिया के हादी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आंखों का ज़िना देखना है और कानों का ज़िना सुनना है और ज़ुबान का ज़िना बोलना है और हाथों का ज़िना पकड़ना है और पैरों का ज़िना चल कर जाना है।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि औरत छिपी हुई चीज़ है, जब बाहर निकलती है, तो उसे शैतान तकने लगता है —मिश्कात

बैहक़ी की एक रिवायत में है कि जो ना-महरम पर नज़र डाले और जो अपने ऊपर ना-महरम को नज़र पड़ने की ख़्वाहिश और तमन्ना करे, उस पर ख़ुदा की लानत है।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मुसलमान (बिला अख़्तियार व इरादा) एक बार किसी औरत का हुस्न देख ले (यानी अचानक बग़ैर इरादे) के उसकी नज़र पड़ जाए और फिर उस नज़र को बाक़ी न रखे, बल्कि अपनी आंख बन्द कर ले, तो ख़ुदावंद (उसके बदले) उसे ऐसी इबादत नसीब फ़रमायेगा, जिसकी मिठास महसूस करेगा। —अहमद

ज़ाहिर में दोस्ती और दिल में दुश्मनी रखने वाले पैदा होंगे

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आख़िर ज़माने में ऐसे लोग आएंगे जो ज़ाहिर में भाई होंगे और बातिन में दुश्मन होंगे। अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ऐसा कैसे होगा? इर्शाद फ़रमाया कि कुछ को कुछ से लालच होगा और कुछ को कुछ से डर, इस लिए ज़ाहिर में दोस्त और छिपे में दुश्मन होंगे।

आजकल यह मर्ज़ बहुत आम हो गया है कि किसी के सामने तो दोस्ताना ताल्लुक़ात ज़ाहिर करते हैं और पीठ पीछे दुश्मनों की तरह बुराई करते हैं और इसकी वजह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद के मुताबिक़ यही है कि अपनी किसी ग़रज़ और ज़रूरत पूरी होने के लालच में दोस्ती और ताल्लुक़ात ज़ाहिर करते हैं और ज़ुबानी तारीफ़ों के पुल बांध देते हैं, हालांकि दिल में उसी शख़्स से नफ़रत और दुश्मनी ही होती है।

इस गन्दी हरकत की दूसरी वजह यह बतायी कि दूसरे डर यानी उसके इक़्तिदार और ताक़त को वजह से ख़ूब तारीफ़ करेंगे हालांकि दिल उसकी बुराइयों से भरा होगा और सीने में दुश्मनी की आग भड़क रही होगी।

हमारे ज़माने में मुख़ालिफ़ पार्टियों के लीडरों के हक़ में यही तरीक़ा अपना लिया गया है कि दिल में तो उनकी तरफ़ से ख़ूब कूट-कूट कर दुश्मनी भरी रहती है और जब उनमें से कोई मर जाता है, तो उसकी तारीफ़ करना ज़रूरी समझते हैं।

दिखावटी इबादत करने वाले और कच्चे रोज़ेदार होंगे

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक बार रोने लगे। पूछा गया कि आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक इर्शाद याद आ गया है, जिसे मैंने ख़ुद सुना है। उसने मुझे रुला दिया। वह इर्शाद यह है कि आपने फ़रमाया—

मुझे अपनी उम्मत के मुताल्लिक़ सबसे ज़्यादा शिर्क और छिपी

हुई शहवत का डर है।

मैंने (ताज्जुब से) अर्ज़ किया, क्या आपके बाद आपकी उम्मत शिर्क करने लगेगी ? इर्शाद फ़रमाया, खबरदार ! वह (किसी) सूरज व चांद और पत्थर व बुत को न पूजेंगे, बल्कि (उनका शिर्क यह होगा कि) अपने आमाल का दिखावा करेंगे और छिपी हुई शहवत यह होगी कि उनमें से एक शख्स रोज़ा की नीयत करेगा और फिर नफ़्स की ख्वाहिशों में से किसी नफ़्स की ख्वाहिश के पेश आ जाने की वजह से रोज़ा छोड़ देगा। —अहमद व बैहक़ी

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम (कुछ सहाबा रज़ि० बैठे हुए) दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे कि इसी बीच आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी तशरीफ़ ले आये और इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें वह चीज़ न बता दूं, जो मेरे नज़दीक तुम्हारे हक़ में दज्जाल से भी ज़्यादा खतरे की चीज़ है। हमने अर्ज़ किया, जी, इर्शाद फ़रमाएं। आपने फ़रमाया कि वह शिर्क खफ़ी (छिपा शिर्क) है, (जिसकी मिसाल यह है) कि इंसान नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो और किसी आदमी के देखने की वजह से नमाज़ को बढ़ा दे। —मिश्कात

हज़रत महमूद बिन लुबैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा शिर्के असग़र (छोटे-छोटे शिर्क) का खतरा है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि शिर्के असग़र क्या है। इर्शाद फ़रमाया, दिखावा। —अहमद

दिखावा करने वाले आजकल बहुत ज़्यादा मौजूद हैं, जो आपके इर्शाद के मुताबिक़ शिर्क असग़र में पड़े हुए हैं। अआज़नल्लाहु मिन्हु। इस पर ना-चीज़ की एक किताब 'इख्लासे नीयत' छप चुकी है, जिसमें इख्लास, सच्चाई और दिखावे की तफ़्सील लिखी हुई है। इसके अलावा मौजूदा दौर के दिखावे वालों का हाल, दिखावे की

बुराई, दिखावा करने वालों की सज़ा वग़ैरह पर तफ़्सील से बहस की है।

ज़ालिम को ज़ालिम कहना, नेकियों की राह बताना, और बुराइयों से रोकना छूट जाएगा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मुझ से) फ़रमाया कि जब तू मेरी उम्मत को इस हाल में देखेगा कि ज़ालिम को ज़ालिम कहने से डरने लगें, तो उनसे रुख़्सत हो जाना। (यानी उनकी मज्लिसों और महफ़िलों में शिर्कत न करना।) —हाकिम

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि 'ला इला-ह इल्लल्लाह' अपने पढ़ने वालों को उस वक्त तक नफ़ा देता रहेगा और उनसे अज़ाब व बला को दूर करता रहेगा, जब तक उसके हक़ से ला-परवाही न बरतें। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, उसके हक़ से ला-परवाही करने का क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया कि उसके हक़ की ला-परवाही यह है कि अल्लाह की ना-फ़रमानियां खुले तौर पर होने लगें और उनसे रोका न जाए और उन्हें बन्द न किया जाए। —तर्ग़ीब

'तफ़्सीर दुर्रे मंसूर' में एक हदीस नक़ल की है, जिसका तर्जुमा यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

'जब मेरी उम्मत दुनिया को बड़ी चीज़ समझने लगेगी तो

इस्लाम की क़ीमत उनके दिल से निकल जाएगी और जब 'नेकियों की राह बताना और बुराइयों से रोकना' छोड़ देगी, तो वह्य की बरकत से महरूम हो जाएगी और जब आपस में एक दूसरे को गालियां देने लगेगी तो अल्लाह की नज़र से गिर जाएगी।'

यह वही वक़्त है, जिसकी मुख़्बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी थी। ला इला-ह इल्लल्लाह की बहुत-सी तस्बीहें पढ़ी जाती हैं, मगर ला इला-ह इल्लल्लाह नफ़ा नहीं देता, क्योंकि ख़ुदा की ना-फ़रमानियां खुल्लम-खुल्ला हो रही हैं और उन्हें बन्द करना तो दूर की बात, उन्हें बुरा ही नहीं समझा जाता। तब्लीग़ का फ़र्ज़ (नेकियों की राह बताना और बुराइयों से रोकना) छोड़ देने की वजह से वह्य की बरकत से महरूम हैं। वह्य यानी ख़ुदा का कलाम क़ुरआन हकीम सीनों में मौजूद है, दुकानों में रखा है, अल-मारियों में महफ़ूज़ है, लेकिन उसकी बरकत (यानी तक़्वा और पर-हेज़गारी) से आम मुसलमान इस लिए महरूम हैं कि उसके अह्काम की तब्लीग़ करना छोड़ बैठे हैं। गालियां बकने की बहुत [illegible] हो गयी है और अल्लाह की नज़र से गिर कर ज़िल्लत व मुसीबत की गोद में पहुंच चुके हैं। दुआएं करते हैं, मगर क़ुबूल नहीं होतीं। मुसी-बतों से छुटकारा चाहते हैं, मगर ख़लासी नहीं पाते और अपने मक़्सद में भला किस तरह कामियाब हों, जबकि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, यह ज़रूरी है और फिर ज़रूरी है कि नेकियों का हुक्म करते रहो और बुराइयों से रोकते रहो, वरना जल्दी ही तुम सब पर ख़ुदा अज़ाब भेजेगा, फिर उस वक़्त ख़ुदा से तुम बेशक दुआ भी करोगे, लेकिन वह क़ुबूल न करेगा। —तिर्मिज़ी

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि किसी क़ौम में अगर एक शख़्स (भी) गुनाह करने वाला हो और वह उसे रोकने पर

क़ुदरत रखते हुए भी न रोकें, तो खुदा उन पर मरने से पहले ज़रूर अपना अज़ाब भेजेगा।   —मिश्कात शरीफ़

इन मुबारक हदीसों से मालूम हुआ कि इंसानों के अमल, राहत व चैन, मुसीबत व अज़ाब के बीज हैं। अच्छे अमल से नेमतों, ऐश व आराम के पौधे निकलते हैं और बुरे अमल से आफ़तों-मुसीबतों के दरवाज़े खुलते है।

ऊपर की हदीसों से साफ़ मालूम हो रहा है कि तब्लीग़ का फ़रीज़ा छोड़ने से आम अज़ाब आता है, अल्लाह के दरबार से दुआ रद्द कर दी जाती है, वह्य की बरकत से महरूम हो जाते हैं, साथ ही यह भी मालूम हुआ कि एक-दूसरे को गाली देना अल्लाह जल्ल शानुहू की नज़र से गिर जाने की वजह है।

इन इर्शादात के अलावा और भी बहुत-सी हदीसों में ख़ास-ख़ास अमल के ख़ास नतीजों का ज़िक्र है, जिनमें से कुछ का ज़िक्र थोड़े में किया जाता है—

१. ज़िना, फ़ह्श, और बद-कारी, क़हत, ज़िल्लत और तंगदस्ती की वज्हें हैं। ज़िना से मौतें ज़्यादा होती हैं और बे-हयाई के कामों में पड़ने से ताऊन और ऐसे मरज़ ज़ाहिर होते हैं, जो बाप-दादों में कभी न हुए थे।   —तर्ग़ीब

२. जिस क़ौम में रिश्वत का लेन-देन हो या ख़ियानत करती हो, उनके दिलों पर रौब छा जाता है।   —मिश्कात

३. जो लोग ज़कात न दें, उनसे बारिश रोक ली जाती है।

—तर्ग़ीब

४. नाप-तौल में कमी करने से रोज़ी बन्द कर दी जाती है। क़हत और सख़्त मेहनत में मुब्तला होते हैं और ज़ालिम बादशाह मुसल्लत होते हैं और फ़ैसलों में ज़ुल्म करने की वजह से क़त्ल की ज़्यादती होती है। बद-अह्दी करने से सर पर दुश्मन मुसल्लत कर दिया जाता है।   —मिश्कात शरीफ़

५. रिश्तेदारों से ताल्लुक़ात तोड़ने की वजह से ख़ुदा की रहमत से महरूमी होती है और मां-बाप के सताने से दुनिया में मरने से पहले ही सज़ा भुगतनी पड़ती है। —मिश्कात

६. नेकी फैलाने और बुराई मिटाने को न करने से और हराम खाना न छोड़ने से दुआ क़ुबूल नहीं होती। —मिश्कात

७. ज़ुल्म और झूठी क़सम माल को बर्बाद, औरतों को बांझ और आबादियों को खाली कर देती हैं। —तर्ग़ीब

८. नमाज़ की सफ़ें ठीक न करने से दिलों में फूट पड़ जाती है। —मिश्कात

९. ना-शुक्री से नेमतें छीन ली जाती हैं। —क़ुरआन हकीम

१०. जिस माल में ज़कात वाजिब होती है और अदा न की गयी तो वह ज़कात का हिस्सा उस माल को हलाक कर देता है। —मिश्कात

इसके ख़िलाफ़ नेकियों के बदले में दुनिया में राहत व चैन की ज़िंदगी नसीब होती है। ज़िल्लत व मिस्कीनी दूर होती है और ख़ास-ख़ास अमल के ख़ास-ख़ास नतीजे ज़ाहिर होते हैं, जैसे—

१. सुबह को सूरः यासीन पढ़ने से दिन पर की ज़रूरतें पूरी होती हैं और रात को सूरः वाक़िआ पढ़ने से कभी फ़ाक़ा न होगा। —मिश्कात

२. सब्र और नमाज़ के ज़रिए ख़ुदा की मदद मिलती है। —क़ुरआन

३. अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को चैन नसीब होता है (क़ुरआन हकीम) और ज़िक्र से बढ़ कर कोई चीज़ भी अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली नहीं। —मिश्कात

४. शुरू व आख़िर में दरूद शरीफ़ पढ़ने से दुआ क़ुबूल होती है। —मिश्कात

५. सख़ावत (दान-पुण्य) से माल बढ़ता है। सदक़े से ख़ुदा का

गुस्सा बुझ जाता है और मरते वक़्त घबराहट नहीं होती।—मिश्कात

६. तक्वा और अस्तग़फ़ार से ऐसी जगह से रोज़ी मिलती है, जहां से ख्याल भी न हो। —क़ुरआन हकीम, मिश्कात शरीफ़

७. शुक्र करने से नेमतें बढ़ती हैं। —क़ुरआन मजीद

८. जो मुसलमानों की ज़रूरत पूरी करे, खुदा उसकी मदद करता है। —मिश्कात

९. ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाह ९९ मरज़ों की दवा है, जिसमें सबसे कम दर्जा ग़म का है।

१०. दुआ आयी हुई मुसीबत को नफ़ा देती है और जो मुसीबत अभी न आयी हो, उसके लिए भी। —मिश्कात

इन कुछ मिसालों से मालूम हुआ कि मुसीबतें और तक्लीफ़ें दूर करने के लिए ईमानी सिफ़तों का (यानी ज़िक्र, नमाज़, तक्वा, शुक्र, तिलावते क़ुरआन पाक वग़ैरह) का अपनाना ज़रूरी है। खुदा से दूर रह कर खुदा की नेमतें नहीं मिल सकतीं। तजुर्बा इसका गवाह है कि अपनी समझ से जो तद्बीरें अपनायी जाती हैं, उनसे मौजूदा मुसीबतें हल नहीं होतीं, बल्कि बढ़ती ही चली जाती हैं।

इस उम्मत के आख़िरी दौर में सहाबा रज़ि० जैसा अज्र लेने वाले मुबल्लिग़ और मुजाहिद होंगे

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अला हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझसे एक सहाबी ने बयान किया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया, इस उम्मत के आख़िर में एक ऐसी जमाअत होगी, जिन्हें उम्मत के

पहले मुसलमानों जैसा बदला मिलेगा। वे भलाइयों का हुक्म करेंगे और बुराइयों से रोकेंगे और फ़ित्ने-फ़साद वालों से लड़ेंगे।

उन्हें इतना ज़ोरदार बदला इस वजह से मिलेगा कि वे इस कुफ़्र व इल्हाद के ज़माने में, जबकि हक़ बात कहना बहुत मुश्किल होगा, हक़ बात कहेंगे और बुराइयों के मिटाने की कोशिश करेंगे।

नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बे-इंतिहा मुहब्बत करने वाले पैदा होंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में सबसे बढ़ कर मुझसे मुहब्बत रखने वाले वे भी होंगे, जो यह तमन्ना करेंगे कि काश ! हम अपना माल और कुंबा क़ुर्बान करके अपने रसूल को देख लेते। —मिश्कात

यानी मैं तो मौजूद न हूंगा, मगर उन्हें मुझ से इस क़दर मुहब्बत होगी कि सिर्फ़ मेरे देखने के लिए अपना सारा माल और घर-बार-कुंबा-क़बीला क़ुर्बान करने के लिए तैयार होंगे।

दरिंदे वग़ैरह इंसानों से बात करेंगे

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक दरिंदे

इंसानों से न बोलेंगे और जब तक इंसान के कोड़ों का अगला हिस्सा और जूती का तस्मा उस से हम-कलाम न होंगे और जब तक उस की रान उसे यह न बतायेगी कि तेरे पीछे तेरे घर वालों ने यह काम किया है।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

यानी क़ियामत से पहले ऐसा ज़रूर हो जाना है।

सिर्फ़ माल ही काम देगा

हज़रत मिक़्दाम बिन मादीकर्ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीक़न लोगों पर ऐसा ज़माना आयेगा कि सिर्फ़ दीनार व दिरहम ही नफ़ा देंगे।

—अहमद

साहिबे लम्आत इस इर्शाद की तश्रीह में लिखते हैं—

ای لاینفع الناس الاالکسب یستغنوبہ عن الوقوع فی الحرام

यानी इस ज़माने में हलाल कमा कर ही दीन महफ़ूज़ रख सकेंगे और हलाल कमाई ही उन्हें हराम से बचाएगी।

मतलब यह है कि दीन में इतने कमज़ोर होंगे कि अगर हलाल न मिले तो तक्लीफ़ और भूख बर्दाश्त करके हराम से न बचेंगे, बल्कि हराम में मुब्तला हो जाएंगे। अगर किसी के पास हलाल माल होगा तो, उसे हराम से बचाएगा।

ना-चीज़ की राय यह है कि हदीस में यह बताया गया है कि हर मामले में माल ही से काम चलेगा। दीन भी माल ही के ज़रिए महफ़ूज़ रख सकेंगे और दुनिया के मामलों में भी माल ही को देखा जाएगा, किसी पार्टी के सदर और सिक्रेट्री के चुनाव में भी सरमायादारी की पूछ होगी। क़ौम और ख़ानदान के चौधरी भी दौलत वाले

होंगे। निकाह के लिए मालदार मर्द की तलाश होगी, ग़रज़ कि हर मामले में माल देखा जाएगा और मालदार ही को आगे रखेंगे, जैसा कि हमारे मौजूदा ज़माने में हो ही रहा है कि मालदार होना शराफ़त और बड़ाई की दलील बन गया है और फ़क्र व तंगदस्ती अगरचे अख्तियारी नहीं, लेकिन फिर भी ऐब समझी जाने लगी है। रुपए-पैसे की ऐसी अज़्मत दिलों में बैठ चुकी है कि मालदार ही को बड़ा और इज़्ज़त-आबरू वाला समझा जाता है और इसी सच्चाई को देखते हुए तंगदस्त और ग़रीब तंगदस्ती को छिपाने की कोशिश करते हैं। अफ़सोस कि जो फ़क्र मोमिन की ख़ास शान थी, वह ऐब बन कर रह गयी और इससे बढ़ कर यह कि फ़क्र की वजह से बहुत-से लोग ईमान से फिर रहे हैं। और सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इर्शाद—

كَادَ الْفَقْرُ اَنْ يَّكُوْنَ كُفْرًا

फ़क्र कुफ़्र बन जाने के क़रीब है।

—मिश्कात

का मतलब ख़ूब समझ में आ रहा है।

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० फ़रमाते थे कि पहले ज़माने में नेक लोगों के माहौल में माल को ना-पसन्द किया जाता था, लेकिन आज माल मोमिन की ढाल है। अगर माल न हो तो यह मालदार हमारा (यानी आलिमों का) रूमाल बना लें। आदमी जिस तरह रूमाल मैल साफ़ करके डाल देते हैं, उसी तरह तंगदस्त आलिम को मालदार ज़लील समझने लगें। फिर फ़रमाया कि जिस के पास माल हो, उसे चाहिए कि मुनासिब तरीक़े पर ख़र्च करे और बे-फ़िक्री से न उड़ाए क्योंकि यह वह दौर है कि अगर हाजत पेश आएगी तो सबसे पहले दीन को बर्बाद करेगा। —मिश्कात

चांदी-सोने के स्तून ज़ाहिर होंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि ज़मीन अपने अन्दर से स्तूनों की तरह सोने-चांदी के लम्बे-लम्बे टुकड़े उगल देगी, जिसकी वजह से माल बे-क़ीमत हो जाएगा और क़ातिल आकर कहेगा कि (अफ़सोस !) इस (बे-हक़ीक़त और बे-क़ीमत चीज़) की वजह से मैंने किसी की जान ली और माल की वजह से रिश्तेदारी तोड़ने वाला कहेगा कि (अफ़सोस !) इसकी वजह से मेरा हाथ काटा गया, यह कह कर उसे छोड़ देंगे और उसमें से कुछ भी न लेंगे।

दूसरी हदीस में है कि क़ियामत से पहले वह वक़्त आएगा कि फ़रात नहर के अन्दर से सोने का एक पहाड़ ज़ाहिर होगा और उस को क़ब्ज़ाने के लिए लोग जंग करेंगे, जिस के नतीजे में ९९ फ़ीसदी इंसान मर जाएंगे। जिनमें से हर एक का यह गुमान होगा कि शायद मैं ही बच जाऊं। —मुस्लिम

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है, जो हज़रत अबू-हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की जाती है कि फ़रात से सोने का एक पहाड़ ज़ाहिर होगा। जो शख़्स वहां मौजूद हो, उसमें से कुछ भी न ले —मिश्कात शरीफ़

मौत की तमन्ना की जाएगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दुनिया के ख़त्म होने

से पहले ऐसा ज़रूर गुज़रेगा कि क़ब्र पर इंसान का गुज़र होगा और वह क़ब्र पर लोट कर कहेगा कि काश ! मैं इस क़ब्र वाले की जगह होता और दीन की वजह से यह तमन्ना न होगी कि (बद-दीनी की फ़िज़ा से घबरा कर ऐसा कहेगा,) बल्कि (दुनिया की) मुसीबत में गिरफ़्तार होगा । —मुस्लिम

फ़—यानी उस ज़माने में बद-दीनी और फ़िस्क़ व फ़ुजूर से घबराने वाले तो कहां होंगे, हां, दुनिया की परेशानियों और बलाओं में फंस कर मरने को ज़िंदगी पर तर्जीह देंगे । ऐसे हालात हमारे इस ज़माने में मौजूद होते जा रहे हैं और परेशानी की वजह से यों कहने वाले अब भी मौजूद हैं कि, 'इस ज़िंदगी से मौत ही भली है ।'

माल की ज़्यादती होगी

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि आख़िर ज़माने में एक ऐसा मुसलमान बादशाह होगा, जो लप भर-भर के माल बांटेगा और माल को गिनेगा नहीं । —मुस्लिम

यानी उस वक़्त माल इतना ज़्यादा होगा कि बांटते वक़्त बांटने वाला कम और ज़्यादा का ख़्याल न करेगा और माल इस क़दर ज़्यादा होगा कि उसकी गिनती करना आसान बात न होगी ।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक तुम्हारे अन्दर माल की इतनी ज़्यादती न हो जाए कि मालदार को इसका रंज हो कि काश ! कोई तीसरा सद्क़ा क़ुबूल कर लेता ।

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं

कि मेरे सामने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ियामत की छः निशानियां ज़िक्र फ़रमायी हैं, जिन में से एक यह है कि माल की इतनी ज़्यादती होगी कि इंसान को सौ दीनार (सोने की अशर्फ़ियां) दिये जाएंगे, तो (उन्हें कम समझ कर) नाराज़ हो जाएगा।
—बुख़ारी

कुछ रिवायतों में यह भी है कि आपने फ़रमाया, सद्क़ा करो, क्योंकि तुम पर ऐसा ज़माना आएगा कि इंसान सद्का लेकर चलेगा कि (किसी को दे दूं) और कोई क़ुबूल करने वाला न मिलेगा, जिसे देना चाहेगा, वह कहेगा कि तू कल ले आता, तो मैं ज़रूर क़ुबूल कर लेता। आज तो मुझे इसकी ज़रूरत नहीं।
—मिश्कात

झूठे नबी होंगे

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब मेरी उम्मत में तलवार निकाल ली जाएगी (यानी उम्मत आपस में खानाजंगी करने लगेगी) तो क़ियामत तक तलवार चलती रहेगी और क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक मेरी उम्मत के बहुत से क़बीले मुश्रिकों में दाख़िल न हो जाएं और जब तक मेरी उम्मत के बहुत से क़बीले बुतों को न पूजें......(फिर फ़रमाया कि) बेशक मेरी उम्मत में तीस झूठे होंगे, जिन में से हर एक अपने को नबी बताएगा, हालांकि मैं आख़िरी नबी हूं। मेरे बाद कोई नबी नहीं हो सकता।
—मिश्कात

ज़लज़ले बहुत आएंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उस

वक़्त तक क़ियामत न आयेगी, जब तक दो बड़ी जमाअतें आपस में दो बड़ी लड़ाइयां न कर लें, जिन दोनों का दावा एक ही होगा[1] और जब तक तीस के क़रीब ऐसे दज्जाल व झूठे पैदा न हो जाएं, जिनमें से हर एक अपने आपको अल्लाह का रसूल बताएगा और फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत न आएगी, जब तक दुनिया से इल्म न उठ जाए और ज़लज़लों की ज़्यादती न हो जाए।

—बुख़ारी व मुस्लिम

शक्लें बिगड़ेंगी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस उम्मत में यक़ीनन ज़मीन में धंस जाने और आसमान से पत्थर बरसने और शक्लें बिगड़ने का अज़ाब आएगा और यह उस वक़्त होगा जब (लोग ज़्यादा से ज़्यादा) शराब पिएंगे और गाने वाली औरतें रखेंगे और गाने-बजाने का सामान इस्तेमाल करेंगे। —इब्ने अबिद्दुन्या

उम्मते मुहम्मदिया यहूद व नसारा और फ़ारस व रोम की पैरवी करेगी

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम यक़ीनन

---

१. हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं कि इस से हज़रत अली और मुआविया की लड़ाई मुराद है।

अपने-से पहलों की बालिश्त-बालिश्त, हाथ-हाथ करके पैरवी करोगे (जिस चीज की तरफ़) वे जितना ही बढ़ते थे, तुम भी उतना ही बढ़ोगे। जिस चीज की तरफ़ वे एक बालिश्त बढ़े, तुम भी एक बालिश्त बढ़ोगे और जिस चीज़ की तरफ़ वह एक हाथ बढ़ते थे, तुम भी उतना ही बढ़ोगे, यहां तक कि अगर वे गोह के सूराख़ में दाख़िल हुए थे, तो तुम भी दाख़िल होगे । सवाल किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या पहलों से आपकी मुराद यहूद व नसारा हैं ? इर्शाद फ़रमाया, तो और कौन हैं ?

दूसरी रिवायत में है, जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की गयी है कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीनन मेरी उम्मत पर वह ज़माना आएगा, जो बनी इस्राईल पर गुज़रा था, जिस तरह (एक पैर का जूता) दूसरे (पांव के) बराबर होता है, उसी तरह हू-ब-हू, यहां तक कि अगर इन बनी इस्राईल में से किसी ने एलानिया अपनी मां से ज़िना किया होगा, तो मेरी उम्मत में भी ऐसा करने वाले होंगे, (फिर फ़रमाया कि) बिला शुब्हा बनी इस्राईल के बहत्तर मज़हबी फ़िर्क़े हो गये थे और मेरी उम्मत के तिहत्तर मज़हबी फ़िर्क़े होंगे, जो एक के अलावा सब दोज़ख़ में जाएंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया वह (जन्नती) कौन-सा होगा ? इर्शाद फ़रमाया, (जो इस तरीक़े पर होगा) जिसमें मैं और मेरे सहाबा हैं।

—मिश्कात

इन हदीसों में आपने जो कुछ इर्शाद फ़रमाया था, वह सब कुछ आज हमारे सामने मौजूद है। बनी इस्राईल के अवाम और उलेमा ने जो हरकतें की थीं, वे सब हमारे ज़माने में मौजूद हैं। दीन में बिद्अतें निकालना, ख़ुदावंदी किताब में घट-बढ़ करना, किसी दौलत वाले के दबाव से शरई मस्अला बदल देना, दीन बेच कर दुनिया हासिल करना, मस्जिदों को सजाना, हीलों-बहानों से हराम चीज़ों को हलाल करना, वग़ैरह-वग़ैरह, सब कुछ इस दौर में मौजूद है।

जिन तिहत्तर फ़िर्क़ों की ख़बर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है, वे भी पूरे हो चुके हैं, जिनकी तफ़्सील कुछ हदीस की शरहों में आ भी गयी है। यहां इतना समझ लेना ज़रूरी है कि इस से सिर्फ़ वे फ़िर्क़े मुराद हैं जो इस्लामी शरीअत के अक़ीदों से मेल नहीं खाते, जैसे मोतज़ला, ख़वारिज, राफ़ज़ी, क़ादियानी, अह्ले क़ुरआन वग़ैरह हैं और जो लोग इस्लामी अक़ीदे को बे-झिझक मानते हैं और सिर्फ़ नमाज़-रोज़े के मस्अलों में अलग राएं रखते हैं (जैसे चारों इमामों की तक़्लीद करने वाले और फ़िर्क़ा अह्ले हदीस है) वे सब इसी एक फ़िर्क़े में दाख़िल हैं, जिसे जन्नती फ़रमाया है, क्योंकि जिन मस्अलों में उनकी राएं अलग हैं, उनमें हज़राते सहाबा रज़ि० का भी इख़्तिलाफ़ था और सहाबा किराम रज़ि० के तरीक़े पर चलने वाले को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नती फ़रमाया ही है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक मेरी उम्मत अपने से पहले लोगों का तरीक़ा बालिश्त-बालिश्त और हाथ-हाथ करके अख़्तियार न करेगी। इस बार सवाल किया गया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। जैसे फ़ारस और रोम (के पैरवी करेंगे।) इर्शाद फ़रमाया कि और उनके सिवा पहले लोग कौन हैं ?[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० 'फ़त्हुल बारी' में लिखते हैं कि इस हदीस में फ़ारस और रोम की पैरवी की ख़बर दी है और पहली हदीस में यहूद व नसारा की पैरवी की ख़बर दी है, इस लिए दोनों को मिला कर यह नतीजा निकला कि दीन के बिगाड़ने के बारे में तो यह उम्मत यहूद व नसारा के पीछे चलेगी और सियासत व हुकूमत

---

१. बुख़ारी,

के मामलों में फ़ारस और रोम की पैरवी करेगी।

हर शख़्स अपनी ही राय को आगे बढ़ाएगा और मनमानी ख़्वाहिशों की पैरवी करेगा

हज़रत अबू सअ्लबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि भलाइयों का हुक्म करते रहो और बुराइयों से रोकते रहो, यहां तक कि (जब लोगों की यह हालत हो जाए कि) तुम यह देखो कि बुख़्ल (कंजूसी) की इताअत की जाती हो (यानी जब लोगों में कंजूसी आम हो जाए और नफ़्स की ख़्वाहिश की पैरवी की जाए और दुनिया को (दीन पर) तर्जीह दिया जाए और हर शख़्स अपनी राय पर इतराता हो और तुम अपने बारे में यह बात ज़रूरी देखो कि लोगों में रह कर मैं भी उन बुराइयों में पड़ जाऊंगा, तो उस वक़्त सिर्फ़ अपने नफ़्स को संभाल लेना और लोगों के मामले को छोड़ देना। —मिश्कात

दो ख़ास बादशाहों के बारे में पेशीनगोई

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी जब तक क़बीला-क़ह्तान से (जो यमन में रहते हैं) एक ऐसा शख़्स न ज़ाहिर हो (जो अपने इक़्तिदार की वजह से) लोगों को अपनी लकड़ी से हांकेगा।

—बुख़ारी व मुस्लिम

यानी सब लोग उसकी बात को मानेंगे और एक होकर उसकी

सरकार तस्लीम करेंगे। —मिरक़ात

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने क़र्तबी के हवाले से कुछ उलेमा का यह क़ौल भी नक़ल किया है कि सख़्त तबीयत और ज़ालिम होने की वजह से वह शख़्स लोगों को सचमुच ऊंटों और बकरियों की तरह हांकेगा।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक रात और दिन ख़त्म न होंगे, जब तक जहजहा नामी एक शख़्स बादशाह न बन जाए, जो ग़ुलामों की नस्ल से होगा। —मुस्लिम

हज़रत शाह साहब ने क़ियामतनामा में क़हतान बादशाह को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जानशीन बताया है। वल्लाहु तआला अअ़लमु बिस्सवाब०

एक हब्शी ख़ाना-ए-काबा को बर्बाद करेगा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तक हब्श वाले तुमसे न लड़ें, तुम उनसे न लड़ो, क्योंकि ख़ाना-ए-क़ाबा का ख़ज़ाना दो छोटी-छोटी पिंडुलियों वाला हब्शी निकालेगा। —मिश्कात

दूसरी रिवायत में है कि काबा को दो छोटी-छोटी पिंडुलियों वाला हब्शी वीरान करेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

छोटी-छोटी पिंडुलियों वाला इस लिए फ़रमाया कि हब्श वालों की पिंडुलियां छोटी-छोटी होती हैं।

हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि जब दुनिया से सारे ईमानदार

उठ जाएंगे तो हब्शियों की चढ़ाई होगी और उनकी सल्तनत पूरी धरती पर फैल जाएगी, काबा को ढाएंगे और हज रुक जाएगा। ख़ाना-ए-काबा के ख़ज़ाने से क्या मुराद है? इसके बारे में मिरक़ात में एक कौल नक़ल किया है कि ख़ाना-ए-काबा के नीचे एक ख़ज़ाना दफ़्न है, उसे हब्शी निकाल लेंगे।

फलों में कमी हो जाएगी

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ज़माना क़रीब-क़रीब हो जाएगा (यानी जल्दी-जल्दी गुज़रने लगेगा,) साल कम हो जाएंगे (यानी जल्दी ख़त्म होंगे,) फल कम होएंगे।—तबरानी

फल कम होने के दो मतलब हैं, एक यह कि कम पैदा हों, दूसरे यह कि छोटे-छोटे पैदा हों। दोनों शक्लें मुराद हो सकती हैं। पिछली सदियों में फल कितने बड़े होते थे, इसकी कुछ तफ़्सील किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़री, अल-बत्ता हज़रत इमाम दाऊद रह० ने लिखा है कि मैंने एक ककड़ी १३ बालिश्त की नापी है।

सबसे पहले टिड्डी हलाक होगी

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में, जिस साल उनकी वफ़ात हुई थी, टिड्डी गुम हो गयी, जिस की वजह से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत ही फ़िक्रमंद हुए और उसकी तलाश में एक सवार यमन की तरफ़ भेजा और एक इराक़ की तरफ़ और एक शाम की तरफ़, ताकि वे यह मालूम

करें कि इस साल टिड्डी देखी गयी है या नहीं। जो साहब यमन गये थे, वे एक मुट्ठी टिड्डियां लाये और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने डाल दी। जब आपने वे देखीं तो (खुशी में) अल्लाहु अक्बर का नारा बुलन्द किया और फ़रमाया कि मैंने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू ने (पशुओं की) एक हज़ार क़िस्में पैदा फ़रमायी हैं, जिनमें से ६० दरियायी और ४०० खुश्की की हैं और इनमें सबसे पहले (क़ियामत के क़रीब) टिड्डी ही हलाक होगी और इसके बाद दूसरे (पशुओं) की क़िस्में एक-एक करके हलाक होंगी जैसे किसी लड़ी का धागा टूट कर दाने ही दाने गिरने लगते हैं।

इस हदीस से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फ़िक्र का हाल मालूम हुआ कि क़ियामत के क़रीब होने की एक निशानी देख कर (जो हक़ीक़त में मौजूद भी न थी, सिर्फ़ उनके इल्म के एतबार से ज़ाहिर हो गयी थी) किस क़दर घबराये और सवारों को भेज कर बड़े एहतिमाम से इसका पता लगाया कि क्या वाक़ई टिड्डी की जिंस हलाक हो चुकी है या मदीने ही में नज़र नहीं आयी? अब यह अन्दाज़ा कर लीजिए कि अगर टिड्डी न मिलती तो हज़रत उमर रज़ि० कितने परेशान होते और एक हम हैं कि क़ियामत की सैकड़ों निशानियां अपनी आंखों से देख रहे हैं, लेकिन कोई ख़तरा महसूस नहीं करते।

क़ियामत क़रीब होने के तफ़्सीली हालात

अब तक जितनी पेशीनगोइयां की जा चुकी हैं, वे सब क़ियामत ही की निशानियां थीं, जिसमें से कुछ पूरी हो चुकी हैं और कुछ पूरी हो रही हैं और कुछ आगे पूरी होंगी। किसी हादिसे या वाक़िए का

क़ियामत की निशानियों में से होने का मतलब यह नहीं कि क़ियामत के बिल्कुल ही क़रीब हो, बल्कि मतलब यह है कि क़ियामत से पहले इसका वजूद में आ जाना जरूरी है, इस लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत से हवादिस व वाक़िआत के बारे में यह फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक कि ऐसा न हो जाए। खुद सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दुनिया में तश्रीफ़ लाना भी क़ियामत की अलामतों में शुमार किया जाता है, हालांकि आपके नबी बनाये जाने को क़रीब चौदह सौ साल हो चुके हैं और खुदा ही जाने कि अभी कितने वर्षों बाद क़ियामत क़ायम होगी।

बुखारी शरीफ़ की रिवायत में तस्रीह है कि इसे आपने अपनी वफ़ात को क़ियामत की निशानियों में गिना। नीचे वे हादिसे व वाक़िए दर्ज करता हूं, जो आमतौर से क़ियामत के क़रीबतर ज़माने में ज़ाहिर होंगे। आमतौरसे इन वाक़िआत का लगातार जारी रहना हज़रत मौलाना शाह रफ़ीउद्दीन साहिब देहलवी क़द्दस सिर्रहू ने 'क़ियामत-नामे' के मुताबिक़[1] है और तफ़्सीली बातें ना-चीज़ ने खुद हदीसों में देख कर लिखी हैं। कहीं-कहीं मुझे हज़रत शाह साहब की तर्कीब से इख़्तिलाफ़ है, इस लिए ऐसे मौक़ों में शाह साहिब की पैरवी मैं नहीं कर सकता था।

———

१. हदीसों में क़ियामत की निशानियां तर्तीब के साथ दर्ज नहीं हैं, बल्कि अलग-अलग हदीसों में अलग-अलग वाक़िआत बयान फ़रमा दिये हैं। हज़रत शाह साहब रह० ने इन वाक़िआत को तर्तीब दे कर 'क़ियामत नामे' में दर्ज किया है।

ईसाइयों से सुलह व जंग

हज़रत ज़ी मुख्बिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ईसाइयों से सुलह करोगे जो अम्न वाली सुलह होगी, तुम और ईसाई आपस में मिल कर एक दूसरी ईसाई जमाअत से जंग करोगे। इस जंग में तुम्हारी जीत होगी। ग़नीमत का माल ले लेगा और सही-सालिम वापस आकर बड़े-बड़े टीलों वाले मैदान में ठहरोगे, जहां पेड़ बहुत होंगे, बैठे-बैठाए एक ईसाई सलीब[1] को हाथ में उठायेगा और कहेगा कि सलीब की बरकत से जीत हुई। यह सुन कर एक मुसलमान को गुस्सा आ जायेगा और उससे सलीब छीन कर तोड़ डालेगा। यह हाल देख कर ईसाई सुलह को तोड़ेंगे और मुसलमानों से जंग करने के लिए जमा हो जाएंगे। मुसलमान भी अपने हथियार लिए दौड़ेंगे और ईसाइयों से जंग करेंगे और ख़ुदा इस लड़ने वाली जमाअत को शहादत की इज़्ज़त बख़्शेगा।[2]

हदीस शरीफ़ में इसी क़दर ज़िक्र है, इसके बाद हज़रत शाह साहिब लिखते हैं कि इस लड़ाई में मुसलमानों का बादशाह शहीद हो जाएगा और दूसरे मुल्कों की तरह मुल्क शाम में भी ईसाइयों की हुकूमत हो जाएगी और जिस ईसाई जमाअत से मुसलमानों के साथ मिल कर पहली लड़ाई की थी, उससे अब ये ईसाई सुलह कर लेंगे। इस लड़ाई से जो मुसलमान बचेंगे वह मदीना चले जाएंगे और ख़ैबर के क़रीब

---

१. सलीब सूली को कहते हैं, क्योंकि ईसाईसूली को पूजते हैं और उसे की बरकत को बताएगा।
बरकतों वाला समझते हैं, इस लिए वह ईसाई शख़्स फ़त्ह की वजह सलीब

२. अबूदाऊद,

तक ईसाइयों की हुकूमत हो जाएगी ।[1]

बुखारी शरीफ़ में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तबूक की लड़ाई के मौक़े पर क़ियामत की छः निशानियां बतायीं, जिनमें बनिल अस्फ़र यानी (ईसाइयों) और मुसलमानों के दर्मियान सुलह हो जाना भी ज़िक्र फ़रमाया और यह भी फ़रमाया कि ईसाई बद-अह्दी करेंगे और (सुलह तोड़ कर जंग करने के लिए) तुम्हारे मुक़ाबले में आएंगे, जिनके अस्सी झंडे होंगे और हर झंडे के नीचे १२ हज़ार सिपाही होंगे (जिनकी कुल तायदाद १२ हज़ार को अस्सी में गुणा देने से ६ लाख साठ हज़ार होती है ।)

कुछ हदीसों में एक बड़ी लड़ाई का ज़िक्र भी आया है, जैसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद की एक रिवायत में है कि—

الملحمة العظمى وفتح القسطنطنية وخروج الدجال فى سبعة اشهر

बड़ी लड़ाई, क़ुस्तुन्तुनया की जीत और दज्जाल का निकलना सात महीने के अन्दर-अंदर हो जाएगा, यानी ये तीनों चीज़ें क़रीब-क़रीब होंगी और सात महीनों में हो जाएंगी ।

यह बड़ी लड़ाई मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों की होगी या सारी दुनिया के इंसान, मज़हब की वजह से नहीं, बल्कि नज़रियों की वजह से लड़ पड़ेंगे । इसके बारे में हदीसों में कोई तसरीह ना-चीज़ को मालूम नहीं हुई । अल-बत्ता रिवायतों में जिन बड़ी-बड़ी लड़ाइयों का ज़िक्र आया है, उनमें मुसलमानों से मुक़ाबले का ज़िक्र भी मौजूद है ।

---

१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की एक रिवायत में मुसलमानों के मदीना में घिर जाने और ख़ैबर के क़रीब तक ग़ैरों के क़ब्ज़े की तसरीह मौजूद है ।
—अबूदाऊद

हज़रत मेहदी का ज़ुहूर

जब मुसलमान हर तरफ़ से घिर जाएंगे और उनकी हुकूमत सिर्फ़ मदीना मुनव्वरा से ख़ैबर तक रह जाएगी, तो वे हज़रत इमाम मेहदी की तलाश में लग जाएंगे। हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम उस वक़्त मदीने में होंगे और इमामत का बोझ उठाने से बचने के लिए मक्का मुकर्रमा चले जाएंगे। मक्का के कुछ लोग (उन्हें पहचान लेंगे और) उनके पास आकर (मकान से) उन्हें बाहर लाएंगे और उनसे ज़बरदस्ती बैअत (ख़िलाफ़त) कर लेंगे, हालांकि वे दिल से न चाहते होंगे। यह बैअत मक़ामे इब्राहीम और हजरे अस्वद के दर्मियान होगी (शायद हज़रत इमाम को तवाफ़ करते हुए बैअत पर मजबूर किया जाएगा,) जब हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त की ख़बर मशहूर होगी तो मुल्क शाम से एक फ़ौज आप से लड़ाई करने के लिए चलेगी और आपके लश्कर तक पहुंचने से पहले ही बीदा नामी जगह में, जो मक्का और मदीना के दर्मियान है, ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। इस वाक़िए की ख़बर सुन कर शाम के अब्दाल[1] और इराक़ के परहेज़गार लोग आप की ख़िद्मत में पहुंच जाएंगे। आपके मुक़ाबले के लिए एक क़ुरैशी नस्ल क़बीला बनी कल्ब के मर्दों का एक लश्कर भेजेगा। क़बीला

---

१. अब्दाल बदल की जमा है। अब्दाल उन औलियाउल्लाह को कहते हैं जिन का बदल दुनिया में पैदा होता रहता है। इस्लाम की इब्तिदा से आज तक उन के वजूद से दुनिया ख़ाली नहीं हुई, जब भी उन में से कोई इस दुनिया से गया, दूसरा उस की जगह ज़रूर क़ायम हुआ है। इसी तबादले की वजह से इन्हें अब्दाल कहते हैं।

बनी कल्ब में उस शख़्स की ननिहाल होगी। इस क़बीले से हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम का लश्कर जंग करेगा और ग़ालिब रहेगा। यह रिवायत मिश्कात शरीफ़ में अबू दाऊद के हवाले से रिवायत की गयी है। इसके शुरू में यह भी है कि एक ख़लीफ़ा के मरने पर इख़्तिलाफ़ होगा कि अब किस को ख़लीफ़ा बनाया जाए और एक साहब (यानी हज़रत मेहदी) यह समझ कर मदीने से मक्के को चल देंगे कि कहीं मुझे न बना लें।

इमाम मेहदी का हुलिया, नसब और नाम

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेहदी मेरी नस्ल से और फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की औलाद से होंगे।[1]

हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू ने एक मर्तबा अपने साहबज़ादे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि यह मेरा बेटा सैयद है जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इसका नाम सैयद रखा है, इसकी औलाद में एक शख़्स पैदा होगा, जिसका नाम वही होगा, जो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम है। यानी उसका नाम मुहम्मद होगा, फिर फ़रमाया कि वह अख़्लाक़ में मेरे बेटे हुसैन जैसा होगा और शक्ल में उस जैसा न होगा। इसका हुलिया हुसैन के हुलिए से मिलता-जुलता होगा।[2]

कुछ रिवायतों में है कि इमाम के वालिद का नाम वही होगा, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद का नाम

---

१. अबूदाऊद, २. वही,

था।[1]

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेहदी मुझ से होगा। उसका चेहरा खूब रोशन, नूरानी होगा। नाक ऊंची होगी।[2]

इमाम मेहदी के ज़माने में दुनिया के हालात

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत पर एक ज़बरदस्त मुसीबत आएगी और इंसान ज़ुल्म से बचने के लिए कोई पनाह की जगह न पाएगा। उस वक़्त खुदा मेरी नस्ल और खानदान में से एक शख्स पैदा फ़रमायेगा और उसके ज़रिए ज़मीन को अद्ल और इंसाफ़ से भर देगा, जिस तरह कि वह इससे पहले ज़ुल्म और ज़्यादती से भरी हुई होगी, यानी उनसे पहले लोगों में अद्ल व इंसाफ़ नाम को न होगा, हर जगह ज़ुल्म ही ज़ुल्म छाया हुआ होगा और इनके आने पर सारी दुनिया इंसाफ़ से भर जाएगी। फिर फ़रमाया कि इन के अद्ल से आसमान और ज़मीन वाले सब राज़ी होंगे (और उस ज़माने की नेकियों और अद्ल व इंसाफ़ का यह नतीजाहोगा कि) आसमान ज़रा-सा पानी भी बरसाये बग़ैर न छोड़ेगा औरखूब मूसलाधार बारिश होगी, ज़मीन भी अपने अन्दर से तमाम फल-फूल, ग़ल्ला, तरकारियां उगा देगी, हत्ताकि इस क़दर सस्ताई और सामानों की बहुताय होगी कि ज़िंदा लोग मुर्दों की तमन्ना करने लगेंगे (कि काश ! हमारे दोस्त-अह्बाब, अज़ीज़, अक़रबा भी ज़िंदा हो जाते, तो इस ऐश व खुशी के ज़माने को देख लेते।[3]

---

१. मिश्कात, २. वही, ३. मिश्कात

हज़रत मेहदी के ज़माने में माल इस क़दर कसीर होगा कि उनसे अगर कोई माल तलब करेगा तो लप भर-भर कर उसके कपड़े में इतना डाल देंगे कि जितना वह उठा कर ले जा सकेगा।'

अबू दाऊद शरीफ़ की एक रिवायत में है कि मेहदी नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के तरीक़े पर चलेंगे और उनके ज़माने में सारी ज़मीन पर इस्लाम ही इस्लाम होगा। हज़रत मेहदी सात वर्ष हुकूमत करेंगे, फिर वफ़ात पा जाएंगे और मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे।

हज़रत मेहदी का कुफ़्फ़ार से जंग करना, दज्जाल का निकलना और हज़रत ईसा का आसमान से उतरना

हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम को कुफ़्फ़ार से कई जंगें करनी पड़ेंगी, जिनमें से कुछ का ज़िक्र अबूदाऊद की रिवायत में गुज़र चुका हैं। इस रिवायत में यह भी तस्रीह थी कि हज़रत मेहदी से जंग करने को क़बीला बनी कल्ब के आदमी आएंगे और मग़लूब होंगे और एक लश्कर आपसे लड़ने के लिए चलेगा और मक्का मदीना के दर्मियान ज़मीन धंस जाएगी। इसके अलावा दूसरी रिवायतों में भी मुसलमान के जंग करने का ज़िक्र है, मगर उनमें हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम का ज़िक्र नहीं है। अल-बत्ता हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन साहब ने उन्हें भी हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के ज़माने ही की जंग बतलाया है, नीचे उन्हें भी लिखता हूं—

---

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

शाह साहब लिखते हैं कि हज़रत इमाम मेहदी मक्का से चल कर मदीना तश्रीफ़ ले जाएंगे और सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत के बाद शाम मुल्क की तरफ़ रवाना हो जाएंगे। चलते-चलते दमिश्क़ शहर तक ही पहुंचेंगे कि दूसरी तरफ़ से ईसाइयों की फ़ौज मुक़ाबले में आ जाएगी। इस फ़ौज से जंग करने के लिए हज़रत मेहदी अलै० अपने लश्कर को तैयार करेंगे और तीन दिन जंग के बाद चौथे रोज़ मुसलमानों को ख़ता होगी। इस लश्कर कशी का ज़िक्र हदीस में यों आया है—

क़ियामत क़ायम होने से पहले ऐसा ज़रूर होगा कि मीरास (यानी मय्यत का तर्का) की तक़्सीम होगी और न ग़नीमत के माल पर ख़ुशी होगी, फिर (इस की तश्रीह करते हुए) फ़रमाया कि शाम के मुसलमानों से जंग करने के लिए एक ज़बर्दस्त दुश्मन जमा होकर आएगा और दुश्मन से लड़ाई लड़ने के लिए मुसलमान जमा हो जाएंगे और अपनी फ़ौज से चुन करके एक ऐसी जमाअत दुश्मन के मुक़ाबले में भेजेंगे, जिससे यह तै करा लेंगे या मर जाएं या जीतेंगे। चुनांचे दिन भर लड़ाई होगी, यहां तक कि जब रात हो जाएगी तो लड़ाई बन्द होगी और हर फ़रीक़ लड़ाई के मैदान से वापस हो जाएगा, न उसे ग़लबा होगा, न वे ग़ालिब होंगे और दोनों फ़रीक़ों की फ़ौज, (जो आज लड़ी थी, लड़ते-लड़ते) ख़त्म हो जाएगी। दूसरे दिन फिर मुसलमान एक ऐसी जमाअत का चुनाव करके भेजेंगे, जिससे यह तै करा लेंगे कि मरे बग़ैर या जीते बग़ैर न हटेंगे। उस दिन भी दिन भर लड़ाई होगी, यहां तक कि रात दोनों फ़रीक़ों के बीच में रुकावट बन जाएगी और किसी की भी जीत न होगी। ये भी बग़ैर ग़लबा के वापस हो जाएंगे और वे भी। और उस दिन की लड़ने वाली भी दोनों फ़रीक़ों की फ़ौज ख़त्म हो जाएगी। तीसरे दिन फिर मुसलमान एक जमाअत का चुनाव करके लड़ाई के मैदान में भेजेंगे और उनसे भी यही शर्त लगाएंगे कि मर जाएंगे या ग़ालिब

होकर हटेंगे। चुनांचे शाम तक लड़ाई होगी और दो फ़रीक़ उस दिन भी बराबर-सराबर लौट आएंगे, न वे ग़ालिब होंगे, न वे और उस दिन भी लड़ने वाली जमाअतें हर दो तरफ़ की ख़त्म हो जाएंगी। चौथे दिन बचे-खुचे सब मुसलमान लड़ाई के लिए उठ खड़े होंगे और ख़ुदा काफ़िरों को हरा देगा और उस दिन ऐसी ज़बरदस्त लड़ाई होगी कि इससे पहले कभी न देखी गयी होगी। इस लड़ाई का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि लड़ाई के मैदान में मरने वालों की लाशों के क़रीब होकर परिंदा गुज़रना चाहेगा, मगर (बदबू की वजह से या लाशों की पड़ाव की लम्बी दूरी की वजह से उड़ते-उड़ते) मर कर गिर पड़ेगा (और लाशों के शुरू से आख़िर तक न जा सकेगा) और उस लड़ाई में शरीक होने वाले लोग अपने-अपने कुंबे के आदमियों को गिनेंगे, तो एक फ़ीसदी लोग ही लड़ाई के मैदान से बचे हुए होंगे।' इससे बाद फ़रमाया कि,

'बताओ इस हाल में होते हुए क्या ग़नीमत का माल लेकर दिल ख़ुश होगा और क्या तर्का बांटने को दिल चाहेगा।'

फिर फ़रमाया कि—

'लड़ाई से छूटने के बाद आदमियों की गिनती करने में लगे होंगे, अचानक एक ऐसी लड़ाई की ख़बर सुनेंगे जो उस पहली लड़ाई से भी ज़्यादा सख़्त होगी (और अभी इस दूसरी लड़ाई की तरफ़ ध्यान न देने पाएंगे कि) दूसरी ख़बर यह मालूम होगी कि दज्जाल निकल आया, जो हमारे बाल-बच्चों को फ़ित्ने में मुब्तला करना चाहता है। यह सुन कर अपने हाथों से वह माल व दौलत फेंक देंगे, जो उनके पास होगा और अपने घरों की तरफ़ चल देंगे। ख़बरगीरी के लिए अपने आगे दस सवार भेज देंगे ताकि दज्जाल की सही ख़बर लाएं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सवारों के बारे में फ़रमाया कि मैं उनके और उनके वालिदों के नाम और उनके घोड़ों के रंग पहचानता हूं। यह सवार उस दिन धरती पर बसने वालों में

फ़ज़ीलत वाले सवार होंगे।'[1]

इसके बाद हज़रत शाह साहब लिखते हैं—

'इस लड़ाई में इतने ईसाई क़त्ल होंगे कि जो बाक़ी रह जाएंगे, उनके दिमाग़ में हुकूमत की बू न रहेगी, गिरते-पड़ते भागेंगे और तितर-बितर हो जाएंगे। भागते हुओं का यही मुसलमान पीछा करेंगे और हज़ारों को मौत के घाट उतार देंगे।'

फिर लिखते हैं कि—

'इसके बाद हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम इस्लामी शहरों के बन्दोबस्त में लग जाएंगे और हर जगह सैंकड़ों फ़ौजें और अनगिनत लश्कर रवाना फ़रमाएंगे। इन कामों से फ़ुर्सत पाकर शहर क़ुस्तुन्तुनिया फ़त्ह करने के लिए रवाना होंगे (जिसका जीता जाना क़ियामत की निशानियों में से है)। जब आप रोम नदी के किनारे पहुंचेंगे तो बनू इस्हाक़ के सत्तर हज़ार आदमियों को कश्तियों में सवार करके उस शहर पर हमला करने का हुक्म देंगे।

हदीस शरीफ़ में बनू इस्हाक[2] के सत्तर हज़ार आदमियों के जंग करने का ज़िक्र तो आया हैं मगर उसमें यह तस्रीह नहीं है कि वह शहर क़ुस्तुन्तुन्या की फ़त्ह के लिए लड़ाई करें, बल्कि यह फ़रमाया है कि एक ऐसा शहर है जिसके एक तरफ़ ख़ुश्की है और दूसरी तरफ़ समुन्दर है। इसके रहने वालों से सत्तर हज़ार बनू इस्हाक़ लड़ाई लड़ेंगे।

साहिबे मिश्क़ात लिखते हैं कि यह शहर रोम में है, जिसे कुछ ने क़ुस्तुन्तुन्या बताया है। शाह साहिब रह० की तरह इमाम नववी

---

१. मुस्लिम शरीफ़, २. बनू इस्हाक़ हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की नस्ल के आदमी, जो शाम में रहते हैं, इमाम नववी क़ाज़ी अयाज़ से नक़ल करते हैं कि गो किताब 'मुस्लिम' में बनू इस्हाक़ ही है, मगर मतलब बनी इस्माईल है।

रह० ने भी इस शहर से क़ुस्तुन्तुन्या ही मुराद लिया है, चुनांचे फ़रमाते हैं—

'इससे शहर क़ुस्तुन्तुन्या ही मुराद है।'

पूरी रिवायत इस तरह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार हज़राते सहाबा रज़ि० से इर्शाद फ़रमाया, 'क्या तुम ऐसे शहर को जानते हो, जिसके एक तरफ़ ख़ुश्की है और दूसरी तरफ़ समुन्दर है।' सहाबा ने अर्ज़ किया, जी हां, जानते हैं। इर्शाद फ़रमाया, उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी, जब तक बनू इस्हाक़ के सत्तर हज़ार इंसान उस शहर पर हमला करके जंग न कर लेंगे। (जब ये लोग जंग करने के लिए) उस शहर के क़रीब आकर ठहरेंगे, तो न किसी हथियार से लड़ेंगे और न कोई तीर फेंकेंगे, (बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा की मदद के ज़रिए फ़त्ह कर लेंगे, जिसकी शक्ल यह होगी कि) 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' का नारा लगाएंगे, तो उसके एक तरफ़ की (दीवार) गिर जाएगी, फिर दोबारा लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर का नारा लगाएंगे, तो उसके दूसरी तरफ़ (की दीवार) गिर जाएगी, फिर तीसरी बार 'लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' कहेंगे, तो शहर में दाख़िल होने के लिए रास्ता मिल जाएगा और उसमें दाख़िल हो जाएंगे (दाख़िल होकर शहर को जीत लेंगे) और ग़नीमत का माल हाथ लगेगा। ग़नीमत का माल बांट ही रहे होंगे कि अचानक यह आवाज़ सुनेंगे कि दज्जाल निकल आया। उसकी आवाज़ सुन कर हर चीज़ को छोड़ कर वापस आ जाएंगे। —मुस्लिम शरीफ़

मुस्लिम शरीफ़ की दूसरी रिवायत में (जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत की गयी है, क़ुस्तुन्तुन्या जीतने और दज्जाल के निकलने का ज़िक्र यों है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक ऐसा न हो कि रोम वाले (ईसाई) आमाक़

या अबिक़[1] में ठहरेंगे और (उन से लड़ने के लिए) मदीने की एक फ़ौज निकलेगी, जो उस वक़्त ज़मीन पर बसने वालों में फ़ज़ीलत वाले होंगे, जब दोनों तरफ़ से फ़ौजें सफ़ बना कर मुक़ाबले में खड़ी हो जाएंगी तो ईसाई कहेंगे कि हमें और इन मुसलमानों को छोड़ दो, जो हमारे आदमियों को क़ैद कर लाये हैं। मुसलमान जवाब देंगे कि खुदा की क़सम! हम ऐसा नहीं करेंगे कि तुम्हारे और अपने भाइयों के दर्मियान कुछ न बोलें और तुम्हें उनसे लड़ने दें। यह कह कर ईसाइयों से लड़ेंगे और इस लड़ाई में मुसलमानों का तिहाई हिस्सा हार खा जाएगा (यानी फ़ौज के तिहाई आदमी लड़ाई से बच कर अलग हो जाएंगे) खुदा उनकी तौबा कभी क़ुबूल न करेगा और तिहाई लश्कर शहीद हो जाएगा, जो अल्लाह के नज़दीक अफ़्ज़लुश-शुहदा होंगे और तिहाई हिस्सा ईसाइयों पर ग़लबा पाकर जीत हासिल करेगा, जो कभी भी फ़ित्ने में न पड़ेंगे और यही तिहाई लश्कर क़ुस्तुन्तुन्या को फ़त्ह करेगा।

क़ुस्तुन्तुन्या के जीत के बाद ग़नीमत के माल को बांट रहे होंगे और अपनी तलवारें ज़ैतून के पेड़ पर लटकाये हुए होंगे कि अचानक शैतान ज़ोर से यों पुकारेगा, बेशक मसीह (दज्जाल) तुम्हारे पीछे तुम्हारे बाल-बच्चों में पहुंच गया। हालांकि यह खबर झूठी होगी (इसके बाद मुसलमानों का लश्कर शाम का रुख़ करेगा) और जब शाम पहुंचेंगे तो दज्जाल निकल आएगा। इसी बीच कि जंग की

---

१. अल्लामा नववी लिखते हैं कि आमाक़ और अबक़ शहर हलब के क़रीब दो जगहें हैं और यह जो फ़रमाया कि मदीना से एक फ़ौज ईसाइयों से मुक़ाबले के लिए निकलेगी, उस से मदीना मुनव्वरा मुराद नहीं है, बल्कि शहर हलब मुराद है। साहिबे मज़ाहिरे हक़ ने कुछ उलेमा का यह क़ौल भी नक़ल किया है कि मदीने से शहर दमिश्क़ मुराद है और मदीना मुनव्वरा मुराद लेना कमज़ोर क़ौल है।

तैयारी कर रहे होंगे और सफ़ें दुरुस्त करते होंगे कि नमाज़ का वक़्त हो जाएगा, और नमाज़ खड़ी हो जाएगी।

इतने में हज़रत ईसा बिन मरयम आसमान से उतर आएंगे और उनके इमाम बनेंगे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को देखते ही खुदा का दुश्मन (दज्जाल) इस तरह पिघलने लगेगा, जैसे पानी में नमक पिघलता है। अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम उस को क़त्ल न करें और वैसे ही छोड़ दें तो दज्जाल बिल्कुल पिघल कर हलाक हो जाए, लेकिन वह उसे अपने हाथ से क़त्ल करेंगे और अपने नेज़े में उसका खून लगा हुआ लोगों को दिखाएंगे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और दज्जाल का हुलिया

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने आज सपने में काबा को देखा तो एक साहब दो शख्सों के कांधों पर हाथ रखे हुए तवाफ़ करते नज़र आए, जिनका रंग ऐसा गेहुआं था, जो अच्छे-से-अच्छे गेहुएं रंग वाले इंसानों को तुमने देखा हो। उनके बाल कानों से नीचे तक रखे हुए थे और ऐसे अच्छे थे जो किसी अच्छे बालों वाले के बाल तुमने देखे हों। अपने बालों में उन्होंने कंघी कर रखी थी और उनके बालों से पानी के क़तरे टपक रहे थे। मैंने (किसी से) पूछा कि ये कौन हैं ? तो जवाब दिया गया कि यह मसीह बिन मरयम हैं।

दूसरी रिवायत में है, जो आगे आने वाली है कि मसीह बिन मरयम दो फ़रिश्तों के परों पर हाथ रखे हुए और पीले रंग के कपड़े पहने हुए आसमान से उतरेंगे। जब सर झुकाएंगे तो (उन का

पसीना) टपकेगा और जब सर उठाएंगे तो उससे मोतियों की तरह (पसीने के नूरानी) दाने गिरेंगे जैसे कि चांदी के बनाए हुए दाने हों।

फिर फ़रमाया कि मैंने फिर एक शख्स को दो आदमियों के मोंढों पर हाथ रखे हुए तवाफ़ करते हुए देखा, जिसके बाल बड़े घुंघराले थे। दाहिनी आंख से काना[1] था, गोया उसकी आंख ऊपर को उठे हुए अंगूर की तरह, (यानी उसकी आंख में स्याही न थी, जिसके ज़रिए नज़र आता है, बल्कि अंगूर की तरह सफ़ेद थी, ऊपर को भी उठी हुई थी, जिसकी वजह से बद-सूरत मालूम होता था। मैंने लोगों में सबसे ज़्यादा उसकी शक्ल से मिलता-जुलता अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुत्न को देखा है।

दूसरी रिवायत में है कि उस शख्स का जिस्म लाल था। बदन भारी था। सर के बाल घुंघराले थे, दाहिनी आंख से काना था। मैंने पूछा, यह कौन है? तो जवाब दिया गया कि यह मसीह दज्जाल है।[2]

कुछ रिवायतों में यह भी है कि दज्जाल पस्ता क़द होगा और उस की टांगें टेढ़ी होंगी।

बैहक़ी ने किताब 'अलबासु वन्नुशूर' में एक रिवायत ज़िक्र की है कि दज्जाल एक ऐसे गधे पर सवार होकर निकलेगा, जो बहुत ज़्यादा सफ़ेद होगा और जिसके दोनों कानों के बीच सत्तर 'बाअ' की दूरी होगी और एक 'बाअ' दो गज़ का होता है।

---

१. कुछ रिवायतों में है कि दज्जाल की बायीं आंख कानी है, इस लिए सब रिवायतों को जमा कर के उलेमा ने यह नतीजः निकाला है कि दाहिनी आंख से तो बिल्कुल ही काना होगा, जो अंगूर की तरह ऊपर को उठी हुई होगी और बायीं आंख से भी काना होगा, मगर उस से व दिखायी देता होगा, २. बुखारी व मुस्लिम,

दज्जाल का दुनिया में फ़साद मचाना और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का उसे क़त्ल करना

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक दज्जाल निकलेगा और बेशक उसके साथ में पानी भी होगा और आग भी होगी। (कुछ रिवायतों में है कि उसके साथ उसकी जन्नत भी होगी और उसकी दोज़ख भी होगी,) जिसे लोग पानी समझेंगे, वह (वाक़ेअ में) जलाने वाली आग होगी। (यानी उसको क़ुबूल करने की वजह से दोज़ख की आग में जलेंगे) और जिसे लोग आग समझेंगे, वह मीठा पानी होगा (यानी उसमें गिरने की वजह से जन्नत का मीठा पानी नसीब होगा,) इस लिए तुममें से जो कोई उसके ज़माने में हो तो चाहिए कि उसी में गिरे, जो आग दिखायी दे रही हो, क्योंकि हक़ीक़त में वह मीठा पानी है।[1]

मुस्लिम की रिवायत में यह भी है कि दज्जाल की दोनों आंखों के दर्मियान लफ़्ज़ 'काफ़िर' लिखा होगा, जिसे हर पढ़ा-बे-पढ़ा मोमिन पढ़ सकेगा।

कुछ रिवायतों में है कि उसके साथ गोश्त रोटी के पहाड़ और पानी की नहरें होंगी।

किसी के गुस्सा दिलाने पर पूरब से निकल पड़ेगा और मदीना

---

१ बुख़ारी व मुस्लिम,

जाने का इरादा करेगा, लेकिन मदीने में दाखिल न हो सकेगा, क्योंकि उस दिन मदीने के सात दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते पहरे के लिए मुक़र्रर होंगे, इस लिए वह उहुद के पहाड़ के पीछे ठहर जाएगा और वहां से फ़रिश्ते उसका रुख़ शाम की तरफ़ कर देंगे। शाम की तरफ़ चल देगा। वहीं हज़रत मसीह बिन मरयम अलैहिस्सलाम के हाथों हलाक होगा।[1]

जिस वक़्त मदीना के क़रीब (उहुद के पीछे) आकर ठहरेगा, तो मदीने में ज़लज़ले के तीन झटके आएंगे। उनसे घबरा कर तमाम काफ़िर और मुनाफ़िक़ बाहर निकल कर दज्जाल के पास पहुंच जाएंगे।[2]

फ़त्हुल बारी में हाकिम की एक रिवायत नक़ल की है, जिस में यह भी है कि मदीने से फ़ासिक़ मर्द और फ़ासिक़ औरतें भी उस की तरफ़ निकल खड़ी होंगी। इसी बीच, जबकि दज्जाल मदीने के क़रीब ठहरा हुआ होगा, यह वाक़िआ पेश आएगा कि मदीने से एक साहब निकल कर दज्जाल के सामने आएंगे, जो उस ज़माने में [illegible] बसने वालों में सबसे बेहतर होंगे, वह दज्जाल से कहेंगे—

اشهد انك الدجال الذى حدثنا رسول الله
عليه وسلم حديثه

'मैं गवाही देता हूं कि बेशक तू ही दज्जाल है, जिसकी अल्लाह के रसूल ने हमें ख़बर दी थी।'

उसकी यह बात सुन कर दज्जाल मौजूद लोगों से कहेगा, अगर मैं इसे क़त्ल करके फिर ज़िंदा कर दूं, तो भी मेरे दावे में तुम शक करोगे? लोग जवाब देंगे, नहीं। इस लिए दज्जाल उन साहब को

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम, २. बुख़ारी,

क़त्ल कर देगा और फिर ज़िंदा कर देगा। वह ज़िंदा होकर कहेंगे कि खुदा की क़सम ! मुझे तेरे बारे में जितना आज (तेरे झूठा होने का) यक़ीन हुआ, ऐसा पहले न था। इसके बाद दज्जाल उन्हें दोबारा क़त्ल करना चाहेगा, लेकिन न कर सकेगा।[1]

इसी क़िस्म का एक और वाक़िआ हदीसों में आया है और वह यह कि एक मोमिन दज्जाल के पास जाने का इरादा करेगा। दज्जाल के सिपाही जो उसकी दरबानो में लगे होंगे, पूछेंगे, कहां जाना चाहते हो? वह (हिक़ारत के अन्दाज़ में) जवाब देंगे, उस शख़्स की तरफ़ जाना चाहता हूं, जो (झूठा दावा करके) निकला है। पहरेदार कहेंगे, क्या तू हमारे खुदा पर ईमान नहीं रखता ? वह जवाब देंगे, हमारे रब के पहचानने में तो कोई शुब्हा है ही नहीं (अगर हमारा माबूद न पहचाना जाता और उसके खुदा होने का सुबूत न होता, तो मुम्किन था कि तुम्हारे खुदा को मान लेता।) इस बात-चीत के बाद वे लोग उन्हें क़त्ल करने का इरादा करेंगे, लेकिन (फिर आपस में एक-दूसरे को समझाने से राय बदल जाएगी, क्योंकि) कोई-कोई से कहेगा, तुम्हें मालूम नहीं तुम्हारे रब ने अपनी इजाज़त के बग़ैर किसी को क़त्ल करने को मना कर रखा है, इस लिए उन्हें दज्जाल के पास ले जाएंगे और वे दज्जाल को देखते ही कहेंगे—

'ऐ लोगो ! यह वही दज्जाल है, जिसकी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खबर दी थी।'

दज्जाल उनकी यह बात सुन कर अपने आदमियों को हुक्म देगा कि इसे औंधा लिटा दो। चुनांचे ऐसा ही कर दिया जाएगा। फिर कहेगा इसे ज़ख़्मी कर दो। चुनांचे पीटते-पीटते उनकी कमर और पेट को चौड़ा चकला कर दिया जएगा। फिर दज्जाल उनसे कहेगा कि क्या (अब भी) तू मुझ पर ईमान नहीं लायेगा ? वह कहेंगे तू मसीह

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम,

कज्ज़ाब है। इस पर वह अपने आदमियों को हुक्म देकर सर पर आरा रख कर चिरवा देगा और दोनों टांगों के दर्मियान से उनके दो टुकड़े कर दिए जाएंगे। फिर इन दो टुकड़ों के दर्मियान पहुंचकर कहेगा कि उठ खड़ा हो। चुनांचे वह मोमिन ज़िंदा होकर खड़े हो जाएंगे। उनसे दज्जाल कहेगा कि (अब भी) मुझ पर ईमान लाते हो ? वह कहेंगे कि मैं तो और भी तेरे दज्जाल होने को समझ गया। फिर वह लोगों से फ़रमाएंगे, ऐ लोगो ! मेरे बाद अब यह किसी को न सता सकेगा, यह सुन कर दज्जाल उन्हें ज़िब्ह करने के लिए पकड़ेगा और ज़िब्ह न कर सकेगा, क्योंकि (ख़ुदा की क़ुदरत से) उनकी सारी गर-दन तांबे की बना दी जाएगी। (जब ज़िब्ह पर क़ादिर न होगा) तो उनके हाथ-पांव पकड़ के (अपने दोज़ख़ में) डाल देगा। लोग सम-झेंगे कि उन्हें आग में डाला, हालांकि हक़ीक़त में वे जन्नत में डाले गये।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि यह मोमिन रब्बुल आलमीन के नज़दीक सब लोगों से बढ़ कर अज़मत वाला, गवाही वाला होगा।[1]

दज्जाल मक्का में दाख़िल न हो सकेगा, जैसा कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई शहर ऐसा नहीं है, जहां दज्जाल न पहुंचे, सिवाए मक्का और मदीना के (कि उनमें न जा सकेगा।) —बुख़ारी व मुस्लिम

इससे मालूम होता है कि अनगिनत इंसान दज्जाल के फ़ित्ने में फंस जाएंगे और कुछ रिवायतों में उस पर ईमान लाने वालों की ख़ास तायदाद का भी ख़ास तौर पर ज़िक्र है, चुनांचे मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अस्फ़हान के सत्तर हज़ार यहूदी उसके ताबेअ

---

१. मुस्लिम,

हो जाएंगे और तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि दज्जाल पूरब की एक धरती से निकलेगा, जिसे ख़ुरासान कहते हैं।[1] बहुत-सी क़ौमें उस की पैरवी करेंगी, जिनके चेहरे तह-ब-तह बनायी हुई ढालों की तरह होंगे (यानी उनके चेहरे चौड़े-चकले होंगे।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि ने अबू नुऐम की मशहूर किताब 'हुलीया' से नक़ल किया है कि हज़रत हस्सान बिन अतीया ताबई रह० फ़रमाते थे कि बारह हज़ार मर्दों और सात हज़ार औरतों के अलावा सब इंसान दज्जाल के पैरोकार हो जाएंगे और उसकी ख़ुदाई का इक़रार कर लेंगे।[2]

हज़रत नवास बिन सम्आन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दज्जाल का ज़िक्र फ़रमाया कि अगर मेरी मौजूदगी में निकल आया तो मैं मुक़ाबला करूंगा, तुम्हें घबराने की ज़रूरत नहीं और अगर उस वक़्त मैं तुम्हारे अन्दर मौजूद न हूंगा तो हर शख़्स अपनी तरफ़ से दज्जाल से मुक़ाबला करने वाला होना चाहिए और मेरे पीछे अल्लाह हर मुसलमान का निगरां है।

(दज्जाल की पहचान यह है कि) वह यक़ीनन जवान होगा, घुंघराले बालों वाला होगा, उसकी आंख उठी हुई होगी। उसकी शक्ल मेरे ख़्याल से अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुत्न जैसी है। तुम में से जो शख़्स उसे देख ले, तो चाहिए कि उस पर सूरः कह्फ़ की शुरू की आयतें पढ़ दे, क्योंकि उनका पढ़ना उसके फ़ित्ने से अम्न व अमान में रखेगा। बेशक वह शाम और इराक़ के दर्मियान के एक रास्ते से

---

१. मुल्ला अली क़ारी लिखते हैं कि चौड़े-चकले चेहरे वाले लोग अजाबुक़ों और तुर्कों में पाये जाते हैं। ख़ुरासान में इस वक़्त उन का वजूद नहीं है। मुम्किन है इस वक़्त ख़ुरासान में हों, यह अपने वतन से आ कर ख़ुरासान में दज्जाल से मिल जाएं। २. फ़त्हुल बारी,

निकलेगा, फिर निकल कर दाएं-बाएं (यानी हर तरफ़) शहरों में बहुत फ़साद मचाएगा। ऐ अल्लाह के बन्दो! उस वक़्त साबित क़दम रहना।

रिवायत बयान करने वाले कहते हैं कि हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! वह कितने दिन ज़मीन पर (ज़िंदा) रहेगा? इर्शाद फ़रमाया कि चालीस दिन उसके ज़मीन पर रहने की मुद्दत होगी, जिनमें से एक दिन एक साल के बराबर होगा और एक दिन एक महीने के बराबर और एक दिन एक हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन ऐसे ही होंगे जैसे तुम्हारे दिन होते हैं।

रिवायत बयान करने वाले कहते हैं कि इस पर हमने सवाल किया, ऐ अल्लाह के रसूल! जो दिन एक साल का होगा, उसमें हमें एक ही दिन की नमाज़ पढ़ लेनी काफ़ी होगी? इर्शाद फ़रमाया, नहीं! बल्कि हिसाब लगा लेना (और अपने दिनों के अन्दाज़ से रोज़ाना की तरह पांच नमाज़ें पढ़ना।)

रिवायत बयान करने वाले कहते हैं कि हमने फिर सवाल किया कि दज्जाल किस तेज़ी से ज़मीन पर सफ़र करेगा? इर्शाद फ़रमाया, जैसे बादल को हवा तेज़ी के साथ उड़ाए चली जाती है, उसी तरह तेज़ी से ज़मीन पर फिरेगा। (मतलब यह है कि थोड़े ही दिनों में सारी ज़मीन पर फिर-फिर कर लोगों को अपने फ़ित्ने में डाल देगा।)

फिर दज्जाल के फ़ित्ने की और ज़्यादा तश्रीह करते हुए फ़रमाया कि एक क़ौम के पास वह पहुंचेगा और उनको अपनी ख़ुदाई की तरफ़ बुलाएगा तो उस पर ईमान ले आएंगे, इस लिए वह (अपने ख़ुदाई का सबूत उनके दिलों में बिठाने के लिए) आसमान को बरसने का हुक्म देगा, तो बारिश होने लगेगी और ज़मीन को खेतों के उगाने का हुक्म देगा, तो खेतियां उग जाएंगी और इस बारिश और खेती की वजह से उनके मवेशी इस हालत में उनके सामने फिरने-चलने लगेंगे कि उनकी कमरें ख़ूब ऊंची-ऊंची हो जाएंगी और थन

ख़ूब भरे हुए होंगे और कोखें ख़ूब फूली हुई होंगी। फिर दज्जाल एक दूसरी क़ौम के पास आएगा और उन्हें भी अपनी ख़ुदाई की तरफ़ बुलाएगा। वे उसकी बात को रद्द कर देंगे, तो उन्हें छोड़ कर चल देगा, (मगर वे लोग इम्तिहान में आ जाएंगे) और उनकी खेती-बाड़ी सब ख़त्म हो जाएगी और बारिश भी बन्द हो जाएगी और उनके हाथ में उनके माल में से कुछ न रहेगा।

दज्जाल खंडहर और वीरान ज़मीन पर गुज़रते हुए कहेगा कि अपने अन्दर से ख़ज़ाने निकाल दे, तो उसके ख़ज़ाने इस तरह दज्जाल के पीछे लग लेंगे, जैसे शहद की मक्खियां अपने सरदार के पीछे लग लेती हैं। इसके बाद दज्जाल एक ऐसे आदमी को बुलाएगा, जिसका बदन जवानी की वजह से भरा हुआ होगा, उसे तलवार से काट कर दो टुकड़े कर देगा और दोनों टुकड़ों को दूर फेंक देगा, जो आपस में इतनी दूर होंगे, जितनी दूर कमान से तीर जाता है। फिर उस शख़्स को आवाज़ देकर बुलाएगा, तो वह हंसता-खेलता उसकी तरफ़ आ जाएगा।

दज्जाल इसी हाल में होगा कि अचानक अल्लाह तआला मसीह बिन मरयम को (आसमान से) भेज देगा, चुनांचे वह शहर दमिश्क़ के पूरब की तरफ़ एक सफ़ेद मीनारे के क़रीब दो पीले कपड़े पहने हुए दो फ़रिश्तों के सरों पर हाथ रखे हुए उतरेंगे।[1] जब सर झुकाएंगे

---

१. पहले गुज़र चुका है कि नमाज़ खड़ी होने लगेगी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम नाज़िल होंगे और नाज़िल होकर नमाज़ पढ़ाएंगे। वह भी मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत थी और मुस्लिम ही की दूसरी रिवायत में है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नाज़िल होंगे, तो उस वक़्त के जो अमीरुल मोमिनीन होंगे, वह हज़रत मसीह से नमाज़ पढ़ाने की दर्ख़्वास्त करेंगे, तो आप इन्कार फ़रमा देंगे और फ़रमाएंगे कि नहीं, तुम्हीं पढ़ाओ। तुम आपस में अमीर हो। यह अल्लाह ने इस उम्मत का

तो (उनका पसीना) टपकेगा और जब सर उठाएंगे, तो उससे मोतियों की तरह (पसीने के नूरानी) दाने गिरेंगे, जैसे कि चांदी के बने हुए दाने होते हैं।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सांस में यह असर होगा कि जिस काफ़िर तक पहुंचेगा, वह मर जाएगा और आपकी सांस वहां तक पहुंचेगी, जहां तक आपकी नज़र पहुंचती होगी। अब आसमान से उतर कर दज्जाल को तलाश करेंगे, यहां तक कि उसे 'बाबे लद्द'[2] के क़रीब पालेंगे और क़त्ल फ़रमा देंगे, फिर उन लोगों के पास तशरीफ़ ले जाएंगे, जिन्हें अल्लाह ने दज्जाल के फ़ित्ने से बचा दिया होगा और उन के चेहरों पर (तबर्रुक के तौर पर) हाथ फेरेंगे और उनके जन्नतके दर्जों से खबरदार फ़रमाएंगे। —मुस्लिम

हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि (दज्जाल के क़त्ल के बाद) मुसलमान दज्जाल के लश्कर के क़त्ल करने में मश्ग़ूल होंगे और उस के लश्कर में जो यहूदी होंगे, उन्हें बिल्कुल पनाह न मिलेगा, यहां तक कि कोई यहूदी, पेड़ या पत्थर के पीछे छिप जाएगा, तो भी

एज़ाज़ रखा है। इन दोनों हदीसों की वजह से उम्मत के उलेमा में इख्तिलाफ़ है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नमाज़ पढ़ाएंगे या हज़रत इमाम मेहदी इमाम बनेंगे।

साहिबे शरह अक़ाइद की राय यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही इमाम होंगे और हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम मुक़्तदी होंगे। ना-चीज़ की राय भी यही है, क्योंकि पहली रिवायत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इमाम होने की वज़ाहत मौजूद है और इस से दोनों रिवायतें जमा हो जाती हैं कि पहले इन्कार फ़रमाएंगे और फिर उम्मते मुहम्मदिया का एज़ाज़ ज़ाहिर करके दूसरी दर्ख्वास्त पर नमाज़ पढ़ा देंगे।

२. बाबे लद्द शाम देश में एक पहाड़ का नाम है और कुछ कहते हैं बैतुल-मक़्दिस के क़रीब कोई बस्ती है।

चुग़ली खा कर मुसलमान से क़त्ल करा देगा।

हदीस शरीफ़ में इसका इस तरह ज़िक्र आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी, जब तक मुसलमानों की यहूदियों से लड़ाई न हो। लड़ाई होगी और यहूद को मुसलमान क़त्ल करेंगे, यहां तक कि अगर यहूदी पेड़ या पत्थर के पीछे छिप जाएगा तो वह पेड़ या पत्थर कह देगा कि ऐ मुसलमान! आ मेरे पीछे यहूदी है, इसे क़त्ल कर दे, ग़रक़द के पेड़ के अलावा कि वह न बतायेगा, क्योंकि ग़रक़द यहूदियों का पेड़ है।[1]

साहिबे मज़ाहिरे हक़ लिखते हैं कि ग़रक़द एक कांटेदार पेड़ का नाम है और यह जो फ़रमाया कि वह यहूद का पेड़ है कि यहूद से उसे कोई ख़ास निस्बत है, जिसका इल्म अल्लाह ही को है, फिर लिखते हैं कि कुछ लोगों ने कहा है कि यह वक़्त जब होगा, जबकि दज्जाल निकल आयेगा और यहूदी उसके पीछे लग जाएंगे और मुसलमान उन से लड़ेंगे।

हज़रत मेहदी की वफ़ात और हज़रत ईसा का अमीर बनना

अबूदाऊद शरीफ़ की एक रिवायत में गुज़र चुका है कि हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम ख़लीफ़ा होने के बाद सात वर्ष ज़िंदा रह कर वफ़ात पाएंगे और मिश्कात शरीफ़ में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक रिवायत में शक के साथ है कि—

---

१. मुस्लिम,

मेहदी उसी (अद्ल व इंसाफ़ के) हाल में सात या आठ या नौ बरस ज़िंदा रहेंगे।[1]

يعيش في ذالك سبع سنين او ثمان سنين او تسع سنين

मुम्किन है कि रिवायत करने वाले से भूल हुई हो और सही याद न रहने की वजह से शक के साथ नक़ल कर दिया हो। हज़रत शाह साहब ने इन दोनों रिवायतों को यों जमा फ़रमाया है कि उनकी हुकूमत के दौर में सात बरस बे-फ़िक्री रहेगी और आठवां वर्ष दज्जाल से लड़ने-भिड़ने में गुज़रेगा और नवां वर्ष हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ गुज़रेगा, फिर वफ़ात पा जाएंगे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ा कर दफ़्न कर देंगे। (फिर हज़रत शाह साहब) लिखते हैं—'इसके बाद सारे कामों का इन्तज़ाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़िम्मे होगा और ज़माना बहुत ही अच्छी हालत पर होगा।

मुसलमानों को लेकर हज़रत ईसा का तूर पर चला जाना और याजूज-माजूज का निकलना

मुस्लिम शरीफ़ में दज्जाल के क़त्ल हो जाने और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लोगों के पास पहुंच कर चेहरों पर हाथ फेरने के बाद याजूज-माजूज के निकलने का ज़िक्र है, जिसकी तफ़्सील यह है कि—

---

१. मुस्तद्रक हाकिम,

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ईसा इसी हाल में (यानी दज्जाल के क़त्ल के बाद लोगों से मिलने-जुलने में) होंगे कि अल्लाह पाक की उनकी तरफ़ वह्य आएगी कि बेशक ! मैं अपने ऐसे बन्दों को निकालने वाला हूं कि किसी में इनसे लड़ने की ताक़त नहीं है, इस लिए तुम मेरे (मोमिन) बन्दों को तूर पर ले जाकर महफ़ूज़ कर दो। (चुनांचे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुसलमानों को लेकर तूर पर तशरीफ़ ले जाएंगे) और खुदा याजूज-माजूज को भेज देगा और वह हर बुलंदी से तेज़ी के साथ दौड़ पड़ेंगे (इनकी ज्यादती का यह हाल होगा) कि जब अगला गिरोह तबरिया[1] के तालाब पर गुज़रेगा तो तमाम पानी पी जाएगा और उसे इस क़दर सुखा देगा कि पीछे के लोग इस तालाब पर गुज़रेंगे तो कहेंगे कि ज़रूर इसमें कभी पानी था।

इसके बाद चलते-चलते 'खम्र' पहाड़ तक पहुंचेंगे, जो बैतुल-मक्दिस का एक पहाड़ है। यहां पहुंच कर कहेंगे, हम ज़मीन वालों को तो क़त्ल कर चुके, आओ अब आसमान वालों को क़त्ल करें। चुनांचे अपने तीरों को आसमान की तरफ़ फेंकेंगे, जिन्हें खुदा (अपनी क़ुदरत से) खून में डूबा हुआ वापस कर देगा। (याजूज-माजूज ज़मीन में दंगा-फ़साद मचा रहे होंगे) और अल्लाह के नबी (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) अपने साथियों के साथ (तूर पहाड़ पर) घिरे हुए होंगे, यहां तक कि (इतने ज़रूरतमंद होंगे कि) उनमें से एक शख्स के लिए बैल की सिरी उन सौ दीनारों से बेहतर होगी जो आज तुममें से किसी के पास हों (परेशानी दूर करने के लिए) अल्लाह के नबी ईसा अलैहिस्सलाम और उनके साथी अल्लाह की जनाब में

---

१. साहिबे मिर्क़ात लिखते हैं कि तबरिया शाम में एक जगह का नाम है और साहिबे क़ामूस ने बताया है कि 'वासता' में है, जिस तालाब का ज़िक्र हदीस में है, वह दस मील लंबा है।

गिड़गिड़ाएंगे (और याजूज-माजूज की हलाकत की दुआ करेंगे) चुनांचे ख़ुदा याजूज-माजूज पर (बकरियों और ऊंटों की नाक में निकलने वाली बीमारी, जिसे अरब वाले) नग़फ़ (कहते हैं) भेज देगा, जो उनकी गरदनों में निकल आयेगी और वे सब के सब एक ही वक़्त में मर जाएंगे जैसे एक ही शख़्स को मौत आयी हो और सब ऐसे पड़े होंगे जैसे किसी शेर ने फाड़ डाले हों। इनके मरं जाने के बाद अल्लाह के नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनके साथी (तूर पहाड़ से) उतर कर ज़मीन पर आएंगे और ज़मीन पर बालिश्त भर जगह भी ऐसी न पाएंगे जो उनकी चर्बी और बदबू से खाली हो, इस लिए अल्लाह के नबी ईसा (अलैहिस्सलाम) और उनके साथी अल्लाह की जनाब में गिड़गिड़ाएंगे और दुआ करेंगे कि ऐ ख़ुदा! उनकी चर्बी और बदबू से हमें बचा दे, इस लिए ख़ुदा बड़े-बड़े परिंदे, जो लम्बे-लम्बे ऊंटों की गरदनों के बराबर होंगे, भेज देगा, जो याजूज-माजूज (की लाशों) को उठा कर, जहां चाहेगा फेंक देंगे। फिर ख़ुदा बारिश भेज देगा, जिससे कोई मकान और कोई ख़ेमा न बचेगा और बारिश सारी ज़मीन को धोकर आईना कर देगी, (इस लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और आपके साथी आराम से ज़मीन पर रहने लगेंगे और ख़ुदा का उन पर बड़ा फ़ज़्ल व करम होगा और उनकी ख़ातिर) उस वक़्त ज़मीन को (ख़ुदा की ओर से) हुक्म दिया जाएगा कि अपने फल उगा दे और अपनी बरकत वापस कर दे। चुनांचे ज़मीन ख़ूब फल उगाएगी और अपनी बरकतें बाहर फेंक देगी, जिसका नतीजा यह होगा कि एक जमाअत एक अनार को खाया करेगी (क्योंकि अनार बहुत बड़ा होगा और अनार के छिलके की छतरी बना कर चला करेंगे और दूध में भी बरकत दे दी जाएगी। यहां तक कि एक उंटनी का दूध बहुत बड़ी जमाअत के (पेट भरने के लिए) काफ़ी होगा और एक गाय का दूध एक बड़े क़बीले के लिए और एक बकरी का दूध एक छोटे क़बीले के लिए

काफ़ी होगा।

मुसलमान इसी ऐश व आराम और खैर व बरकत में जिंदगी गुज़ार रहे होंगे कि (क़ियामत बहुत ही क़रीब हो जाएगी और चूंकि क़ियामत काफ़िरों ही पर क़ायम होगी, इस लिए) अचानक खुदा एक उम्दा हवा भेजेगा, जो मुसलमानों की बग़लों में लग कर हर मोमिन और मुस्लिम की रूह क़ब्ज़ करेगी और सबसे बुरे लोग बाक़ी रह जाएंगे, जो गधों की तरह (सब के सामने बे-हयाई की वजह से) औरतों से ज़िना करेंगे। उन्हीं पर क़ियामत आयेगी।[1]

तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत में यह भी है कि याजूज-माजूज की कमानों और तीरों और तरकशों को सात साल तक मुसलमान चलाएंगे।

हज़रत ईसा अलैहिस्लाम के ज़माने में रियाया की हालत

ऊपर की रिवायत से मालूम हो चुका है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने में फलों, ग़ल्लों और दूध में बहुत ज़्यादा बरकत होगी।

दूसरी रिवायत में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सात वर्ष ज़िंदा रहेंगे (और मुसलमानों की आपस की मुहब्बत का यह हाल होगा कि) दो आदमियों में ज़रा भी दुश्मनी न होगी।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़सम उस

---

१. मुस्लिम शरीफ़, २. वही,

ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ऐसा ज़रूर होगा कि इब्ने मरयम (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) तुम में उतरेंगे, जो मुंसिफ़ हाकिम होंगे (आसमान से उतर कर ईसाइयों के पूजने की) सलीब तोड़ देंगे (यानी ईसाइयत को खत्म फ़रमाएंगे और दीने मुहम्मदी) को बुलन्द करेंगे और सूअर को क़त्ल करेंगे (जिसे ईसाई हलाल समझ कर खूब खाते हैं) और जिज़या लेना बन्द कर देंगे (यानी उनकी हुकूमत के ज़माने में ग़ैर-मुस्लिमों से जिज़या न लिया जाएगा, क्योंकि वे इस्लाम को खूब फैलाएंगे और अह्ले किताब (यहूद व नसारा) इनके तशरीफ़ लाने पर उन पर ईमान ले आएंगे, इस लिए जिज़या देने वाला कोई न रहेगा। दूसरी वजह यह भी होगी कि उस ज़माने में माल बहुत होगा और जिज़या लेने की ज़रूरत ही न रहेगी, (जैसा कि आगे फ़रमाया) और माल बहा देंगे, यहां तक कि उसे कोई क़ुबूल न करेगा (और दीन की क़द्र दिलों में इस क़दर बढ़ जाएगी कि) एक सज्दा सारी दुनिया से और जो कुछ दुनिया में है, उस सब से बेहतर होगा।

इसके बाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मेरी रिवायत की तस्दीक़ के लिए चाहो तो यह आयत पढ़ लो—

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ

और कोई अह्ले किताब ऐसा नहीं, जो हज़रत ईसा अलै० के ज़माने में, मौत से पहले उन पर ईमान न लाये।[1]

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने में (इस क़दर माल होगा और आपस में इस क़दर मुहब्बत होगी कि) ऊंटनी (यों ही छोड़ दी जाएगी कि उन पर (सवार होकर तिजारत और खेती वग़ैरह की) कोशिश न की

---

१. बुखारी व मुस्लिम,

जाएगी। (ऊंटनी मिसाल के तौर पर है, मतलब यह है कि माल बहुत होगा और कमाने के लिए इधर-उधर जाने और सवारियों पर लादने की ज़रूरत न होगी) और ज़रूर-ब-ज़रूर दिलों से दुश्मनी जाती रहेगी और आपस में बुग्ज़ व हसद न रहेगा और लोगों को ज़रूर ब-ज़रूर माल की तरफ़ बुलाया जाएगा और कोई भी क़ुबूल न करेगा।

हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने की हालत मालूम करने और इन दोनों की हुकूमत की मुद्दत को मिलाने से मालूम होता है कि दुनिया में १४ वर्ष[२] ऐसे होंगे कि दुनिया में इस्लाम ही इस्लाम होगा और माल व दौलत की कसरत होगी। आपस में मुहब्बत का यह हाल होगा कि ज़रा भी दुश्मनी न होगी, बुग्ज़ व हसद नाम को न होगा, शायद इसी ज़माने के बारे में रसूले ख़ुद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

لا يبقى على وجه الأرض بيت مدر ولا وبر إلا أدخله الله كلمة الإسلام بعز عزيز وذل ذليل إما يعزهم الله فيجعلهم من أهلها أو يذلهم فيدينون لها (احمد)

ज़मीन पर कोई मिट्टी का घर और कोई ख़ेमा ऐसा बाक़ी न रहेगा, जिसमें अल्लाह इस्लाम का कलिमा दाख़िल न फ़रमा दे और यह दाख़िल करना दो शक्लों में होगा या तो इज़्ज़त वालों को इज़्ज़त देकर कलिमा इस्लाम का क़ुबूल करने वाला बना देगा (और वे ख़ुशी से मुसलमान हो जाएंगे) या ज़िल्लत वालों को ख़ुदा ज़िल्लत देगा और वह

---

२. क्योंकि हज़रत शाह रफ़ीयुद्दीन साहब के क़ौल के मुताबिक़ हज़रत मेहदी की हुकूमत की मुद्दत ९ वर्ष होगी और ७ वर्ष हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की हुकूमत की मुद्दत होगी, जिस में एक वर्ष दोनों की मौजूदगी में गुज़रेगा और एक वर्ष दज्जाल से लड़ने में ख़त्म होगा।

कलिमा इस्लाम के सामने मजबूर होकर झुक जाएंगे ।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात और उनके बाद दूसरे सरदार

पहले रिवायत गुज़र चुकी है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतर कर सात वर्ष दुनिया में रहेंगे, फिर इस फ़ानी दुनिया को छोड़ कर आखिरत की दुनिया में तशरीफ़ ले जाएंगे।

कुछ रिवायतों में है कि वे शादी भी कर लेंगे और औलाद होगी, और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे-अत्हर के पास ही आप दफ़न होंगे।[1]

हज़रत ईसा अलैहि[illegible] के दुनिया से कूच करने के बाद आपका जानशीन कौन होगा,

इसका हाल दूसरी हदीसों से [illegible] नहीं होता।[2]

---

१. मिश्कात,

२. हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन रह० लिखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जानशीन एक शख्स जहजाह नामी क़बीला क़ह्तान से होगा, जो इन्साफ़ वालों की तरह सल्तनत करेगा, लेकिन यह सही नहीं मालूम होता, क्योंकि जहजाह के बारे में यह साबित नहीं कि वह क़ह्तान से होगा, बल्कि गुमान यह है कि हदीसों में जो क़ह्तानी और जहजाह का ज़िक्र है, वे दोनों अलग-अलग हैं। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुलबारी में इस को तर्जीह दी है, साथ ही क़ह्तान देश का नेक और इन्साफ़ पसंद होने का भी हदीस में ज़िक्र नहीं है, बल्कि हदीस के लफ़्ज़ ये हैं कि वह अपनी लकड़ी से लोगों को हांकेगा। इस से मालूम हुआ कि वह सख्त

खुदा ही जाने, आपके बाद कौन हाकिम होगा ? अल-बत्ता हदीसों से यह ज़रूर मालूम होता है कि आपके बाद दीन ज़रूर कमज़ोर हो जाएगा, चुनांचे हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने 'सुनने इब्ने माजा' से रिवायत की है कि इस्लाम इस तरह मिट जाएगा, जैसे कपड़े की धारी धुलते-धुलते मिट जाती है, यहां तक कि यह भी न जाना जाएगा कि रोज़े क्या हैं और नमाज़ क्या हैं ? हज क्या है और सद्क़ा क्या है ? और बूढ़े मर्द और औरतों की कुछ जमाअतें बाक़ी रह जाएंगी, जो कहेंगे कि हमने अपने बाप-दादाओं को कलिमा 'लाइला-ह इल्लल्लाह' पर पाया था, तो हम भी उसे पढ़ लेते हैं, इस से आगे कुछ नहीं जानते।

क़ियामत के क़रीब होने की कुछ और बड़ी निशानियां

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद जिहालत और बद-दीनी बढ़ती चली जाएगी, यहां तक कि ज़मीन में कोई अल्लाह-अल्लाह कहने वाला भी बाक़ी न रहेगा और बहुत ही बुरे इंसान दुनिया में रह जाएंगे और उन्हीं पर क़ियामत क़ायम होगी। इस दौरान में क़ियामत की बाक़ी निशानियां भी ज़ाहिर हो लेंगी, जिनका हदीसों में ज़िक्र आया है, जैसे हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत हरगिज़ क़ायम न होगी, जब तक तुम

मिज़ाज होगा और हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इस के ज़ालिम और फ़ासिक़ होने की तस्रीह भी की है।

इससे पहले दस निशानियां न देख लो।

१. धुवां,

२. दज्जाल,

३. दाब्बतुलअर्ज (धरती का जीव,)

४. पच्छिम से सूरज का निकलना,

५. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से नाज़िल होना,

६. याजूज-माजूज का निकलना,

७. ८. ९. ज़मीन में तीन जगह लोगों का धंस जाना, एक पूरब में, दूसरा पश्चिम में और तीसरा अरब में, और

१०. इन सब के आख़िर में आग यमन से निकलेगी, जो लोगों को उनके महशर की तरफ़ (घेर कर) पहुंचा देगी।

दूसरी रिवायत में दसवीं निशानी (आग के बजाए) यह ज़िक्र फ़रमायी कि एक हवा निकलेगी, जो लोगों को समुद्र में डाल देगी।

—मिश्कात

इस हदीस में जिन दस चीज़ों का ज़िक्र है उनमें से दज्जाल और याजूज-माजूज और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाज़िल होने का तफ़सीली बयान पहले गुज़र चुका है। बाक़ी चीज़ों को नीचे लिखता हूं।

धुवां

इस हदीस में क़ियामत से पहले जिस धुएं के ज़ाहिर होने का ज़िक्र है, उसके बारे में मिश्कात की शरह लिखने वाले अल्लामा तीबी लिखते हैं कि इससे वही दुख़ान (धुवां) मुराद है, जो सूरः दुख़ान की आयत—

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ
بِدُخَانٍ مُّبِينٍ يَغْشَى النَّاسَ

सो इन्तिज़ार कर उस दिन का, जबकि आसमान ज़ाहिर धुवां लाएगा, जो लोगों पर छा जाएगा।

में ज़िक्र है, मगर इसके बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि इस में क़ियामत के नज़दीक किसी नए धुएं के ज़ाहिर होने की ख़बर नहीं दी गयी, बल्कि इससे मक्का के क़ुरैश का वह क़हत का ज़माना मुराद है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़माने में पेश आया और मक्का के कुरैश भूख से इतने परेशान हुए कि आसमान व ज़मीन के दर्मियान का ख़ाली हिस्सा उन्हें धुवां दिखायी देता था, हालांकि हक़ीक़त में न था।

लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस बारे में हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राय मानते न थे, बल्कि फ़रमाते थे कि इस आयत में क़ियामत के क़रीब एक धुएं के ज़ाहिर होने की ख़बर दी गयी है, जिसकी तफ़्सील ख़ुद सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल की गयी है कि—

जब आपसे इसका मतलब मालूम किया गया तो इर्शाद फ़रमाया कि, 'ऐसा धुवां होगा कि जो पूरब से पच्छिम तक के ख़ाली हिस्से को भर देगा और चालीस दिन रहेगा। इस धुएं से ईमान वालों को ज़ुकाम की तरह तक्लीफ़ महसूस होगी और काफ़िर बेहोश हो जाएंगे।'

—मिर्क़ात

दाब्बतुल अर्ज़ यानी धरती का जीव

ज़मीन का चौपाया, यानी एक ऐसा जानवर जो ज़मीन से निकल कर ईमान वालों की माथे पर नूरानी लकीर खींचेगा और काफ़िरों

की नाक या गरदन पर स्याह मुहर लगा देगा। सूर: नम्ल की आयत में इस जानवर का ज़िक्र आया है—

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ

और जब उन पर वायदा क़ियामत का पूरा होने को होगा, तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे, जो इनसे बातें करेगा कि लोग हमारी (यानी अल्लाह जल्ल शानुहू) की आयतों पर यक़ीन न लाते थे।

हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि जिस दिन मग़्रिब से सूरज निकल कर वापस होकर डूबेगा, उससे दूसरे दिन सफ़ा पहाड़ (जो मक्का के क़रीब है) ज़लज़ले से फट जाएगा और उसमें से एक अनोखी शक्ल का जानवर निकलेगा, जिसका मुंह इन्सानों के मुंह की तरह होगा और पांव ऊंट जैसे होंगे और गरदन घोड़े की गरदन से मिलते-जुलते होंगे। उसकी दुम गाय की दुम की तरह और खुर हिरन की खुरों जैसे और सींग बारहसिंघे के सींगों जैसे होंगे। हाथों के बारे में लिखते हैं कि उसके हाथ बन्दर के हाथों जैसे होंगे।

फिर लिखते हैं कि वह बड़ी साफ़ और मंझी हुई भाषा में लोगों से बातें करेगा और उसके एक हाथ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का डंडा और दूसरे में हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की अंगूठी होगी। इस तेज़ी से तमाम मुल्कों में फिरेगा कि कोई ढूंढने वाला उसे न पा सकेगा और कोई भागने वाला उससे बच कर न जा सकेगा और तमाम इंसानों पर निशान लगा देगा। हर मोमिन के माथे पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के डंडे से एक लाइन खींच देगा, जिससे उसका सारा मुंह नूरानी और रौबदार हो जाएगा और हर काफ़िर की नाक या गरदन पर हज़रत सुलेमान की अंगूठी से मुहर लगा देगा, जिसकी वजह से सारा मुंह काला हो जायेगा और मोमिन व काफ़िर

में पूरा-पूरा फ़र्क़ हो जाएगा, यहां तक कि अगर एक दस्तरख्वान पर बहुत-सी जमाअतें बैठ जाएं, तो मोमिन व काफ़िर अलग-अलग हो जाएंगे।

इस काम से फ़ारिग़ होकर वह जानवर ग़ायब हो जाएगा।

पच्छिम से सूरज निकलना

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (एक दिन मुझ से) सूरज छिप जाने के बाद फ़रमाया, तुम जानते हो यह कहां जाता है? मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसका रसूल ही खूब जानते हैं। इस पर आपने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक यह चलते-चलते अर्श के नीचे पहुंच कर (खुदा को) सज्दा करता है और आदत के मुताबिक़ (पूरब से) निकलने की इजाज़त चाहता है और उसे इजाज़त दे दी जाती है और ऐसा भी होने वाला है कि एक दिन यह सज्दा करेगा और उसका सज्दा क़ुबूल न होगा और (पूरब से निकलने की) इजाज़त चाहेगा और इजाज़त न दी जाएगी और कहा जाएगा कि जहां से आया है, वहीं वापस लौट जा। चुनांचे (सूरज वापस होकर) मग़रिब की तरफ़ से निकलेगा, फिर फ़रमाया कि—

सूरज अपने ठिकाने को जाता है।

का यही मतलब है कि (अपने मुक़र्रर ठिकाने तक जाकर पूरब से निकलता है) और फ़रमाया कि इसका ठिकाना अर्श के नीचे है।

—बुख़ारी व मुस्लिम

इस हदीसे मुबारक के अलावा दूसरी हदीसों में भी पच्छिम से सूरज निकलने का ज़िक्र आया है, जैसे हज़रत सफ़वान बिन अस्साल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने पच्छिम में तौबा का एक दरवाज़ा बनाया है, जिसकी चौड़ाई सत्तर साल की दूरी है (यानी वह इतना चौड़ा है कि उसकी तरफ़ से दूसरी तरफ़ पहुंचने के लिए सत्तर साल की ज़रूरत है।) यह दर-वाज़ा उस वक़्त तक बन्द न होगा, जब तक पच्छिम से सूरज न निकले, फिर फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के नीचे लिखे इर्शाद का यही मतलब है—

يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا (انعام)

जिस दिन तुम्हारे रब की एक निशानी आ पहुंचेगी, किसी ऐसे शख़्स का ईमान उसके काम न आवेगा, जो पहले से मोमिन न था, या अपने ईमान में उसने कोई नेक अमल न किया था।

—इन्आम

मतलब यह है कि जब सूरज पच्छिम से निकल आएगा तो न काफ़िर का मोमिन हो जाना क़ुबूल होगा और न किसी ईमान वाले की गुनाहों से तौबा क़ुबूल की जाएगी।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में यह साफ़ तस्रीह आयी है कि जब सूरज को मग़्रिब से निकला हुआ देखेंगे, तो सब ईमान ले आएंगे और उस वक़्त किसी का ईमान या तौबा क़ुबूल न होगी।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा रात को ख़ुदा अपना हाथ फैलाता है, ताकि दिन के गुनाहगार तौबा कर ल और बिला शुब्हा दिन को ख़ुदा हाथ फैलाता है, ताकि रात के गुनाह-गार तौबा कर लें, जब तक सूरज पच्छिम से न निकले।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र-माया कि सूरज के पच्छिम से निकलने से पहले जो कोई तौबा करेगा,

ख़ुदा उसकी तौबा क़ुबूल करेगा।[1]

फ़त्हुल बारी में तबरानी से एक हदीस नक़ल की है कि मग़रिब से सूरज निकलने के बाद क़ियामत तक किसी का ईमान या तौबा क़ुबूल न होगी।

हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि एक रात इतनी लम्बी होगी कि मुसाफ़िर चलते-चलते घबरा जाएंगे और बच्चे सोते-सोते उकता जाएंगे और जानवर जंगल जाने के लिए चिल्लाना शुरू कर देंगे, लेकिन सूरज हरगिज़ न निकलेगा, यहां तक कि लोग डर व घबराहट से बे-क़रार होकर रोने-पीटने और तौबा करने लगेंगे। यह रात तीन-चार रातों के बराबर लंबी होगी और लोगों की सख़्त घबड़ाहट के वक़्त थोड़ी-सी रोशनी लेकर पच्छिम की तरफ़ से सूरज निकल आएगा। उसकी रोशनी ऐसी होगी जैसी ग्रहण के वक़्त चांद की होती है।[2]

साहिबे बयानुल क़ुरआन लिखते हैं कि दुर्रे मंसूर में एक रिवायत नक़ल की है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मग़रिब से निकल कर जब सूरज बीच आसमान में पहुंच जाएगा, तो वापस लौट आएगा और मग़रिब ही में डूब कर दस्तूर के मुताबिक़ पूरब से निकलेगा।

फ़त्हुल बारी में एक हदीस नक़ल की गयी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मग़रिब से सूरज निकलने के बाद एक सौ बीस साल इंसान और ज़िंदा रहेंगे, फिर क़ियामत आयेगी।

---

१. मुस्लिम शरीफ़,

२. क़ियामतनामा,

ज़मीन में धंस जाना

हदीस शरीफ़ में तस्रीह है कि तीन जगहों पर लोग ज़मीन में धंसा दिए जाएंगे—एक पूरब में, दूसरे पच्छिम में, तीसरे अरब में।

हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि यह अज़ाब तक़्दीर के झुठलाने वालों पर आएगा।

खुद हदीस में इसकी साफ़ तस्रीह भी आयी है, जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत में ज़मीन में धंस जाना और शक्लों का बिगड़ जाना भी होगा और यह तक़्दीर के झुठलाने वालों में होगा।[1]

यमन से आग का निकलना

एक आग यमन से निकल कर लोगों को महशर की तरफ़ घेर कर पहुंचा देगी। साहिबे मिर्क़ात लिखते हैं कि महशर से शाम की धरती मुराद है, क्योंकि हदीस से साबित है कि शाम की धरती में (सूर फूंके जाने के बाद) हश्र होगा।

हज़रत शाह साहब लिखते हैं कि उन्हीं दिनों (जब कि ज़मीन पर कोई अल्लाह-अल्लाह कहने वाला न रहेगा) शाम देश में अम्न होगा और ग़ल्ला भी सस्ता होगा, चाहे सौदागर हों, चाहे दस्तकार हों, चाहे सरमाएदार हों, ग़रज़ यह कि सब के सब घर के सामान

---

१. मिश्कात,

लाद कर शाम देश की तरफ़ रवाना हो \ जाएंगे और जो लोग दूसरे मुल्कों में चले गये थे, वे भी शाम देश में आकर आबाद हो जाएंगे और थोड़े ही दिनों के बाद एक बहुत बड़ी आग ज़ाहिर होगी और लोगों को खदेड़ती हुई शाम देश पहुंचा देगी। इसके बाद वह आग ग़ायब हो जाएगी! कुछ दिनों बाद लोग अपने-अपने वतनों का रुख करेंगे (और दूसरे मुल्कों में भी आदमी जाकर वापस जाएंगे) लेकिन शाम देश में पूरी आबादी रहेगी। यह क़ियामत के नज़दीक बिल्कुल आख़िरी निशानी होगी और इसके तीन-चार वर्ष बाद क़ियामत आ जाएगी।

समुद्र में फेंकने वाली हवा

मुस्लिम की एक रिवायत में दस निशानियों में से क़ियामत की एक निशानी यह भी ज़िक्र फ़रमायी है कि एक हवा ऐसी ज़ाहिर होगी जो लोगों को समुद्र में फेंक देगी। इसकी इससे ज़्यादा तश्रीह किसी किताब में मेरी नज़र से नहीं गुज़री।

क़ियामत के बिल्कुल क़रीब लोगों की हालत और क़ियामत का आना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत सबसे बुरी मख़्लूक़ पर क़ायम होगी।[1]

---

१. मुस्लिम,

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक ज़मीन में अल्लाह-अल्लाह कहा जाएगा।

दूसरी रिवायत में है कि किसी ऐसे शख़्स पर (भी) क़ियामत क़ायम न होगी, जो अल्लाह-अल्लाह कहता होगा।[1]

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस पहले गुज़र चुकी है, जिसमें यह ज़िक्र था कि अचानक ख़ुदा एक हवा भेज देगा, जो मुसलमानों की बग़लों में लग कर हर मोमिन और मुस्लिम की रूह क़ब्ज़ कर लेगी और बद-तरीन लोग बाक़ी रह जाएंगे। (सब के सामने बे-हयाई से) गधों की तरह औरतों के साथ ज़िना करेंगे, उन्हीं पर क़ियामत क़ायम होगी।

हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुल बारी में एक रिवायत तबरानी से नक़ल की है, जिसमें इस बे-हयाई के तफ़्सीली नक़्शे का भी ज़िक्र किया गया है। जिसका तर्जुमा यह है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक ऐसा न हो कि एक औरत मर्दों के मज्मे पर गुज़रेगी और उनमें से एक शख़्स खड़े होकर उसका दामन उठाएगा (जैसे दुंबो की दुम उठायी जाती है) और उससे ज़िना करने लगेगा। (यह हाल देख कर) उनमें से एक शख़्स कहेगा कि इस दीवार के पीछे ही छिपा लेता तो अच्छा था, (फिर फ़रमाया कि) यह शख़्स उनमें ऐसा (मुक़द्दस बुज़ुर्ग होगा,) जैसे तुम में अबू बक्र रज़ि०, उमर रज़ि० हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि रात और दिन उस वक़्त तक ख़त्म न होंगे, जब तक लात और उज़्ज़ा (की पूजा) दोबारा न होने लगे। (लात और उज़्ज़ा अरब के मुश्रिकों के दो बुत

---

१. मुस्लिम शरीफ़,

थे। इस्लाम क़ुबूल करने पर उनकी पूजा बन्द हो गयी, लेकिन फिर उनकी पूजा होने लगेगी।)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! जब अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी—

هُوَ الَّذِىٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝

वह अल्लाह ऐसा है, जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है, ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे।

तो मैंने यही समझ लिया था कि जो इस आयत में फ़रमाया गया है, वह होकर रहेगा और आप फ़रमा रहे हैं कि लात और उज्ज़ा की दोबारा पूजा शुरू हो जाएगी, फिर इस आयत का क्या मतलब है ? आपने जवाब दिया कि जब तक ख़ुदा चाहेगा यह (इस्लाम का ग़लबा) रहेगा, फिर ख़ुदा एक उम्दा हवा भेजेगा, जिसकी वजह से हर उस मोमिन की वफ़ात हो जाएगी, जिस के दिल में [illegible] दाने के बराबर भी ईमान होगा, इसके बाद वे लोग रह [illegible] जिनमें कुछ भलाई न होगी, इस लिए अपने बाप-दादाओं के दीन की तरफ़ लौट जाएंगे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि (दज्जाल के क़त्ल हो जाने के बाद) सात वर्ष लोग इस हाल में रहेंगे कि दो आदमियों में ज़रा से दुश्मनी न होगी, फिर शाम देश से एक ठंडी हवा चलेगी, जिसकी वजह से (तमाम मोमिन ख़त्म हो जाएंगे) ज़मीन पर कोई ऐसा शख़्स बाक़ी न रहेगा, जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हो और उस हवा की वजह से उसकी रूह क़ब्ज़ न हो जाए, यहां तक कि अगर तुम (मुसलमानों में से) कोई पहाड़ के

---

१. मुस्लिम,

अन्दर (किसी खोह में) दाख़िल हो जाएगा, तो वह वहां भी ज़रूर दाख़िल होकर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेगी। —मिश्कात

फिर (कुछ दिनों के बाद) सूर फूंका जाएगा, जिसे सुन कर सब इंसान बेहोश हो जाएंगे (और) जो कोई भी उसे सुनेगा (दहशत की वजह से हैरान होकर) एक तरफ़ गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ़ को उठा देगा।

फिर फ़रमाया कि सबसे पहले जो शख़्स उसकी आवाज़ सुनेगा, वह होगा, जो अपने ऊंटों को पानी पिलानें का हौज़ लीप रहा होगा। यह शख़्स सूर की आवाज़ सुन कर बेहोश हो जाएगा और (फिर) सब लोग बेहोश हो जाएंगे, फिर ख़ुदा एक बारिश भेजेगा, जो ओस की तरह होगी। उसकी वजह से आदमी उग जाएंगे (यानी क़ब्रों में मिट्टी के जिस्म बन जाएंगे) फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा, तो अचानक सब खड़े देखते होंगे।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम की एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल-बत्ता क़ियामत ज़रूर इस हाल में क़ायम होगी कि दो शख़्सों ने अपने दर्मियान (ख़रीदने-बेचने के लिए) कपड़ा खोल रखा होगा और अभी मामला तै करने और कपड़ा लपेटने भी न पाएंगे कि क़ियामत क़ायम हो जाएगी।

(फिर फ़रमाया कि) अल-बत्ता क़ियामत ज़रूर इस हाल में क़ायम होगी कि एक इंसान अपनी ऊंटनी का दूध निकाल कर जा रहा होगा और पी भी न सकेगा। और क़ियामत यक़ीनन इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपना हौज़ लीप रहा होगा और अभी उस में (मवेशियों को) पानी भी न पिलाने पाएगा। और वाक़ई क़ियामत इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपने मुंह की तरफ़ लुक़मा उठा-

---

१. मुस्लिम शरीफ़,

एगा और उसे खा भी न सकेगा।

मतलब यह है कि जैसे आजकल की तरह लोग कारोबार में लगे हुए हैं। इसी तरह क़ियामत के आने वाले दिन भी मशग़ूल होंगे और क़ियामत यकायक आजाएगी, जैसा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया है—

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ (الانبياء)

बल्कि क़ियामत उन पर अचानक आ पहुंचेगी, सो उनके होश खो देगी, फिर न उसे हटा सकें और न उन्हें मोहलत ही दी जाएगी।—अल-अंबिया

मतलब यह है कि क़ियामत की निशानियां अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने रसूल की ज़ुबानी बन्दों तक पहुंचा दी हैं और उसके आने का ठीक वक़्त ख़ुद सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी नहीं बताया, अल-बत्ता इब्ने माजा और मुसनद अहमद की रिवायत में इतना ज़रूर है कि क़ियामत जुमा के दिन आएगी और यह भी फ़रमाया कि तमाम मुक़र्रब फ़रिश्ते और हर एक आसमान, हर एक ज़मीन, हर हवा, हर पहाड़, हर दरिया डरता है कि कहीं आज ही क़ियामत न हो। ग़रज़ यह है कि क़ियामत का ठीक वक़्त अल्लाह के सिवा किसी को पता नहीं। कुछ लोगों ने अटकल से क़ियामत के आने का वक़्त बनाया है, मगर वह सिर्फ़ अटकल और 'इन हुम इल्ला यख़्रुसून' के दर्जे में है। जब लोगों ने सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ियामत का वक़्त पूछा तो अल्लाह जल्ल शानुहू की जानिब से हुक्म हुआ कि—

قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً

तुम कह दो कि इसका इल्म मेरे परवरदिगार ही को है, वही उसके वक़्त पर उसे ज़ाहिर करेगा। वह आसमानों और ज़मीनों पर भारी होगी, अचानक तुम पर आ पहुंचेगी।